20CC

जुवाश्व-ज्ञा

' ধর্মার্থকামনোকানামারেরার্গ্যং কার্নংক্ষত। । তত্মাদারোগ্য দানেন নরো ভবতি সর্বদঃ।,,

জীভোলানাথ মুখোপাধ্যায় কর্তৃক

সংগৃহীত এবং অনুবাদিত।

চতুর্থ সংস্করণ।

প্রকাশক।

नी विश्वस्त्र नार्।।

किनिकाला, हिर्भूत (त्र क वर्षे जेता १३६ नर खत्र न

সন্১২৯৩ সাল মূল্ ১ এক টাকা।

বিজ্ঞাপন ।

সর্ব্ধ দাধারণকে অবগণ চকরা বাইভেছে যে এই '' দ্রবাগুণ-দর্পন ,, পুত্তক ধানি গবর্গমেট হইতে রেজেফরি করিয়া দইয়াছি আমব্দেবিনা অন্ত্র্মতিতে মুদ্রিত করিলে অইনন্ত্রারে দণ্ডনীয় হইতে হইবে।

এবিশ্বভর লাহা।

উপহার।

্ধর্মনিরত পরছিত পরারণ দেশছিতিষী জীপজীযুক্ত বারু প্রতাপচক্ত বড়ুরা রারবাহাদূর। জনীদার মহাশয় মহতাশরেষু।

यहां भंग ।

আপনি ধর্ম সংস্থাপনার্থে এবং পরোপকারার্থে দেশহিতকর বিবিধকার্য্য করিয়া পৃথিবীর একটি ভূষণ অরূপ হইরাছেন। একারণ জনমহাশরের
পাবিত্র কর্কমলে এই '' অব্যঞ্জণ-দর্শণ নামক । পুত্তকথানি উপহার অরূপ্
প্রদান করিয়া পরম প্রীতি লাভ করিলাম নিবেদন ইতি।

মুখোপাধ্যায়োপাধিক।

জীভোলানাথ শর্মা।

णालनात मूथ जाशनि तिष्, किष्टू किष्टू द्वि श्रीहर्मन, श्रीहां येण उम २व ०प्र थए, शन्त जीमन्द्राशंवण उम ७ २प्र ज्वस, विष-त्रक्षन श्रीहांनी, श्रीहांम् मिनन, मिनिने मिनन, क्षशास्त्रचनी ननममञ्जी, अन्वस्याशायान, क्ष्मांमांस् शांत्रण, त्रात्मत्र ताष्ट्राश्रीख, कनड-एक्स, मान्द्रिका, वामनिष्का, शांक्रवत्र ज्ञाणं व तन नाहिक, किष्ठां-मर्गन, कार्युक्त मात्रमर्थाह, कार्यामञ्जू-एक् सात्र ७ विक्ना-मर्गनीम श्रीक श्रीहरू।

किनकां वा बाहीतिरहीना ३३० नः वाही।

· ·

বিজ্ঞাপন।

লোকমালা নির্কাহ করণার্ব দ্রব্যের দোষ গুণ বিদিত ছওয়া বিশেষ
কর্ত্তবা। একারণ স্থান্ডত ও জনান্য কএকথানি চিকিৎসক গ্রন্থ জবস্থন
করিয়া দেব।গুণ-দপন নামর্ব পুত্তক থানি প্রস্তুত করা ছইয়াছে। ইহা কোন
ক্রেমাণ দ্রব্যান্ত আহপুর্কিক জন্তবাদ নহে। দ্রব্যগুণ সম্বন্ধে প্রসক্ষ গ্রন্থের
ক্রে বে অংশের জাবশাক ছইয়াছে, সেই সেই জংশই গ্রহণ করা ছইয়াছে।
শোক ভাগে কতকগুণীন দ্রব্যের গুণ জকরাদিক্রমে লিখিত হইয়াছে।
শাক্তক দহোদয়দিশের স্থানার্থে অকারাদিক্রমে ও বর্গান্থ্যান্তিক ছই প্রকার
স্থানীপত্র দেওয়া ছইয়াছে, ক্রকগুলি করিন শব্দের অর্থও জ্বারাদিক্রমে
লিখিত ছইয়াছে। পরিশ্রেম করিছে কোন,ক্রমেই ফ্রেট করি নাই, এক্লনে
ক্রিমান্ত হালাছে। পরিশ্রম করিছে কোন,ক্রমেই ফ্রেট করি নাই, এক্লনে
ক্রিমান্ত ছালাছে। পরিশ্রম করিছে কোন,ক্রমেই ফ্রেট করি নাই, এক্লনে
ক্রিমান্ত গ্রন্থানির প্রস্থানি ইছা পাঠকগানের পাটোপ্রোগান্য এবং ইহার দ্বারা
দেশের উপ্নার প্রস্থানিত ছইলে শ্রম স্থল জন্পত্র নিবেদনু করিব ইতি।

वर्गि- ड्वान।

मिर्यके।	对面有	विष्णे।	প্ৰে ক
ল্প বিজ্ঞান	20	শুকু বিজ্ঞান	84
হ্ৰ বিজ্ঞান	26	মূত্র বিজ্ঞ;ন	8>
मिथ रिज्ञान	© 0	অল দি বিজ্ঞান	4.2
फक विकास	૭ ૨	ক্ল-ধান্য বিজ্ঞান	42
হুও বিজ্ঞান	وو	থাংস বিজ্ঞান	¢ te
হৈল বিজ্ঞান	4 5	ফল,বিজ্ঞান	48
क्रमा (मम धरः मञ्जा	বৈজ্ঞান তিচ	শাক বিজ্ঞান	6 6 c
मध्र विष्यान	6 00	পুষ্প বিচ্ছ ন	36
रेकू विकास	8%	कना विकास	နိမ်
ममा (व का) न	88	नवर्ग विकान	300

वर्ग विकान मगाछ।

चाकावापि (खरम रेडी शव ।

निर्घक	পত্ৰ ।	(नर्च:७	পতা হ
অকারাদি ভে_দ দ্রবাঞ্জ	324	অস্ল ফল বর্গ	98
অক্ত এবং কৃত বিজ্ঞান	308	অন্নকল ব্য গুণ •	9 <u>.</u> 8
শাদ ভব্ৰ	9	म जर १	22
व्यगंदा भूक्ष, छन, (ह्रवाति	न श्राम्य छन	শাস রস গুণ	5,5
(मर्थ	,	অসিকা গুণ্	GP GP
ष्मा खा श्रुष्ण अन	24	ज्यामत मध्या छे ९ क्र छे	3.0
অথক চন্দন ওন	34	वर्जभूका श्रम (मध्यः	भगे जामि .
শক্র বিশিষ্ট পালী ধান্য	84 65	८म्थ)	
व्यक्तिक अत्यादशम उभ	ज्य श	অৰ্ক প্ৰজা গুণ (রক্ত	तुक्तानित्र श्रृष्ट
ંચન .	, 220	(मथ)	
অজগর মাংস গুন	৬১	আৰক্ত জন (পি পা	
অট্রাৰক গুণ (মুকু কপণী	(म्थ)	অজ্জ ক গুণ (সুরস,	ज्ञान चरः
भारतियश खन	2.0	ष्ट्रुन (म्थ)	
व्य ६ छ ।	৬৮	অরহর কলাই গুণ (
অতসা গুণ (হুবর্ষনা দেখ		व्यक्तिस् छन	89
অতসা গুণ (সুণচ্চলা দেখ		व्याद्रक्षे कल क्षन (कर	
শতি উক্তার গুন	3.8	चात्रके छन (मणुक्त	
শ্ধম মাংসবিজ্ঞান	90	अन तू कम छन	>9
ज्यम श्रारमञ्ज	90	भाषिकन् कल खुन	, 27
অনুগান বিজ্ঞান	33€	অস্থ কল ৩৮ (ক্ষ্	इ इक्लां किल 🏎
অহপদেশে জগ গুন	29	(年中)	
শন্ত করি ওন	28	শৰ্ভুক ফল গুণ	b 0
শ্র গুণ	3.8	कर्भवना छन (उछु र	লয়ক আদি শাক
কার প্রাক্রন	\$28	(पंथ)	
শন্নাদ বিজ্ঞান	7	व्यवादम् छन् (अक	শক মাৎস (দখ)
ण(ब्रद्र) म (ध्र खेश्क्रक	302	भश्रम्ब छन	to !
অপক হয় জাত নবনীত	_	ব্যাহ্য ওন (এবস	ক তথ্য (দুখ) }
শপ্ৰ মধু গুণ	. 83	क्षिना मेर्ध छन	25
े भावत् छक् छ। (म्यूक्शन		पानीत मधि छन	` 03
অবল্ওজ গুনু)	আৰু ফল গুন	+ 68
च्छा कन छून	b 8	व्याकनामि श्राम मा सूर्	•
अधिक्र करा छन (वृत्		वासन्छन	48
(सम्)	- 1.344.16 1.44	चाइकन विदेश	. 324
₹ ₹ 17		1 ガエトノリン	7

ें विस्कि	প্ৰাক ৷	নিৰ্ঘণ্ট	পতাক চ
कार्य कथ क ।	€8	আহারের পরিমাণ	525
'आखक छ। (शिक्नानामि ।	i i	আহারের বিধি	282
***** O4	69	णारादतत्र समेंब निकाशना	320
व्याप्तक छन (शिल्लाता) वि		जाकिक भीधू छन	88
व्यापक (मथ)		আকিকী জাত মুরাগুণ	84
আদ্রেক সংযুক্ত মৎসের ব্য	छ न	नाटकां हे कल छन (वाजाम	ां मि
. 84	98	कम (म्थ)	
শাদ। এবং কুস্তমূক এক	বিত গুণ ৮৮	আকোড় ফল গুণ (বাভায়া	मि
আহপ মাংস বর্ণ বিজ্ঞান	હશ	क्ष (मर्थ)	
व्यक्तिमध्य (व्यक्ष		ইঞাৰ সাহত মৎসের ব্যঞ্জ	म छन 🐤
আম্ভাক্ত গুণ (আব্ত	ক ক ল	हैक्षांक मून मध्यूक मध्यम्	
(मर्थ)		या छन रहन	43
আমতিভিড়ি ফল গুণ	95	है सिवंद्र कम छ। (कसर्वर्ग	(मर्थ)
जामकन मध्युक मध्रमत र	ाक्षन	रेजूमी रेजन छन	૭ ૧
49.1	48	इक्ना कन छन	هم
कायशक भक्को छन	BIE	इक् छक छन	89
व्याप्रमकी कन छन	94	ইকুলাত উদ্দি গুন্	29
वाभगकी वीजनमा छन	96	हैक्क्विकादत्रत्र मध्या छेरक्ख	
আমানি গুণ (তুষোদক টে	(4)	ইক্ষুবিজ্ঞান	87
আ্যানি সংযুক্ত যৎসের ব)@न	ঈষৎপাঞ্র মংস গুণ	৬৬
છ ન	48	উ एक् छन् (कात्र द्व स क तिथ	
मां खक्ता, खन	99	केटित इस छन छ छे इस छ	
ুবান্তবীজের তৈল গুণ	৩৮	विश्कृष्ठे प्रवा विकास	302
वाष्ट्रमश्युक मर्दमत वाक्ष	१७३१ १७	उर्भन कम धन (कम्पर्श	•
व्याजिक कम स्थन	96	উৎপদ পূজা গুল	ət
অ।য়ুকেনের মর্মজান	3	উৎপশাদির রস গুণ (ক্ষীর	₹
আৰা মধু গুণ	. 80	व्यापि (प्रथ)	
আরক গুণ (অরিষ্ট গুণ (উत्तम माध्य विष्णान	
আলকুশীৰীজ গুণ (আওঁ	छि (मर्थ)	चित्र माध्य ७१	
व्याचित्र मार्क छन	. 37	डिस्ट्रिन नवन छन् डेस्ट्रिक करन	2+2
्षामग्रीका छन् (त्रक्तरुका	াহর	উপকুঞ্জি গুন	66
'- शुक्ल (मर्थ)		উপ্তক্ত মাৎ গুণ	. ()
আহারাতে বস্তব্য কর্ম	25.6	উপোদিশা গুল (তণু নিয়ন	•
আহারটেড মুখ লোধনু	र्गाम ३२२	व्यक्ति (मर्थ)	.
व्यादातीतं अराजा अवापन		উপোকাশাক গুন	ζ 6
आचारतत गणि मिण्डस	329	हैकर्क छन (ध्रन्तवाहि एक	
শাবারের হিছ নিরপণ	. 643	खेकरूक छन (४० ,कुन्नीर क	itin (ng)

A SING I

विचें	शिकांक।	নিৰ্ভ'ট	4月二十
खेलू ड बारम. धर्म	306	कट्रेक्कन छन (का	ভিকোশ ফল 🕠
खेबकाद्र नवन छ न	303	(मर्थ)	. 4
উষক্ষার শুন	303	क्ट्रेकी छन (मखुव	প্ৰী পাদি
উন্টি চন্ধ গুন.	6.5	(मच	
উফ্তল প্রমাণ	29	ক্ট্বর্গ °	ર્
उक्काल अर्थ	29	कट्रेंद्रम धन	25
উক্দান কল গুন (বাতাদারি		कर्रेत्ररमत गरशा उ	ংক্প্র ১.০
कन दर्श (मर्थ)	'	करिका छन (ला	निकामि (मर्थ)
ঋতুবিজ্ঞান	•	কণ্টশাবীর ফলগুল	। (মণ্ড, কপনী
अञ्चल छन छन	28	(मर्थ)	•
একশক গ্ৰহ ওপ	96	क के का त्रीय करा छ।	4 50
একশফ ছ্বা গুন	22	कमचक्त छन (नी	প্কৰ (দেখ)
এकलक बारम छ न	ويق	कनगीयम छन (स) চফল দেখ)
क्षेत्रिका श्टेंडन छन	6.9	क सम ५ र्श	\$ b
একোগুড গুণ (ইক্সুগুড় দে	♥)	ৰূপাল এবং অফ	त्रशक्षांमें, जया ३३०
এণ মাংস গুণ 🐷	, to	किमिल्लमारम धन	
এক্ষাৰু গ্ৰীণ	b 9	কপিথ ফল গুণ	ري .
এক(ক্ক ইতল ওল (চিরাড	t Fr	ৰফ প্ৰকোলেব ক	। यां ७ व्यवग्रांनि २१
ेखन (मर्थ)		क्क मरमधनीयर्ग	20
এরও গুন উক্বক (দ্ব)		কমলা লেবু গুণ	99
वदेख टेख्न छन	೨೪	কপিল তৈল গুণ (জুঘি তাদি তৈল
जरमण गर्में छन	6 9	(দৃথ)	
ধৌরাবত ফল	۹۶	করেড বেল হাল (
eन (स्र्न (म्थ)		कर्क हे छन (मछ्	कशनी भारि (एस) 🕶
ওব্ধি বিজ্ঞান	8	कर्ताक यम अन	59
ওবধ সংতাহার্থ ভূমি বিজ	গ্ৰ ১৮	কৰ্ম ফল গুণ	1 9
ওয়ধ সংতাহের লক্ষণ	36	कटक कि यन छ।	1 63
जेमानकमधू छन	8 8	ককে কিন তৈগ	গুণ (ফিরাতাদি তৈল
छ एउन जन शन	<i>d.</i> c	(দ্খ) •	
खेष्डिम मयन थन	ک ەك 1	कृत्क विक क्रम छ	ান (জাতি কোশ
खे तिका मारम खन	હર	(मथ्)	,
अवश श्रीद्यादगंत्र वादश्	2.	क्य ब्र छन	48
उद्देशिष छन	30 3	কপুৰ গুন	:42
कहेंगरम छन.	85	क्रमात्र थन (कृष	ड जा नि (नर्थ)
के ठूकम छन	46	कद्भात रेजन्छ।	। (किन्न भाषि देण्य
कहे देशक छ। (साहिद्रका	শক্ষ	🐤 (দখ)	
(甲盤)		कहुआरि क्य क	1

101	
Add.	

श्वांक।

कै 'ठड़ा जरपुक बर्ट्ज़ बराइन छन १२ का जनी हेका, अन 53 কানকপোডমাংস গুন ₹a কামবাজা গুণু কাম্বলিক প্রকর্ম কাহালক গুন 306 কায়তিকিৎসা আজার মর্যা कारदालक छन मधुक्रनी जिति (मर्थ) 20 कारामहाक छन् क्र रती छन P 6. काशकामम छन (कामगर्क (प्रथ) কালকা সন্দ পাত সংযুক্ত মংসোর 90 কাঞ্জন গুণ কাল বিজ্ঞান কালগাক গুণ वानभक्तीय जना विष्टांन đ: কলে ৩ ঋতৃ বিজ্ঞান क किया श्रम 69 কাই লুক গুণ (কন্দবৰ্গ দেখ) কাফেকু গুন 83 क, यार्च। कम अन b2 b2 कामनी प्रश्युक्त मः स्मात्र वः अन . 30 99 কাসহৰ্চ্চ গুণ 66 काम यक छन (लिल्लान) कि (मर्थ) कि अभ्यूष्ट्र छन ৯৬ किंद्युक कन छन (क्यू आ मिकनर्त् কিরা জ-তিক্ত গুণ (মণ্ডু কপ্নী আদি কিরাছ-ভিক্ত গুণ 24 किन' हे नार्था ६ इंशिंगि इस

विकात्रज्ञाच कम्जना वन

भवादि ।

कड़के मूंच ७४	to
अक्रमहा कल छन (क्रमक्र कल ८	9억)
केशक एम छ १	95
कंड्रेंडा क्रम (कांब्रटव्ह्नक (एथ)	
केंद्रीय कामि कर छन	p- 3
क्शीत्रभूष्ण छन् (मर्गिश्च भूष्ण्य	4
वर्ग (मथ)	
করীৰজাৰ উন্ভিদ গুণ	৯৭
ৰগমীশাৰ গুৰ (উপোদিকা গুৰ	
(म थ)	
कमाई चामि छन (शिल्लानामि-	
গ্ৰ (দেখ)	
কলার গে:ড়া সংযুক্ত মংসের	
বাজন গুণ	42
কলারপাক গুণ	ಎ
कविषान छ। (शिश्लेनापि (प्रथ)	
कनाश्याक छन	≥ 8
ক্ষায় বৰ্গ	2,5
कर्षात्र दम छन्	22
क्षान्न तरमर मरधा छैरक्ष्ट्र	3 ,9
क(नक छन (क क्वर्ग मध)	
करभक्त छन	એષ્ટ
ক ভূমী গুণ	১৬
चौरमा छन	٤٥٤
काँकरत्रांग छन (कक है (मध)	
ক কিলাকল গুণ (জাতিকো শকল	
(मर्थ)	
कांक्ष छन (धर्काक छन (मथ)	
क । हार उँ पून धन (जाम उँ खड़ी	
দেখ	(
कुँ। हो नक्त छन (श्रीम कल द्वार '	
क्रिकत सर्वा छन क्षा कर्म (प्रश	
काकमारी क्या (मठ कशनी का वि	
4 CH4 }	
衛門衛門 时 年 卷片	
कारककर छन । मध्कानी जानि	•
-C84 3	

্ কিৰ্মন্ট	প্রাস্থ	मियंक	- TITE
किक्रीयम कम छन (जाप	गंकन (१५)	क्रमयीटका दिल क	,
कूक हेगारम् अत	eb	কৃষৰ ক গুণ (পিপা	,
क्रिक्रभूक्र छन	24	कू शिकां ज मरमा श्वन	र ८४३ हरू महाता इ.स
ফুটের গুন (পিপ্পন্যানি	দেশ)	क्राभत खन छन	5.0 69
কুখানা বিজ্ঞান	& 2	কর্ম আও গুন	
उडिनका छन (मानिका	मि (मर्थ)	হম বড়ু ওব হুম্ম¹°স ওল	ep.
কুম্বলিকা গুণ	28		98 /
क्रवासभूष्य छन	24	কেশ্ড ফল গুণ (কোষ কেলেন্দ্রীয় গুণ (জীয়	
कूमकूम छन	24	_	4. a & 4s-
কুমকুমপুল্প গুৰ	خد	कीरकू (प्रथ)	Tr
क्ष्र छेरला छ नाम करा भ	10 www	(कस्थर छन्। प्रमानापरि	यः क ्लिस %
इयम भूष्ण रून	ಎೇ	े न्य टेकम'व भगमा छन	
কু চিকা ভৰ	275		£5
क्रक दिका अन ((भावाका।	क्(क्य)	্-" ভাফল গুল (কবীৰ কোন কোন দ্ৰব্য কোন	
कूरफेकशुच्ल खन्	৯৬	সভিত ভোজন বি	· · ·
क्का स्मार्भ 🔐	28	কোনিদাব আদি পুত্প	
क्कावक छै। (cmt निक, फ	(k#)	(कर्गतमार्थ चा म जूर्र)	
कूत छन (वमत (मर्)		पापि भेष्यतर्भ तम्	
ফুলচরমাংস	,	কেগবিশার গুন (চুক্ট খ	
कुलक्तमारम वर्ग निक्षा	_ 1	(क्रील क्रम श ्रम	
दुल्यकर 🛣 १३०	3 n .		99 98
कूण थर ३४ त्या	306	क्षिका अल्लाका (व	
हुन एक स्मि राङ्गक र छन	ا جرء ا	(उन (१थ)	: व जात
কুলতেশ গুণ (ভিবতাদি ((* *	ं । य उप क म श्रः	৭৯
che i		ক'শক্ষার হন্দ্র গুল	าต 8 ≥
খুলমাদ ওঃ	350	কেশস্বর্গবিজ্ঞান	68 68
कूनवीख भमा छन	۾ ي	काम' करी छन (मछ	
কুলাহল গুণ (লিপ্পান্যাদ	.18)	व्यक्ति (प्रके)	
क्रिमाप्त ७।	* 8	कि इन नहां छन	
কুলেখাড়া সংঘুক্ত মৎসের	दाक्षन	কোমার তৃত্যু তন্ত্রের য	र्ष ७
ુ જીત	92	কৌছুত্ত পাক তণ	50
কুলেচরপুজা গুণ (ক্ষরকা	मि (मर्थ)	कुक्त मारम छन	€¥.
কুত্মাগুভৈদ গুল (চিরভা	দি ভৈদ	কুভাল বিজ্ঞান	200
(甲박) • •		कुछक्रक्रिक मांग्स छ	ન ৬૪
रूपान्ध मध्युक मध्यमत्र मा	974	क्रकनीत छन	bb
<u>~</u> . ચન	42	ফশসা গুণ	∑°8
रर्गरीय छन (रूस्डु छ	न (मर्थ)	पर थन (गांक कर)	
A comment of the	-	- 	* ~

7 270

Tagit	भवा र ।	, दिनके ;	नवाइ।
श्राम् उपा -	62	श्रेष्ठ कांक कका जवा श्रेम	222
पक्त वाहि बच्छा छ।	200	कण ही कन (बरमामना (म	4)
भक्तीगरम यन	Q.s	क्षण हो छन मध मन्त्री ची।	च (एथ)
খদির তান	320	अष्ठ हो वत ∙	20
चंत्रश्रंभ छ। (निक्शांनामि	(甲박)	®वो क ७व	322
थन कार्थार करलकत्र सन	506	গুছাশার পশুর মাংস গুণ	4>
थानिम। सरम छ।	86	গুহাপর মাংস বিজ্ঞান	45
थःनिक मारम छन	309	গোৰুৰ্ব মাৎস গুৰ	98
শ জুব মজ্জা গুন	3.0	গোজীবালভাগুণ (গোড়ে	
था 🚭 त महा छन	88	(गाकिस्त। छन (मछ कन्नी	(मृथ)
শিচু ভ গুন (কুপরা দেখ)		গোভিছবা পাক গুণ	32
शक्त गांध्म, छन		গে ড়ালেরু গুণ	99
গজাড়িনৎস গুণ	8 6	গোপুন গুন	et
গভগতে গুণ (কুম্বলিকা দে	4)	गोधाबारम छन्	<i>৬</i> ১
গড়ই মৎস গুৰ	69	গে ধ্ম চুৰ্ সম্বনীয় ভক্টা	2CC BE [F]
शकोत भारम छन (शक्ती मा	भ (मर्थ)	(गार्म छन्	89
গভার গুন (পিপ্পাশ্যাদি গ	म थ	গোরক চাউলিয়া উণ (গা	C _i PF
श्रवा भारम छन्	હહ	ककी (मध)	
গ্ৰাহ্ত গুণ	98	भाग चालू ६० (कमरर्ग	পিণালু
भवा मधि अन	೨۰	(मर्थ)	
কাৰা হ্ৰ গুণ (গাভি হ্ৰ দে	박)	গৌড় শী পু গুন	8&
भवा माध्य छन	હર	গৌরভিভিরি ম'ংস গুণ	49
গম্ভারি কল গুন (কংশ্বর্যা টে	₹ ♥)	গৌরশবভ হ্য় গুন (একশ	*
গৰ্ম ভত্ত গুণ (একশক হয়		(१४)	
গাৰ্মভ মাংস গুণ (একগক চ	ा ९म	অম্য মাংস গুৰ	6.5
(मर्थ)	•	এইশ্যা মাংস বিজ্ঞান	وه 🌲
গৰ্মভ মূত্ৰ গুণ		খণ্টাৰুল পূষ্প গুন (রক্ত র	র্কাবির
गाटकक्की छन	20	ু পুজ্প দেখ) খ্ৰিভ বিজ্ঞান	
शांत्राकिन छन	St.		•
গাধার ভ্রত্তন (একশক ব		ष्ट्रभाती छ। (ज्रुनी प्र	(4).
'গাৰকল গুণ (পারাৰত ফল	'দেখ 🚅	र्घृत । इत्यत मत्या छेरहा	Po 2
नाविश्व ७०	14		220
क्षेत्रकाति देवन छन्। मध्का	म	युष्ठ शक मारम छन	308
(जम (मर्थ)	,	খুডাদি ভারা পক গোধুৰ	
नियामरयुक्त यं १६मत वाधन		ৰিজিত প্ৰিষ্টৰ গুণ	777
क्षक्रिका स्वयं श्री	• 303	श्रुष्ण मन सन	9£
क्षेत्रकार क्षेत्र (काक्स्राहि	CH#)	मृ(जूत मर्दा छेर्ड्डक	500

भवाद्य। निर्वि .

अवोग ।

	92	क्रांज मध् छन्	g.
যুভের সহিত সিদ্ধ মাৎস গুণ	74	हाना छन (जर्क क् किंका (मध)	
इनक कना है छन (क्षाना (मर्व)		ছানাদি হয় বিশার জাও ভক্য	
ংশ ন গুণ	24	प्रका श्रम प्रमाप्त अर्थ प्रमा	
চন্দ্ৰকান্ত মানজাত আগগুণ	29	ছোট এলাইচ গুল (কার্যী এবং	
हमंत्र मारम छा।	89		
চনবী হয় গুন (একশক হুর দেখ		खुशक्को (मधन	
চৰৱী মাংসঞ্জণ (একল্ফ মাংসং	मर्थ)	ছোলা গুণ (চনক দেখ)	
চল্পক কুন্দ্ৰশ্বিৎস গুণ্	৬৭	ছোলাশক গুণ (ছব্নিমন্থ শাক দেখ	
চম্পক পুত্ৰপ গুৰ	20	जगन ममा ७०	8€
চাউন ভাজা গুণ	206	জন্ম প্রদেশের জন্মণ	29
চাকুন্দাবীজ গুণ (প্রশুরাড় দেখ)	জঙ্গ,ল মাংস বিভঃ ন	45
চালেরি গুণ	20	জন্ডদিগের শরীরে ধাতৃ এবং	
চালতা গুণ (ভব্য ফল দেখ)		স্থালেব লঘু গুৰু বিজ্ঞান	90
किएम मर्म छन	b r	জম্মীর গুন	bb
हिन जा मरम खा	69	জ্পধির ফল গুল	92
किकिना द्वरण नदम सन	હ	জম্বির শাক গুণ (পিপেনাদি দেখ	1)
চিভা গুণ (চিত্ৰক দেখ)	•	জমিতী গুণ (জাতিকোশ ফল	
कित्रक छन (शिक्शनाम (मध)		(म्थ)	
हिंद्यक छन			320
চিশিটক গুণ	69	অধন্তী গুণ (তর্কারি দেখ)	
	209	জেশ বিজ্ঞান	20
চিশিটক গুণ	778	জলতাহন করিবার কাল নিকণা	24
চিপিটক পরামান্ন গুণ	20€	জগাভূ মর জল°গুণ (আহপ-	
হিরাভা গুণ (কিরাভ ভিক্ত দেখ	•	(मंडचंद्र छन (मर्थ)	
চিত্ৰাভাদি ভৈল গুল	99	জলের বঘু গুৰু এবং দোষা-	
চিল্লি গুণ (তণু গিয়ক আদি দেং	1)	भा त्र कथन	26
চিল্লিশাক গুণ	27	জাললগের মাংল বিজ্ঞান	20
' हुम्हे चानि छन	200	छा। छरकामा कनवर्श छन्	b8
ट्राइट अन	Sec.	कार्किन छन (आफिरकोम कन	• •
চুণের :গুণ	ু১২৩	(मथ)	
८ हर बर्म छन	৬৬		
हगनाको छन (हुन्ह, जानिरमध))	जीकुलनी (लानिकामि (मथ)	
ें हारा परि छन	90	অধ্যেক্শ গুণ	P-0
হাগ হম গুন (ছানীহম দেখ)		भाषत्र मौध् छन	84
क्षांग माध्य खत (अख माध्य प्रम)	जाइकन छन् (इजाक्टिकान कन	
ছাগফুর গুণ	£0	े (नथ)	,
श्राीकृष्ट छन	QŁ	क्षित्रमञ्बदम धने	۽ ط
के ती दब बन	23	जीवन क्ष्य (मानिकामि (मर्थ) क	1.2

" विश्वे	नेक्यं क	विक्छे -	শুৰাহ্ব।
ख्रीवस्त्री स्थ्य (हम्ह क	व्यापि (प्रथ)	ভালকর গুণ	b \$
श्रीवर्षी छन	20	ভাৰমজ্জা গুণ	3+0
क्षोवको देवन छन (हि	द्रजामि देवन (मर्थ)	िक जनावू छन	, ৮৬
জীরক গুণ (পিণ্লাল	ग्रांम (मर्च)	ডিক্তবৰ্গ	2.9
क्योद्रक धन	. 64	ভিক্তরসঞা -	૨૨
व्यात्राखन (ब्लोदन त		जिएक माथा छे १ क्ये	200
জ্যোৎসাঞ্চণ	300	ভিতনাউ গু। (ভিক্ত খনা	बू (१४)
व्यागात्र क्षण खन	_	ভিভিরি মাংস গুণ	4 9
ুৰভা গু। (কাপাড	को (मथ)	ভিনিশ ভৈলগুণ (চিরাভারি	टिक्रम (मर्थ)
5 4 49 6 4	P0	ভিন্দুর কল গু।	60
क्रेडन कात्र छ।	202	ভিলকল্কাদির গু।	>0>
अविदिन्द् कन छ।		তিশ গু।	48
क्वीवादनव मञ्जा (वी	। ज श्चका (भन्न	ভেদী গুণ	**
মজ্জ। গুণ দেখ)	ভিলপ্র। छन	49
हिम्नता ध्या छ।	৬৭	कोनशर्ग का खन (निश्भा	गार्शम (मथ)
1481	৬৮	जीनभी छ।	49
তক্র গুণ	૭ ૨	তুবরুক ভৈদ গুণ	• •
তক্ত বিজ্ঞান	৩২	তুবরক কল গু।	Po
्षक ्ष छ।	202	जूबी जा म रेजन छ।	ত৮
प्रकृशिकाठ मध्मा स	া ৬৮	जू यामक छ।	8 ৮
ভড়াগের জগ গুণ	ર ૭	जूनमा छ।	> ° >
ভত্তিক আদির ও	7 ≥2	তেপতা গুল (কোরবি দে	
তত বিক গু।	\$2	ভেতুল সংযুক্ত মংসে)র গু	•
্ৰত ্ বিক শাক গু।	دھ	टिज-शक भागायत्वात्र छ।	220
ভরমূল 🔞 ৷ (শাণ	बुख (१४)	टिन्नश्रक मार्म छ।	۵۰6
क्रके के कि ने छ।	. 00	टेज्डा विष्णान	وق
क्षक । त्र थ । (श्रन्व	াদি ৰেখ)	ेजगाकाक छ।	28
古中小 〇:(页页	চুলাদি ওয়ত	देश्रमंत्र मार्ड मिस्मर्टम	
क्यांति (मण)		त्यामन कन छ।	b ••
ভাগন ইক্সঞ	s of	ত্রপুষ্ণ।	۶۰۶.
BIA GU	\mathbf{L}	ज्यम बाह्य छन	b-30
ভাষান্ত্ৰান্ত্ৰ	28	ज्यम कन छ।	צע
	<u>.</u>	ख प्रम हेडन छ। (हिन्नाका	
ভাৰ লগত তথ	> ₹ \$•€	ेख्य (इथ)	-
णाम् छ। ज्ञानामि कनदर्श	30 %	वक्गा छ।	. 45
क्षामान क्याप्र		হৰ ভূৰিজাত শালী ধান্য	(2)
ভাত স্থাটির অশা ব	g-1 _ 2 -5	and the second s	Links.
W(A) W J. AD (ş	निष्माना धन	4

দ্ধি বিজ্ঞান	••
দ্ধির মাত ত্র্ব	૭૨
मधित्र नात २६०	47
मध्याम अन	3.9
मस्निष्गोष्ड हेक्दरमक धन	82
मखो एक छन (जूषि जानि (ङग (मथ
मनविध खवा खरवांत्र किया	324
मन्दिश खरा १०७८ गत्र किया	રૂચ્ક
मर्गेष्टिका मर्गमा छन	89
माजिन ७ व्य मगरकत्र यूग अन	3.4
माजिस करा छन	98
দাড়িষাস গুন	704
मानगर् ७ व	80
मिवानिजा श्वन	36
मिनात्राख्त्र भर्या वर्ष अञ्जत	कारभव
কাণ নিকপ্ৰ	
मीर्शिष हे कू अन	ક્રસ
इस विकास	20
इ ८ श्वत छन	24
ই ধরু সর গুণ	೨೨
इत्यत्र मत्या छेरक्ष्ट	وعد
(मर्गम्क (जन श्वन) मत्र है ।	- 1
দ্রবন্তা ভেল গুল (পুষে আদি	टे अन्य
(দখ)	1
ত্রাকাপানক গুণ	222
进一种 等月 多月	bR
দ্রাক্ষাদি করা ৰূপ	62
ষ্ত্ৰন ফল ৩ণ	59
ধনিব। গুল (আদ। কুপ্তস্ব ক ব	, Y
शिक्शंगारि (मर्प)	•
थानग्रमं छन	88
ধ্যনোলুম ৩৭	228
न दिनाक छन (छणु निश्क दिन	4)
नमात्र जन छन ।	20
नमीकाण मध्यान्तर्भ "	5₹
महोकार मरानंत्र छन '	64165
न्द्रीक्षन (इक जानि निष))
	•.

ı		अले/का	
	नागरकमंत्र श्रूष्णकर्ग । नाग श्र	.	
	(দ্ধ)		
	নাগ পুষ্প গুৰ	અ	
	नांत्रक कव छन	93	
١	নার সা পেরু গুণ	99	
	নারিছ্য ওণ্	23	
	শারি হ্যের দখি ৩০ প	•2	
	নারি হ ধর খৃত গুণ	9	
	नातिर्वन जन श्रन	24	
	नात्रिरक्व रेजन अन् (कित्र जा	M	
1	(उन (एथ)		
	नांद्रिक्न कम छन	P.2	
I	नातिर्वन मण्डा छन	200	
	नात्रिदक्त मना छन	45	
	নালিকা শাক গুন	~ >•	
Ì	নিকোচক ফল গুণ (বাভাষা	म्	
	कन (१४)		
	নিচুলকল গুৰু (বাভাষাদিক।		
	নিম্বেশি শুৰ	201	
1	नियाम रेजन श्रेन	80	
	নিম্ফল গুণ (কর্জাদিকল ৫ নিম্পান		
	নিশ গুণ (অরিষ্ট দেশ)	29	
	ानच श्रूच्य ७ व (द्रक्ट हक्का मिद्र व	el mat	٩
	थन (म्य)	3-4	
	নির্দ শু.ড়র গুণ (ধংসতিকা	4.4	
1	(मृष्)	40	
	নিসিদাপুত্র ওণ (সিজুবার	(Ed))	
d	न्। शक्त ७१		
	नीवूर्यम्भाका छन (क्राना	96* 1984	
	(44)	1	
	नोनश्रीम् १० छ। (उदलन्त्र	A	
1	(म्थं)	ý	
	नौन दण्न शन (प्रुचि जामि देव	Ka	
	* (44)	1	
-	नीनराष्ट्र रेक् अन	22	H
1	अनुसं स्था सार्था	: 8دي. : 8دي.	(9
٠.	न्डन वक्षा कृत	3, 4,44,44,44,44,44,44,44,44,44,44,44,44,	,

ग्डीशख

मिर्च ण्डे	প্ৰান্ত।	নিয'ট	প্ৰ'ক
নভন ভঞ্জ লাম হংগ	2.8	পাকা তেঁতুৰ গুন (পক তিন্তি (দেখ)
নূতন তথ্যায় গুণ নূতন মদ্য গুণ	89	পাকিমকার গুণ	. 505
स्जन मध् अन	80	পাকুড়কল গুণ (भीत्रवृक्त कन (सर्थ)
देनगानी हेकू छन	82	शारहान छन (मछ	्रभनी (मथ)
न क हेक्ट्रम छन	82	शरहीनश्रूको छन	ે ઢ
পক ভিডিফিল গ্ৰন	96	পাঠিন মংসের 🐯	
প্রকৃত্যের দ্ধি গুণ	27	পানী আমড়। ফল	<u> </u>
शक् मध् छन	80	পানীফল গুণ (কন	ৰবৰ্গ পু শৃক্ষ টিক
পক্রসঞ্চাত শীধু গুন	9€	(দেখ)	•
भटिंग छन	20	গাভিলেবুৰ গুৰ	90
शटहोन्नभव मध्युक मस्तमत	,	शामीवर्ग विष्ठान	98
राक्षन छन	93	পায়স গুণ	3.8
शख्य अप (वामिकामि प्र	*)	পারাবত ফল গুণ	96
११) मारम	32	পারাবত মাৎস গু	्ते क
পথ্য কলাই	(ي)	পাক্ল গুল (সপ্তৰ	१ ८म् ५)
প্ৰ্য শাক	22	পালঙশাক গুণ প	faফ (দৃ ধ)
প্ৰস্ফল গুণ	52	পাল্ডাশাক গুল (তত্ৰিয়ক আদি
প্রাপুত্র গুন	ə٤	(দেখ)	*
পদাবীজফল গুণ (পুষরবর্ত	े कल(५४)	প্ৰাক্ষণাক গুৰ	22
প্যুবিতার গুণ	20€	া পালল গুণ	312
পূৰ্মণ বিজ্ঞান	৬০		श्यामिकन (मर्थ)
পূর্বমাৎস গুন	ঐ	পিতপ্রকোপকর এ	
अर्थाहेक छन (मणु केनी	न्यों मि	পিণালু∓ গুণ (ক	
(দ্ব)		পিণ্ডালুক গুণ	৯৮
পর্পোটক গুন	20	পিছপ্রকোপকর ব	F. र्वा ७ ज्वापानि ১१
পরিভাজ্য অন্ন	^{ει} 3ε3	পিওৰংশমনী বৰ্গ	š č
পরিবেশনীর পাত্র বিজ্ঞান	275	পিণ্যাক এবং তিল	कल्क हेळा∤(बद्र ः
পল্লৰ ওণ (ক্ষীৰপ্লকাদি।		1 334	29
श्रमा ७। (शि^{श्र}नामि प		निभ्भवगानि वर्गः	B4 . 6 4
मनारु स्व (किन्नेना पि	(দ্ধ) 🖊 👚	পিপ্পদী গুণ	. 69
প্ৰাণ্ডমু গুণ	້ ລ ∘	निश्निकी छ।मण्	न्श्रमी ° व्यापि ट्रम्थ)
' गनानकां ७ डिस्टिन छन	ବନ		हित्राणा नि टेजन •
शमामामि छे छिन वर्ग	ھ	(मध)	
প্রাশ ভেশ গুন (মধুকানি	र टेडम	পিয়াল ফল গুৰ (রাজাদান ফল
(मर्थ) 🖟	•	(再考)	
श्रुवककन छन्	. 50	শিরাল কল গুণ	94
शब्दाक जन्द क्लारनत न्या	CEC POF	পিয়াল মুক্তা ওৰ	5'8

নিৰ্ঘণ্ট	পৰাস্ক।	ৰি ৰ্গ ট	প্তাম।
শীভবিণিট গুণ (লোনিক	नि (न्थ)	अन्ह मार्श छन	, & o
भीगरेकन छन (हिंद्र अपि	> চল	প্রসহ মাংস বিজ্ঞান	გი
श्री <i>नुकन</i> छ।	64	अ हीन व्यंभगेक कत छन	96
भू जीवर मा छन	અંજ	क्षेत्रभाष्ट्रम छन	58
পুনৰ্বাদি গুণ	25	शिवगारम विष्यान -	98
পুনৰ্বা গুণ (বৰ্ষাভূ দেখা))	गकी छन (हुक्तू जानि त	*)
পুনৰ্বা গুৰ ,	\$3	क हो अन	٥٥
পুরাতন কুল গুল	ન્ હ	क क्षाक्रम श्रेम् श्रेजमक सह	न (मर्थ)
পুরাতন গুড় গুন	સ્વ		98
পুৰাজন সৃষ্ঠ ১১	~* 14		b.a.
श्रीका लग्ल ्र	388	ंग्ल, मार म किंत किंत अ	
श्रीर कर मन्द्रा । भ	408	वन भे र रा छिनन प	্ত ভকা
र्वेश्वन कर्	e, (4	477 C.	239
双 耳中心 11	* "	क नहीं रश्मा शब	હક
THE THE STATE OF T	. .	रू राज में क्रमी	2.5
र पंदाबता भ		一种写画文题》(何明十	मि (मर्थ)
भूल्य वर्ग		🦥 नित्र हेक्ट्रब्रटमत्र स्थन	8\$
2. 法献 源片		किन्द्री । म अन (क्रिक्स	१९म (मथ)
रूप शब- कन, मान द्रवर		· 对本 罗斯 和中	88
কিরপে গুৰু এবং কির	প আংগি	वरमञ्जीत श्रीका अन (क	বকাদি দেখ)
्मलग्ना कर्त्ता	र दर्ज		96
श्रुरेगाक छन । श्रीकका त	** (**	বংশকরীর শুন্	55
शूर्गकत १९५	₽8	दक्शूष्ट्र छ।	at .
পুজ্ক মাংস গুন	હ ર	বৰপুষ্প গুৰু (আগন্তঃ পুষ্	
পুডিকরঞ্জের পত্র গুণ	3 8	বকপুজা ভৈদ্ঞণ (এ	रेक[यक]
श्रीज्या अन (इन्हें जानि र		टेडन.मथ)	•
পৈতিকা গুন (পিপান্যা	म (मर्थ) 🦼	वक्त यना अनी	8≰
পোভিকাশাক ওন	موم		હત
পোত্ৰ ইকু গুণ	82	বৈক্ৰ ফলগুৰ	₽ı÷
(भी जिके मधु छन	అస	বলী সমূহের পৃথক পৃথক	অহপান
প্রত্যুদ্দাৎস গুন	≥ 8	্ 🕅 জ্ঞান	229
প্রত্যাদমাংস বিজ্ঞান	* **	বটুক গুণ	59
विश्वाफ् छन (,मण क्रमनी	- न्याम	वर्षेककन छ । (कीन्रहक्क व	
(유역)	<u> i</u>	व्हेक छन्	\$0\$
श्रीशंक छन	20	the state of the second of the	
প্রভাতে অগ্নাদি সেবন গুল		वर्षा मध्यक मश्रमक वाश्र	
विगरे ४ ९ (हुक्त, जादि तम	₹)	व्हत्रक्ष श्र	

बिर्च' छे	거역(후)	निर् ष ं छे	
वम् त छ ।	৭ ৬	वामकभूष्ण धन (हुरशुष्ण (प्रश	٠ (١
मनमूला ७०	40	वांभककम सन (महेत्र वक मि	
यमा कृत्रवंकनाई श्रेत	€ 8	वानी है छ छन छन	26
यर्चि मरुमा छन	, ৬৬	বান্তক তথ তেও লিয়ক আদি	
ৰৰ্ষাভূ গুৰু পিশুপুল্যাদি দে	4)	বাস্তক শাক গুণ	23
বৰ্ষ ভূ গুণ	64	বিকৃত লেশ গুণ	₹8
ৰকণ গু।	20	विष्ठेलक्ष श्रम •	300
रक्त थन	20	বিভক্ষ ফল গুন	৮ 8
বয়ড়াফল গুল (আক্রকল দে	♥)	विम तिकमा छन	مواھ
बहार्क्य छन	ووو `	विक्षी वका श्रम	b C
বরাহ্মাংল গুন	60	विश्वाक्तिका छन (हुक्तू न्यानि (
वन्। भिन्न अवर मच्का विकाः	न ७৮	विश्वीकन छन्	۲۵
म्रजीत कम श्रव	وط	বিস্বীফল গুণ	63
वस्यारम् ७०	83	विमुगाकामि छन (भूग्ववामि म	
বজ্ঞ ধ'রপ্	, 24	বিলেশয় মাৎস ক্তৰ	
ৰহেড়া ভৈল গুণ (চিরডাণি	टिजन	ৰিজেশয় ম'ংস বিভৱ'ন	90
দেশ		বিস্মান গুণ	275
বংছভাফুল গুৰ	98	বিক্কিব মণেস্বিজ্ঞান	49
बर्ड ए। वीख भना छन	94	নিষ গুণ (কন্দবৰ্গ দেখ)	
বাইন মংসা গুণ (বৰ্মিমৎস	ा (मर्थ)	নিব গুণ	24
वार्वन मध्मा छ ।	69	बीकाशूतक'मि यस्क्रोह्नत	b £
্বাক্তীকরণ ভাস্তরে মর্ছ	8	বেণু গুৰ (পিপ্পল্যাদি দেখ)	
बाद्यास्या छन	৬৭	বেন ভক্ত ভাগা গুণ	રુવ
বাটা শুণ	27.0	ৰেতেৰ ভগা গুৰু (বৈত্ৰক্ষীর ৫	
ৰাভসংখ্যনী ৰগ	دد ت	কেতে শাক গুন (ব'স্তুক শাক (-
बाक याचि करमर्ज	62	(रखकडी त छन (मधुकलनी जा	मि _{//.}
ৰাদামকল গুণ (বাভাষ্টি	कटा	ु (मर्थ)	
(मर्थ)	/	'বেত্রকরীর গুণ	స్త్రి
वालीत कम श्वन ।	18	विदुष्त्र मर्मा विश्वाम	. 3
বাপীকাৰ মৎসা এন	60 1	(बर्म महुमा छन	69
वाधमङ्गि छन (कक्षी एम्स) f	(वनवां छ। देवमग छ।	309
याननी जनाव छन	64		>>\$
ं व ब्रुक्षरकांशकत्र कार्वा ७ जन		বোরাল মংস্যের গুণ (পাঠিন দেখ)	457
বায়ু বিজ্ঞান	ا هر درست شعد	ব্যঞ্জন গুণ	4.4
বার্ছাকু গুন (মৃত কপনী অ বার্ছাকী গুন			3•E 3•
Maria ne man mer men des	6 %0	राष्ट्रम क्षेत्रव	ાલુ
श्रावीय मध्याम गुर्ताह है।	रनकर्म केंग्र	यात्राम धन	20

নিষ্ণট	পত্ৰীয়া	নিৰ্ভ	প্ৰাছ ৷
ভ্ৰম ক্ৰচলা তা (ৰত্	म्लिनी जामि	मरमात भरधा उद्यास	204
CR4 9	4.1	मध्राष्ट्र काउनीध् छन	8ર્ષ્ય
जी शीध मा अन	£2.	मधु रिष्ण न	့ မည်
त्रवाणि भूष्ण वर्ग छन	∌ €	मधुत वर्श	ં ૨૪
রব পূজা গুণ	, >0	मधूर अम छन	20
ব্ৰফিল্লল গুণ	રહ	बधूत द्रामत माण छेरक्क	304
রুহংকুপ জাল গুণ	29	মধুলিকাজাত সুৱাত্তৰ	8%
রুহতি গুন, মত্কপনী	मि (वस)	मधुनकंता छ।	89
রুহতি কল গুণ	20	मध्भिता छन	৮৯
রকাদনি গুণ (চুকী আদি	(দখ)	मधुमिला गामि छन (निक्नी गा	
ব্লকাদনি গুণ	20	मधुनिल अतर करीर छन	ે અ
खराकन छन	داي	मधुमिला पि श्रेष्ट्रा छ।	24
ভলাতক গুন (চুচ্চ আদি	(দেখ)	মধুশিতা পূজা গু।	> t
एक्काउक, टेडन छन े	૭ ૧ '	मधूक कल अन	৮২
ভালাভণ্য ওদ	304	&	b 2
ভ কদ ইক্ ওন	83	মধক পুজপ জাত ফানিত গুণ	89
ভূতবিদা ভ স্তাম গ্ৰ	૭	মধুকাদি ভেল 😵।	৩৭
ज्य न छन (मिक्नानामि ।	(দ্ব)	नध नुक छन् (कन्मनर्श (क्थे))
ভূত গুণ	र्ख	मधुम्ब छन	89
ভূমিকুখ' ও গুণ (কম্বর্গ	(守計)~	মন নাফল গু । (বা ভামাদি	(두박)
ভূমিকাভ উডিদ গুণ	29	मञ्ज म 'म ७०	6 P
ভেডার হৃগ্ধ গুণ (মেবীহৃগ্ধ	(मर्थ)	যদিত বছৰ (পিপপাৰ্য দি দেখ	1)
(छमानो मार्ग छन	t a	মলিল প্ৰশংগুণ ওণ (মানতী	Sast.
ভৌমজৰ গুণ	২ 8	(मर्थ)	• 1
ভামব নধু গুণ	ు స్ట	মসলাদি যুক্ত ভাঘুল গুট	250
ज् ष्टीम २ ग	,> o &	मञ्ज कनाई छन	c p
म'क्षका छन (मछ कभनी	(দখ)	महाद्वन खान महम छ।	৬৮
মটর কলাই গুণ (সভীন		মহিষ মংস গুণ	မွှေ
মণুকপ্ৰী আদি গুণ	32	मार्ज शकरन	. 20€
मध् कलगी छन	* 3	্মাংস বিজ্ঞান	. ty
मर्क्नानी छन	(बारमञ्ज्ञ मर्या उँ छ	205
मरमधिका थल छन	89	मेर् एमत यूर छ।	209
बरमवर्ग किन्छान	9€	মাগুর মংস গুণ	89
मर्गामि ग्रह्मुक्त वाक्षरनत		ম তুলুক কল ওন	৭ ৭
मर्टात्र व्यक्ष छेव	৬৮	मामात्र कल 😂 (तकू र कल	
মৎমের য'ট গুণ	42	मः ही क मना क्षते	88
মন্ত গুণ	330	भागक छन	€€ • /±
মৃদ্য বিভান	88	गौनक ७६ (च नामिनर्ग मिन	(=)

मूही लखा

निर्शिष	Plate I	মিৰ্ঘন্ট প	বি হি
मु:मकर् छ। (भानक (१४)		मुगमाएकामि म'र्म छ।	49
মান্ত মূত গু	40	मुनाम छ। (क्यार्ग (प्रथ).	\
मामकी शुक्त छ।	એ છ	म्बी क हे कू बना नव वर्ग	. 89
योगननार मध्यूक शिक्षेक छन	275	यकाष्ठ स्वत काम श्रेस (की दहक	
मार्थिय शुच धन	0 E	चक्र विक्री फिड हे क्तू ताम ब	
माहिय मधि छ।	୍ ୬୦		. 4 8
मार्किम ५%	ঽ৯	ষব গুণ যদ, কোল এবং কূলত্থির যুষ	
মহিষ মৃত্ত গুণ	8>	•	88
माक्कि पर् छन	80	ষদজ্ঞান স্বাধি	Ø.P.
मित्रिशं मध्य छन	6 9	যব ভিক্ত ৈত্ৰ গুণ	2• 8
মলিত জবা	23.	মেসমণ্ড গুণ যস—ংসংদি কাবল গুণ	3.9
फेंख'पि ख्रा	352	चनानि छन	+8
भूमता ज्यानित सन	& 3	यगाम छन धन ⁺ ञ भ क त्रं छन	83
মুদ্রা ও আমনকের যুদ্ গুণ	316	মানদীয় শক্তবা গুণ	دع د
মুদ্রাযুব গুণ	3~9 [']	যুদ বিজ্ঞান	309
गुरशे मरम छन	હા	্য যে (বিশাস জল্জে কলেভিয়	
মুক্ষদপুষ্প ও । (রক্তর্কাদি পু		(म (श (त्रांश) मिम नात स्व	૭૬
মূত্র বিজ্ঞান	8>	বক্তকাঞ্চন প্যপগুন (ক্তিদ	
मूनक छ। (शिश्शनां मि प्रथ		रक जमान छन	34
म्नक छ ।	ا هط	वक्तमम धर्म (जिन्नश्रमी (प	ie)
म्नटकडू यूच छन	318	दक्क शिर्ष के के । क्रिन्य के एम्स	
म्गा मः युक्त भरामत राजन श	94	रकात्रकामि शुक्तनर्भ	at
(ममम् १ अ	હર	द्रक्त किना श्रुष्ण छन (मधु	ोग
<u>_</u> (कृषमारमञ्जा (अत्रकामारम	र (मम)	शब्स (मश)	٤
মেৰ্মুত গুণ	t o	दञ्जल छन (तस्तर्ग (नर्थ)
(यर्गे भू ण छन	્રક	বশুন ঞ্ৰ	62
मिर्दोपिथ छ ।	ັບງ	রস্ত্র ছিত মাধ্যস্ব গুণ	200
(मरी इस छ।	45	রসারন ভল্তের মর্ম বিজ্ঞান	•
रमध्न छ।	ડહ	রমূলি। প্রকবণ	2.5
মৈচুৱৰ আস্ব ওণ	89	श्रीर छ (जन् (पर्य)	•
मिछि। अनाहेष्ठ छन् •	ુ	রাগৰ ড়ব গুণ	.509
त्यामक छ।	, 77%	त्राष्ट्राचान्त्रक्षन(कच्च वर्श अत्रक्ष	
भोजालुक्त (कमत्र कमहालू	ক দেখী)	রাজক্বক গুন	28
६भाज्यन छन्	₽ 3 6	त्राक्षांवन कल श्रुन	b •
মৈলকুলজাত কাতিত গুলু (एशूं क	त्राक्षिका छन (निर्मुन्गा न	(मर्थ)
প্ৰভাৱত কাণ্ডি (মুখ)		द्राविकागद्रभ्य	. 36
इगेमां छ ।	. 4t	द्राधनस्मा छन् ।	44
इग्बिन्द्र मारम् छन	. 83	क्क्म ९७ थ :	\$2.3

अन्दानव ।

'বিশ্বট' প্রাম।	1 194 6
রপ্য থ্য ১০১	मजावतीयम कन
(द्रज़ेटिंडन छन (बद्रत (इन (त्रस)	नमी कन कर्त (जिचि जिका आहि सिक
রোশ্যাভি রোশ্য ধান্য গুণ 🗼 🗪	
(तामक नवन छन ' ' ' ' ' ' '	শর্করা শুণ
রোণ্ডিড মংসা গুণ ৬৮	णलक मार्ग छन् । १ ७३
লকুচকল গুণ • ৭৮	भागार्ड द्वित मग् विकास क
লভাৰ জ্বরিকাফল গুণ ১৪	ं माझू म अत्
শরুষ গুণ ১২৩	There are diversion as
जरमण्य ७१ (जाकिएक ने ह (म्थ)	শসা ওন (তাপুকল ওন দেখ)
77°, 5	मना मरपूक नर्भन वाकन धनं नर
^९ वस् व ^{८१}	न्य अक्ष अक्ष स्तर्
ी (तम अ) · · ·	ी जे दी के व्यक्ति के के
'त्र्वित्रस्त् _र ५७	
नवटन्व भागति । भूक	। लाक मध्युक मल्याह बासम छन ५२
3 to the state (no)	न(८कर भ८४) एंदक्छ ३०७
# 15 OH / MA' & G	नाकित्र भी द् सन 84
मा छे (सन्न भारत मार्ग मर्गमान	ि प्राप्तिक । नवस ३२७
3 4 € 7 € 8 € 8	णा, शङ्च क क अप (ज्यापुरत क क
मा ज ३२१	(পথ)
নাজনও গুণ ১০০	
শাল্পক্রন ১১৪	निविगायका छ। (क्यावन्त्र
लावगरम छ्रा	न्याम अल्य (मध्)
नानक्षण छन (कर्ता र छन ।न")	ं। होता र जात्र मस्य । य छ । न
লেপত জাঁসক জন মে, ১০৪	विक्षित्र कर्म
লোনিকাদি বৰ্গ ওন ১৪	। माख खन (रिमाल्यानामि (मच)
লানিকা শাক ওণ ১৪	િન હ હા,
्नोर् छन	मि। इस्ह क सम (का हिह्म कन
भक्त मश्मा छन् ५१	(গ্ৰ')
मधारम छन् भ8	भीवंदह कर
मधानूक उँ।	भेरिक । तस्ति प्र
थक्त मंदना अने (मंकत मंदना (इसे)	85 STATES AND OF
मक्न भरमा छन	केल करकामक माध्य छन
भाग छन (ह्ल भागि दम्भ)	
मा शुक्त खेन (क्वितिमोत्र श्रूका (मथ)	क्ष्यमा रा पुक्र नयम् त्राह्म वाह्म
भनवीरभन्न रेजन कन कन	
भग्रत्भात रेक् श्रेम * / हर्	धक्म्ना नव्युक्त मर्म्म वाक्रम
भड युनी क्ल छन 💛 अध	
अणुषि 🍽 (केंग्रर्ग (१४) 🦠 🤫	्रभूमक् मन्या वर्ग - १० १०।
* , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	

क्रिशंब ।

	ণৰাছ।	নিঘ ট	A(重)在)
वर्त छन् (हुन्ह जानि तम)	সভাহ প্রস্থা গাভীর হয় এ	। वर,
टलामा विष्युत	29	মোরট গুণ	94
ক্ষোবিত অগ গুন	· 2t	मयुक्कका ७ मरमा मर्भ	69
^ৰ লাগেষা ভৈব গুন (তুমি আদি	े डम	সমুদ্ৰজাত মংশা গুণ	•>
্ৰি দেখ)		मभृत्यात व्यन छन्	29
क्षिकक्रमण। छनं (श्रूष्ट्रीकन म	*)•	मभारम छ।	63
द्विष्ठ मात्र छ। .	Þ٩	সক্ষাম শক্ত গুণ	228
्रें इनर न छन	51	সক্ৰিচার শুক্ষণাক গুণ	ક્ર
্ৰেখ্যা জাভ হ্থা গুন	88	সকাহশান বৰ্গ বিজ্ঞান ু	33>
ै. न्युक्ट वत्र छन् (। १९७१ ना। पि ५ प	박)	मिर्ग छ।	Œ
अपृष्ठिक स्वत (कस्पर श रिष्य)		স্বপ্ শাক ওন্	৮১
শুদার্ক গুণ	46	भन्म (मध्म क मामि टिन श	4 05
५.३ थ। वि ष्णान	39	मत्रम थ जिमस्मा अन	৬৬
শ্লেমাতক ফল ৬৭	స్థాం	ग त्रवा खन (अवल (मर्थ)	
अफ़ अ २४ म ७।४ (१ छः, न	ь	मितिया ८ जम छ। (मामेल टेड	河 (育 智)
স্ভ্রগ। ব্ছান	22	স রিখ লাক গুন (সর্বপশাক	
ষ্ডর্স বিজ্ঞান	₹0	সরেবর ভড ড গজ ভেবৎস গুল	
यिक्तिमाना अन	4.2	मध्यानायत जन खन	રેક
मिथिनो टेब्स छन (दूषि भारी	দি তৈল	मध्य हेडल छन्	૭ ૧
(দ্ধ)		সিতাকী ওন	2 9
সংস্তএং অসংস্তযুষ ৩	ન ১০৯	সিস্কুর'র পুষ্প শুন	29
मः नभग जवा कथन	, ,,	সোখ। তকাফল গুন	99
मर्टमाधनी जनावर्ग । वर्षः न	 ≯b	मामक अन	3.8
সকল প্রাণার শাক গুল	w 9	श्रीक्षधन (शिल्लानगरिन (मक)	
जैनेन थानात थारन त्र छन	et	স্থা। ধা দ্বা শেপন গুৰ)
मक्स श्रीकात धारनात यूर छ।	204	श्निगक्षकथन (मधकल्बी व	
স্টাশ্যক গুণ	* 58	्रमिर्थ)	, ,
সভান গুণ (মণুকপণী আৰ্		হ্ৰিষয়ৰ শাৰ গুৰ	હર
(मर्थ)	•(श्रुशित छन (श्राकन (नथ)	
লভীন কলাই গুণ	4.0	अ्रोक्तासन (मछकशनी भा	मि (मच)
मञाम भाक स्था	€ ⊙ ″ >>.:	क्र वर् छन	202
সাদোজাত নগনীত গুৰু		च्यार्थी। छन् (लानिकानि म	
<i>(</i>)	365	स्र्व थन	
मारमाग्रिको छ। सं छ।	i	स्पूर्व छनः(विश्वानानि । तथ	703
महरू ७१	352.	र्श्वेत छन	
मखना धन मध्कशनी भानि	1	_	
(भव)	- 1	স্থাস গুণ (সুরুষ, শক্তর এব	. ``
मखना देवन अन (जूबि आमि	(चुन '	· 夏夏中(14年)	
* (T %)		प्रतम। २० ६ शिल्ला शांति एस	ž.

Riple I

विर्च है	প্ৰায় ৷	बिर्य के	4 a a . I.
(वम छन	h-6	হরীভদীবীজ শসাঞা	1
(বা-গুন •	48 ,	হরিমস্থাক গুণ	\$
(तामय छन :	80 }	र खिनी गृङ छन	44
(८४ छ रूप छन	36	क जिल्हा कि अन	. •3
वृश्वीभाक छन (छनि :	- (ग ³)	श्ख्नं इय स	े ३३
हेक् छन	8	\$ F. 44+	t o
वर्ष वली टेडन छ। (रिज	7 TE	र न र केस नर्ग (१ थ)
टें डल (मथु)		((((the start in the start	
ख्रम (क किन्धा छला	4 (F ,	् भा (शिं। । मि (में	* }
स्रम राग	37	1 th 211	6 b '
সেহ কুল দৰ		कारक व्यापित राज्य सार्वत (।	•
टेमसा मरा धर्म	20		.HQ)
्मामानिया शत पर दंद म	2,7 % 14	७० हैं	એ
४, छ न ७१	40	71	હેઇ
(मीम न गैंडका न		The el 1 1 19 1 1	
८१ सव छ । अवस्था	· • /	1 1 2 81	.31
(मिविक्वं करा ।)	٥٠	And double 1 miles in 1	2.7
সেবীৰক গ্ৰ	ਹੋਵੇਂ	कारेद्रभाग भा	4
(मोदावकन छ।	ey	कौरहरू न। (कौत्रहरू	
সেবিব গুণ	309	क्रीद्रह्मकग वर्ध	93
স্থাত ধান্য ধন	t Z	को। तक डेश्यल पित्रम 🍮	
শ্লবেত্ৰফল ওগ (বাতা	प्रिक्त क (००	क P क्षेत्रज्ञा रु मध्या छन्	ડ ડ
क्टूनकम धर्व	ä	िर जिन छ।	29
क्ष्रीमामि वर्ग	*	' দ ৷ নক্ জাল ভাপ	29
अने छ ।		'ফু • চর (স ান দে	
স্ব জঁকা স্কার গুন	3, -	(कर्णा । छ। व धन (शर्भ हे	•
वन्त्र अनुकार मरुन। अन	* 65 br	व्याटकात का ण श्रम	29
স্থ্য মাংস ও।	<u>ట</u> త	(क्षीजन १९)	23
रिक्रमारम छन	, 49		•
् इत्री क्रमें क्रमञ्जू	Ac	স্চীপত সমাধ।	i

বাভাম। বাদামী

বাদ্ধকন। বেভোশাক।

বিদারিকন। ভূমি কুমাও।

বিজ্ঞানা পালা।

বিজ্ঞানা বিলকন।

বিলাপারক। টাবালের।

বৈজ্ঞানা বিভ্রেক গোলা

বেজ্ঞানা বিভ্রের ভাগা।

ব্রেকেরীর। বেভ্রের ভগা।

ব্রেকেরীর। বাদ্ধনা মাটা মা যুক্ত হয়।

ব্রমপুষ্পা। বাসকপুষ্পা।
ব্রহ্মপুষ্পা। বাসকপুষ্পা।
ব্রহ্মপুষ্পা। বাসকপুষ্পা।
ব্রহ্মপুষ্পা। বাসকপুষ্পা।

ভবা। চালজা। ভূমিজাত উদ্দিন। ভূমি হইতে হত্তা-কার যে উদ্দিদ জামো। ভূস্ত্র। ভূস্ট্র। মুড়ী চাউল ভাজা ইহাদি।

मक्षं। कलाई विरम्य।
मधुकणनीं। मंक्ष्ठी।
मध्मिकि । संक्ष्ठी।
मम्मिकि । स्टमिकिना।
मधुमिका। स्टमिकिना।
मधुमिका। मछित।
मधुमिका। मछिति।
मधुमिका। मछिति।
माकुलुम। छोवा (लगू।
माकुलुम। छोवा (लगू।
मामक। मालकह।
माय। मायकनाई।
मूक्षा। यो शोकना। तुनुम। स्रोहाकन। कमनी कन। तुनु

রক্তরকা নয়, মুখ্রক, অব্ এবং আসন। রক্তালুক,। রাজাঅংশু। রাজক্তরকা রাইসারিয়া শাকা।

রাজাদন ফল। পিয়াল ফল। রাজিকা। খেড সর্থপাঞ্জ नक्रकन। मानातकन। नवनीकन। तोइ एकन। नाज थेरे।

भाषाल्का भाक भारत्।
भाषाल्का भाक भारत्।
भाषावा । भारत्ने।
भारत्या किना
भारत्या किना
भारत्या मिस्ला
भिर्मा स्थि।
भारत्या स्थि।
भारत्या स्थि।

শৃদ্ধান্তক। পানিফল। হে আছক। হছবার ফল।

मठीन। फ्रामिटेत।
गश्चना। श्राक्तन।
भव्या। श्राक्तन।
भव्या। मित्रका।
भिक्तनात श्रुष्णा। निम्निका। भूगी कल।
स्वित्रका। भगी कल।
स्वित्रका। भगी कल।
स्वित्रका। कर्मी।
स्वित्रा। के
स्विथा। (धें जूनमी।
स्त्रा, (धें जूनमी।
स्त्रा, (धें जूनमी।

হরে। কলাই বিশেষ।
হরিমন্থ। হোলাশাক।
কল কবক। অপামার্গ আশাং।
কীংরক্। বুট বজ্ডুমুর, , অনুর্থ,
শিরীৰ এবং পাক্ড়।
সমান্তঃ।

ञ्डन

. দুবাগুণ-দর্পণ

त्वन अवः । । श्रास्ट्रामञ्ज्ञ भर्षः ।

বৈদ্য বি প্রকার। যথা, — ঋক, যজু, দাদ এবং অর্থবরণ বেদশান্ত্র প্রথা এবং এক এত এত প্রথান প্রাণ্ড এই লাগের প্রথানতঃ ছই ভাগো বিভিক্তঃ যুগা, — মন্ত্র এবং একাল। ঋকু করু এন দাম এই তিমকে মন্ত্র ভাগে যাল। যে সকল মন্ত্র বেলিবং লিবাল এবং এবং একাবিশিন্ত ভাষদিগকে ঋকু যে ভাগা অরানি সংযোগে গীতিবিশিন্ত ভাষাকে সাম, এবং যে ভাগা উক্ত ছই প্রকার হই ে গুথক ভাষাকে যজুল গলে; যেহেতু ভাষা ছন্দো-বিশিন্ত পাদবন্ধ কথবা অর সণ্যুক্ত গীতিনিশিক্ত নছে।

বেদশাল্পের দ্বিভীয় জাগ ে রাজান, তাহা ভিন আংশে বিজ্ঞান প্রথম বিধিরপে, দ্বিভীয় অর্থবংগ এবং তৃতীর উত্তং বিদক্ষণ অর্থাৎ না বিধিনা অর্থবংদ।

বিধির চারি প্রকার বি.ৰ খাছে ১ ব্যুক্ত উৎপ্রতি এখিঃ শ্বিকার বি ধ বিনিয়োগ বিধি এবং প্রয়োগ, বিধি।

বেদে । । প্রভৃতি কর্মের সঁকল বোধক বাকের নাম উৎপঞ্জি-বিধি,
भगागानिव कलमश्रक्षदाधक वाका अधिकार्तिक, करम्य अध्यक्षरवाधक
क विनिष्ट्रिश्त-विधि अवर উক্তদ্ধিবিধ বিধির ঐকের নাম প্রয়োগ-

শর্থবাদত এক প্রকার বিধিষ্ণারুপা, কিছু ভাহাতে প্রশংশা শাণা নিন্দা দাত প্রকাশ পার। ঐ অর্থবাদ তিন, প্রকারে বিভক্ত, যথা, — গুণবাদ, শহ্বাদ এবং ভূগার্থবাদ। বাহাতে লগর প্রমাণের বিকল্প শর্থ বুনা বার ভাহার, গুণবাদ-যাহা প্রমাণান্তর দ্বারা প্রাপ্ত অর্থকে বুনার, ভাহার

নাম শহরার এবং প্রমানান্তরের সহিত বিষয় কংপ্রাপ্তি বজ্জিত অর্থ ভূতার্থবাদ।

উপ্রেক্ত ত্রাক্ষণ ভাগে অপর একটি ফতন্ত ভাগ আছে। সেই ভাগ কেবল পর-তাহা উপনিবদ শব্দেও কবিত আছে। সেই ভাগ কেবল পর-ক্রিক্র প্রতিপাদক। বদিও ভাহা বিধি ও অর্থবাদ, এই উভান হইতে বিশক্ষণ, অথাচ বেদ্ধিংগণ ভাহার ভাগ বিশেষকে বিধি বলিয়াছেন এবং কোন কোন ছলে অর্থবাদের মধ্যেও ভাহার গণনা আছে।

মত্র এবং ব্রাহ্মণ এই ছিবিধ ফ্রপ সমুদার বেদ কর্মকাও ও ব্রহ্মকাও এই ফুই ভাগে বিভক্ত হইরা ধর্ম অর্থ, কাম এবং মোক্ষ চতুর্বপের সাধক হই-লাছে কর্মকাও হইতে ধর্ম, এবং কার সিদ্ধ হইরা থাকে, এবং ব্রহ্মকাও হইতে প্রম পুক্রার্থ মোক্ষ লাভ হয়।

অথব্ববেদ কর্মনিষয়ে উপধোগী নছে, উহাতে শান্তিক, পৌফিক। অভিচারিক, আদি কার্যাই প্রতিপন্ন হয়।

অর্থকাবেদের অক্ষের অক্ষ যে অংয়ুর্কেদ, ত্রন্ধা লোক সৃষ্টিন পূর্বে উছা লক্ষ শ্লোক ও সহত্র অধ্যায়ে রচনা করিয়াছি লন। এ অংয়ুর্কেদ অউ ভাগে বিভক্ত যধা। শল্যাত্র, শালাক)ভন্ত্র, কায়-চিকিৎসাভন্ত্র, ভূভবিদ্যাভন্ত, কৌমারভূভাতন্ত্র, আদভন্ত, রসায়নভন্ত্র, এবং বীজীকরনভন্ত্র।

শ্লাতন্ত্ৰ।

ি বিবিধরণ তৃণ, কাস্ক, পাষাণ পাংশু ও অর্প্রাঞ্তি ধাতু, ইউকপ্রভৃতি
ক্ষুদ্র ঋংশ, অন্তি, কেশ, মধ ইত্যাদি দেহ বধ্যে প্রবিষ্ট হইরা ও পূর প্রভাবাদি শরীরে বন্ধ হইরা ক্লেশ প্রদান করে, তাহাদিগা,ক দুই ভূত করিবার
জনা যন্ত্র, শক্তর, কার এবং জনল প্রস্তুত ও প্রারোগ করিবার উপদেশ এবং
নানারণ হোগের নির্ণাহ করিবার উপান্ধেশ শন্য চন্তে বর্ণিত আছে।

শাকাল্যভন্ত।

ক্ষ সেরির উপরিছিত রোলাদির (অর্থাই প্রবংশক্রের, নয়নেক্রির আণেক্রির, মুখ জিহ্বা, দন্ত, জ্ঞধর, গাঁও, ত লু এবং আলজিহ্বাদির) ছানে যে সমূহ রোট্যাংশিল হল, তাংদিগের প্রশাদের উপুদেশ শালাক্য ভালে যদির আছে।

কার-চিকিৎসাতন্ত্র i

সর্কাল, ব্যাপ্ত ব্যাধি সমূহের (অর্থাৎ জুর, অতিদাব, রজপিত, শোষ, । উথাদ, অপমার কুঠ, দেহ প্রভৃতি ব্যাধি সমত্তের) উপশ্য করিবার উপার কায়-চিকিৎসাহস্তে বণিত শাছে।

ञृ अविमाध्य ।

অমর, মহ্মর, গল র, মক্তর ক্ষেত্র, শিক্তবেক, পিশার, ওক্ষকাদি নাগা, ভাক্ষরাদি-নবএই ও ক্ষরাদি গ্রহ; ইণাদিগার হারা চিত্ত আহিও হইলে হে সমূহ মানসিক রোগন্তের হয়; সেই সকল রোগের উপশম করিবার উপায় (গাভিষ্মা, মন্ত্রলপ, দেব সংদিগের পুজাবিধি, উষ্ধধারণ, রত্নাদিধারণ, এবং দেবতাদি গর উদ্দেশে ১ত্নাদি প্রদান) ভূগবিদ্যা তল্পে বর্ণিভ আছে।

কৌমারভূতাতন্ত্র।

সদ্যোক্তর বাদক-বাদিকার গ্রেছিপাদনার্থ, ধারীগণের শুন্য সংশোদ ধনের বিধি, মুফ্ট ঃম জন্য বাাধি সমূদের এবং ক্ষনানি গ্রহণমনে বায়ু স্পর্শ জন্ম, এই মনুহের উপশ্ব করিবার উপার কৌশার ভ্রতত্ত্বে বর্ণিক

व्यश्यन जुल ।

সপজাতি কীটজাতি, উর্নাজিজাতি, রুশ্চিকজাতি, ও মুবিকজাতি, প্রভৃতি বিষয়ক প্রাণি নকল গকোন প্রাণিকে দংখন করিলে, সেই বিষ কোন জাতির তাহা জানিবার উপায় এবং ঐ সকল বিদ স্পর্শ করিয়া কিছা দ্রবা সহযোগে ভক্ষণ করিয়া প্রাণিগণ মৃত্যুপ্রায় হইলে, তাহার উপ-শম করিবার উপায় অসদ চড্যে বর্ণিত আছে।

রসায়ন উদ্ভা।

বয়:তাপন (অর্থাৎ মহবোর মুবার সম বিশিষ্ঠ হওনের উপায়) ও পর-মায়ু, বেধা, বল প্রভৃতি উল্লিড করিবার উপায়। ও শরীর বাহাতে রোগা-জ্ঞান্ত নাহর; সেই সকল রসায়ণ তল্পে বর্ণিত আছে।

विराधिकार्यन

বাজীকরণতন্ত্র।

অপপ কিষা শুক্ষ শুক্রের উন্নতি করিবার বিধি, যে শুক্র বিক্রত হইনাছে ভাছার পুনর্বার অভাব সম্পাদনের বিধি, ক্ষরপ্রাপ্ত শুক্রের উৎপত্তির বিধি, ক্ষীণ শরীরে বলব্রন্ধি করিবার বিধি এবং চিত্ততে অভ্যন্ত আনন্দ উৎপত্তি হওনের বিধিঃ বাজীকরণ ভক্তে বর্ণিত আছে।

্ এই ওলবাবিজ্ঞান, পুশুক্ধানিজে আয়ুর্কেদান্নযায়িক ার্যসমূহের গুলাদি লিখিত হইবে বলিয়া প্রাধ্যতঃ দেব এবং আয়ুর্কেদের মর্ম জ্ঞান লিলিন ছইল।

खयशी दिख्लान

আছার, প্রাণী সকলের শরীরের বল, বর্ণ এবং ভেজের কারণ । । । সেই আছার কটু, ভিক্তা, কষায়, মধুর, অল এবং লবণা এই ভর রূপা রসে মিলিভ ছইরা থাকে;।

ं स्वा अमूर वर्षा नाम कथित चाहि, तिहें वर्षा अम्य हुई श्रीकात। यथा ।—चात्र अवश्क्षक्य।

খাবর ওমধি চারি পানার । যথা।—বনস্পতি, রুক্ল, বীক্ষ্ এবং
তথি । যাহাদিবের ফুল না হইরা কেবল কল উদ্ভব হয় ভাহাদিবকৈ
বনস্পতি কহে। যাহাদিবের ফল ও ফুলুন্টভয়ই হইরা থাকে, ভাহাদিবকে
রক্ষ কহে। যাহার কেবল ভূনের গোছরি সম কিখা ভূনার নাায়,
ভাহাদিবকে বীক্ষ্কহে। যাহা ক্লেল ফলের পরিপাক কাল অব্ধি জীবিত
খাকে, ভাহাবিকে ওমধি কছে।

जनम ও गाँतिकार्गात् । यथा। - जतायुक्ष, जशकः त्यम्ब जित्र छे जिल्ला। जहे गाँति व्यकारतत्र मध्या मञ्जात ज्ञात ज्ञात श्रामि जतायुक्षान वहें एउ जिल्लास वह, उक्तना जोनिगरक जनायुक्ष करूर। श्रामी मर्ल अस्मागि जले दहेर्ड

ভাৰর হইতে, ত্রুক, পান্ধ, প্রশাস ক্ষান্ধ লোকভূ, কন্দ্র, আঠ। এবং রস প্রান্থেনি দ্বীর। জন্ম হইতে, ত্রু, মন্ধ, শোম এবং শোনিত প্রয়োজনীয়।

পার্থিব বস্তব্রথ স্বর্ণ-রোগ্য হীরকাদি, মুক্তা, মনছাল এবং শরাদি অন্যোজনীয় :

नानगरकीय छ । विश्वान।

কাল সম্বন্ধে প্রাক্তিবার্যু, নির্কাশ, রৌজে, ছারা, জ্যোৎস্না, অন্ধরার, লাভ, উষ্ণ, বর্ধা, অংহারাত্র, পক্ষ, নাম, ঋতু, জ্মন, এবং সম্বন্ধর ইহার। স্মভাবভই বায়ু িত প্রভৃতির সঞ্চয়ের, প্রাকোপের, প্রশাসের প্রবং প্রভিকারের কারন ; ভজ্জনা এই সক্ষপ্র প্রান্ধেনীয় জ্ঞানিতে হইবে।

কাল ও ঋতৃবিজ্ঞান।

কালই পরস্কু। স্থ্য গতি বিশেষের দ্বারা সেই কালের সংবৎসররূপ দেহকে, অকি-নিমেষ, কাষ্ঠা, কলা, মুহুর্ত্ত, অংহারাত্ত, পাক, মাস,
ঋতু, অয়ন, সংবৎসর এবং যুগ ; এই সীকল অংশে বিভক্ত করিয়া থাকেন।
একটী লঘু অকরের উচ্চারন (২) করিতে বৈ সক্ষরের আবশ্যক হয়, ভাহাকে
অকি নিমেষ বলে। পঞ্চদা অকি-নিশেষে এক কাষ্ঠা বলী যায়।
ত্তিংশাৎ কাষ্ঠাতে এক কলা। বি০শতি কলাতে এক মুহুর্ত্ত। ত্তিংশাৎ

⁽ ১°) এইরূপ মূলে আছে।

⁽ २) लघू-मक्तत्र यथा "क 🙃

मूह्द विक कि बाह्य । शक्षमण कि होता विक शक्ष । शक्ष इहे क्षकात । स्था । एक विर क्ष । इहे शक्ष विक मांग । प्राम्न मार्ग वकयरमत । प्राम्न मारमत इहे इहे मामरक वक वक अबु देना यात्र । अबूत मर्था ह्य । माप व का ज्ञुनमाम,-मिनित अबू ; रिष्य व दिमाथमाम यमख म्यू , रिष्ठा के व का वा क्माम, वीच अबू ; क्षा का व ज्ञास मांग, वर्षा अबू, व्याचिन उ का जिल्माम, नंतर अबू ; व्याव व ज्ञास मांग, वर्षा अबू, व्याचिन उ का जिल्माम, नंतर अबू ; व्याव व व्याप मांग, वर्षा स्व क्ष अबू ; वित्रा कि विक का हि । भी क, छिन्न वितर वत्र चा है, अब् मकरन त वक्ष का निर्देश है हिता ।

कान, हस्स वरः व्यं। उद्देश विख्ळ इहेडी इहेडी काडान उर्धानन कर्रन यथा। मिल्लीयन वरः उठताडान। वर्धा, भर्र वदः रम्छ वह अञ्चल मिल्लीयन वरः उठताडान। वर्धा, भर्र वदः रम्छ वह अञ्चल मिल्लीयन वरः वहे कारण हस्स उठाला हर्षा उठाला हर्षा विश्व हर्षा, वराहन काल, नवन वरः वर्षा वर्षा

ছন্দ্র পৃথিবীকে আজ এবং ভূষা ভাছাতে শুক্ষ করেন। বায়ু ঐ উভয়কে আশ্রের করিয়া প্রানিগুণকে পালন করিয়া পাকেন।

কোন২ পণ্ডিত কছেন, যে ছই অয়নে এক সংবংসর পাচ বংসরে এক যুগ সংখ্যা হইয়া থাকে। সেই নিমেবাদি যুগ্পষ্ঠ কাল চল্চের সম পরিবর্তিত হর বলিয়া কালচক্র নামে কথিত হয়।

আয়ুর্কেদমত, বর্ষা, শরং, ছেম্নু, বসন্ত, গ্রীম এবং প্রার্টি; এই
বড়য়ডু দোবের স্থান্ধে দক্ষরের, প্রকোপের এবং প্রশাসের কারণ হয়। এই
বড়য়ডু ভাত্র মাস অব্ধি ইই ছুই সাস ভোগ ক্ষরির। থাকে। ভাতর এবং
আখিন বর্ষায়ভুর ভোগা, কার্তিক এবং অগুহারণ শবংয়ভুর ভোগা
পেষি এবং মাঘ হেমন্তমভূর ভোগা, ফার্রণ এবং চিত্র বসন্তমভূর ভোগা
বৈশাধ এবং ভৈষ্ঠ গ্রীম মতুর ভোগা এবং আবাত ও প্রার্ণ প্রার্টি মতুর
ভাগা।

ছা ঋতুর মধ্যে বর্ষাকালে শুব্ধি সমূহ নূতন উৎপত্ন হয়, সহজ্যে শুল্পারীর্যা (অর্থাৎ অপপ সার বিশিষ্ট) সলিল ক্লেদ্মুক্ত এবং পৃথিবী মল পূর্ণ হয়। প্রবিধানে আকাশ মণ্ডল মেঘারত ও ভূমি জালে আর্ফা হইরা প্রাকে এবং প্রাণি নিকরের দেহও আর্ফা হয়। আর্ফা দেহে লীতল ব মু সংলগ্নে অগ্নিমান্দা জালো; ভাছাতে নূতন অপপ বীর্ষা গুম্বাধি শুক্তণ করিলে কিম্বা অপরিকার সলিল পান করিলে, বিদাহ অঞ্চীর্ণ হল অর্থাৎ পরিপাক কালে অল্পার বৃদ্ধি ইরা পাকে। উঠে। সেই বিদাহ অঞ্চীর্ণ জ্বা এই ব্যালে পিজের সঞ্চাত্র হর্মা পাকে।

শরৎ ঋতুতে শাকাশ্যওল মেখগীন হইলে এবং কর্দন সমস্ত শুক্ষ ছইলে দেই সঞ্চিত পিত্ত পুর্ব।বিবন ছারা সকল দেহে ব্যাপ্ত হইয়া পিওজ রে গ উৎপাদন করে।

হেমন্ত ঋতুতে সেই সমন্ত এবলি কাল গোঁণ জানা নির্পক্ষ এক সলবান চইলা থাকে, স্লিল্ড নির্মাল হয়, সূত্র ব কিরণ মানদা হয়, সহজেই হিন্ন এবং শীলেল বালু কানুক তেপিগলো দেহত জাউভূচ হইলা থাকে। হেমন্ত ঋতুতে পুর্বোজ নিয় এবং গুক্রাক এবলি ভাগন এবং জাল পান করিলে আনাজ্ঞান হল অর্থাহ গুক্রাক জনা সমাব্যালণে পরিপাক হয় না। দহজেই সেই স্মিন্ত, শীভদ, গুক্রাক ও শিচ্ছিল ভাগি এবং জাল ঘারা হেমন্ত ঋতুতে শারীরে শ্লেম্যার স্থার হইলা থাকে।

ৰসন্ত আছে। নিক রর কংশবর অংশ জালীত থাকে। স্থাকিরন ছারা ছেমন্ত ঋতুর সঞ্জিত শেখা সমস্ত দেছে বংগু হইছে শেখাজনা বাাধি সকল উৎপন্ন হয়।

ত্রী আ ঋতুতে সেই সমস্ভ ওয়ধি নিরস, কক্ষ ও দ্যু এবং জলত লগু হয় এবং জ্যাকিরনে প্রাণি সমূহের শরীরও শুক্ষ প্রায় হইয়া থাকে, সহজেই এরপ এয়ধি তক্ষ ও জ্বাপালী করিশে নিঃস্কৃত্য এবং লগুতা জান্য প্রাণিনিকরের দেহে বায়ুর সঞ্চয় হয়।

প্রারট শতুতে ভূমি জলে আর্জ হইলে এবং প্রানিনিকরের কলেবরণ আর্জ হইলে দেহস্থ গ্রীম গাড়ব সঞ্চিত বায়ু বাহিজে দীতণ বায়ুব এবং বর্ষার প্রভাবে প্রানিনসূহির পরীরের বাণ্ড হইরা খাকে, ভাহাতে বাতিক জন্য ব্যাধি স্কুল উৎপাদিত হয়। সকল প্রকার দোবের (অর্থাৎ বাঃ শিত ও ককের) সঞ্চয় এবং প্রকোপের হেতুবলা হইল।

বর্ষা, হেমন্ত এবং গ্রীত্ম গড়ুতে যে সমস্ত দোষ সঞ্চিত হইনা থাকে সেই সমন্ত সঞ্চিত দোষের — এবং শারৎ বসন্ত এবং প্রার্ট ঋতুতে সে সমস্ত দোষ কুপিত হয় সেই সমন্ত কুপিত দোষের প্রতিকার করা বিধেন। শাংক প্রতে গৈতিক জান্তা বসন্ত শাতুতে শোলা জান্তা এবং প্রার্টি শাতুতে বাতিক জানা ব্যাধি সকলের প্রতিকার করিবে।

দিবারাত্রির মধ্যে ষড়ঋতুর ভোগ বিজ্ঞান।

প্রাভঃকালে বসভেব লক্ষণ, মধ্যাহ্যকালে আছের বক্ষণ, অপরাহ্য প্রার্টের লক্ষণ, সন্ধানলালে ব্রার লক্ষণ, অন্ধরাত্তে শরভের লক্ষণ এবং শেষগাত্তে হেমন্ডের লক্ষণ জানি ত হইবে। সন্থলেরের সম দিবারাজি মধ্যেও এইরাপে বড়াইড়া লক্ষণ দেখা গিরা থাকে, এবং সেই সেম্বে বাত পিত এবং কফের সঞ্চয় প্রাকেশে এবং উপশমহয়।

ষভ্ঋতুর স্বভাব বিজ্ঞ:ন।

হেমন্ত ঋতুতে, — উত্তর দিক হই তে শীতল ব'য়ু প্ৰাহিত ছইরা থাকে।
সকল দিক পুলি ও ধূদে বাগিও হয়, রবি হিমকণাতে সমাভ্য হন, এবং জলাল লয় সমূহ হিমে আরেত ছইয়া থাকে। কাক, গণ্ডার, মহিষ, মেষ এবং হতি আ'দি বলবান হইয়া উঠে। রোধা শিয়জু এবং পুরাগরক্ষসকল পুস্পদারা সুশোভিত ছয়।

শিশির ঋতুতে অতিশব শীত হর, বভিন্ন ক্তিত সকল দিক আফুলিভ হইছে থাকে এবং হেমন্তকালের লক্ষ্ণ সকল ও এ ঋতুত্ত দেখা বার।

বসন্ত ঋতুতে, দিক্ সকল নির্মাণ হয়। পলাশ পদ্ম, বকুল, আ এ এবং আশে কি দি প্রাফটিত হয়, জমর এবং কোকিলাদি পক্ষীগণ নিজরবে গাম করিতে থাকে। চারিদিক স্থোভিত হইরা উ.১ দ কৃণ, হইতে ব য়ু প্রবাহিত হয় এবং জলাশয়াদির ও পে,তা সম্পাদিত হইরা থাকে। *.

প্রী অ্পাতৃতে, — দিবাকরের কিরণ বিশেষ তীক্ষ্ণ হয় এবং নৈশ্বত কোন হইতে অন্ত্র্মজনক বায়ু প্রবাহিত হইতে থাকে । তুনি উভগ্রা, নদ নদীতে অপাজন, দিক সমন্ত প্রজ্ঞানত সম, মৃগ সমূহ পিপানিত, তুনাত লভানি শুক এবং সমূহ প্রশুনা হইয়া পড়ে।

প্রার্ট্ঋতুতে, —পাশ্চম দিকত বায়ুদারা মেঘ সভিত হইনা আকাশু-মণ্ডলকে আছেন করিয়া থাকে এবং ভড়িং ও তুমুল গজ্জন সহকারে । বারি বর্ষণ করে। এই কড়ুতে শাগ্রণ কোষল শলো এবং কদন্ব, কেলি-কদন্ব, কুটজা, শাল্ এবং কেত্নী আদি বৃক্ষদারা কিভি বিশেষ শোভানিতা হয়।

বর্ষা ঋতুতে, — নদী সকল স্থিতি গরিশুলা ছইয়া থাকে, ভারছ রক্ষ্য প্রতিত হয়। সরোবরাদি প্রাকৃত্য কুমুদ ও নীলপায়।দিতে শোভিত ছয়। ভূমির উপরিস্থাগ স্থালে প্রিপুণ হওয়াতে উচ্চ এবং নিম ভূমির নিদর্শনি রহিত ছল্মা পড়ে। কিভি বতবিধ শাসাযুক্তা হয়। মেঘ সমূহ অংশ গজ্জনি করিয়া বর্ষণ শরিতে থাকে। দিবাকর প্রার আছেয় হইয়া থাকেন।

শরৎঋতুতে দিবাকরের কিরন্প্রেণর হৈইয়া থাকে, শ্বেতবর্গ মেখ জনা আকাশমণ্ডল প্রায় নির্মাণ দেখা যায়। সরোবরে পদা প্রেফাটিত হয় এবং ছংসগন ভাহাতে ক্রীভাকরিতে শাকে। ভূমি'ভঙ্কা হয় এবং ভাহার স্পর্যক্তি ছাতিম, বাঁধুলি, কেশে, আসন প্রভৃতি রুক্ত উৎপন্ন হয়।

প্রত্যেক ঋতুতে যে সমুহ লক্ষ্য ক্ষা পাকে, কোন করুতে সেই সমুদায় লক্ষ্য অধিকত্তর হইলে কিয়া বিপরীত হইলে অথবা কোনরপে ভাহার অন্য রূপ হইলে, প্রানিদিশের দেহে বাত, পিত এবং শ্লেষা কুপিত হয়। একারণ দেহে বাত, পিও এবং শ্লেষা থিকত হইবার অত্যেই তাহার উপশম করা বিধেয়। বসন্ত ঋতুক্রে শোন্তার শান্তি, শ্রহ ঋতুতে পিতের শান্তি এবং বর্ষাঋতুতে বায়ুর শান্তি করা কর্ত্ব্য।

বায়ু বিজ্ঞীন।

পুর্কদিক হইতে ব'য় প্রবাহিত হইরা থাকে, তীহা মধুর এবং লবণরসবিশ্বিতঃ ক্রিছ ভার, অল-পিতজনক এবং রক্তপিতবর্ত্তনকর। বিশেষ্তঃ

বাহার। ক্ষতরোগ, বিষরোগ কিষা ত্রণরোগবিশিষ্ট কিষা যাহাদিগের দেহ শ্লেমাবিশিষ্ট ; পুর্বাদিকছ বায়ুছার। ভাহাদিগের রেঃগ র্ল্লি পাইয়া থাকে এবং ত্রণের পুর্বাদি বাড়িয়া উ.১। যাছারা বায়ুরে,গবিশিষ্ট, প্রান্ত কিষা যাহাদিগের দেহে কন্দের অংশ শুক্ষ হইয়া যায়, ভাহাদিগের পক্ষে পুর্বাদিকত্ব বায়ু বিশেষ উপকারী।

দক্ষিণদিক হইতে যে ৰায়ু প্ৰাবৃত্তিত হুইয়া থাকে, ভাষা, মধুর এবং ক্ষায় রসবিশিষ্ট, লঘু, নেজের দীপ্তিকারী ও বলবজনকারী। দক্ষিণদিগের ৰায়ুতে অস্ত্রিত অখায় না এবং বায়ুবও প্রকোপ উত্তব হয় না।

প্রতিমাদিক ছইতে যে বায়ু প্রবাহিত ছইরা থাকে, তাহা বিশদ, কক্ষ, কঠিন, থরজফর্শ, তীক্ষ্ণ, কফ এবং মেদ শোষণকারী এবং দেহের চিক্রণতা এবং বলক্ষ্যকারী। ইহার ছারা দেহ শুষ্ক হয় এবং জীবন নটত ছইরা থাকে।

উত্তরদিক্ ছইতে যে বায়ু প্রাবাহিত ছইয়া থাকে, তাহা স্মিয়, মৃত্ন, মধুর
ক্ষায় রসবিশিপ্ত এবং শীতল। এই বায়ুয়ারা কোন দেহেয়র (ব্যর্থারা
বায়ু শিত ত ককের) প্রকোপ হয় না। বয়ং বল য়িল হয়, বিস্তু দেহে
ক্রেদ জামো। কীন এবং ক্ষয়রোগ ত বিষরোগবিশিত জনগণের প্রতি

আহারীয় দ্রব্যের পথ্যা-পথ্য বিজ্ঞান।

धाना।

রজবর্ণ ধান্য, বর্ত্তিক (বার্ট ধার্ম) গজক, বুরুল, পাতু, পীত, প্রমোদ, কাল, অশন, পুতা, কর্মদ, শাহ্রনাছত, সুগন্ধ, কল্মা, নীবার (উড়ি) ও উল্লালক; এই সমত্ত প্রকার ধান্য শামাবাস, গোপুম ও বব প্রভৃতি স্থানিত: সক্লের পাকেই প্রানিবে।

মাংস

সকল প্রশার মুগ্ন, কালসান, ক্রকর, (ধৈরী,) কপোত, জলাব (ছাতরা তিভির, কপিঞ্জল, বত্তী ও জাবতী, এই সকল পশু এবং গান্দীদিগের মাংস সামান্তঃ সকলের পক্ষেই গধ্য জানিবে।

कनारे।

হুগা, বনমুগা, ছোলা মন্থা, করেবনু, আরহর ও নতীন (তেওড়া) এই সকল কলাই সামন্থতঃ পথা জোনিবে।

#14 at 1

চিল্লি, বেচেনা, অ্যনি, জাবস্তী। নটেও পুৰস্কুটী। এই সকল শাক সামা-নাডঃ প্ৰা

হুগ, য়ভ, তৈরা, দুট্ন ও জামশকী; নাধানাংঃ প্থা থানিবে। ব্সাস্থ্য আছেরণ, ক রুশুন্য ছানে শালন, উ.স্কালক পান রাজিনিজা এবং ব্যারাম হিভক্র জানিবে।

কোন কোন এটা কোন কোন দ্রোর সহিত

ভে'জন নি'যদ।

বল্লীকল (লভাগাছের ফল কর্থাৎ লাউ চুমুড়া প্রাভৃত্তি) করক (কলবিশেষ) অল ফল (চান্তা ক্ষাড়া প্রভৃতি) লবন, ডুগথ কলাই, পিনাক (তিল কিম্বা সবিয়া বাটা) ভৈলে ভক্তি ভি শিষ্টক, শুদ্ধ-শাক, গাছ কিম্বা মেষমাংস্ট, মদ্য, জামকল, চিংড়ীমংস্টা, গোধামাংস্ত বরাহ্মাংস এই সকল জবোর মধ্যে কোন জবা হুগের সহিত ভে'জন করিবেনা।

ভূষ কিন্তু মধুর সহিত রোহনী (কটকলশাক) কিন্তা জাতু (হিসুশাক ভেজুন কুরিবে না। কাঞ্জী, কিমা, জুরার সহিত বৃদ্ধকার ম'ংস (বাসহংসের মাংস) লিভ্পিনী কিমা মরীচের সহিত কাক্মাচী (গুড়কামাই) কিমা নাডীভঙ্গশাক, কঞ্ ট-মাংস এবং দ্যি একত্রে ভোজন ভরিবে ন।।

মধূ পান করিয়া তৎকণে উক্ত জল পান করিবে না। পিতের সহিত মাংস পাক-কবিয়া,ভোজন করিবে না। মদ্যা, তিল-মিশ্রিত পিউক ৬ পায়স ভোজন কবিবে না।

ুকাঞ্জির সহিও তিলের পিউক, মংস্যের সহিত গুড় চিনি প্রভৃতি ইক্ষ্-বিশার, গুড়ের সহিত কাক্ষাচী, গণ্ড সহিত শ্লক এবং গুড় কিছা সহর সহিত বরাছ মাংস ভোজন করিবে না।

ভূষের সহিত মূলক আন্তি, জাত, গুকরমাণস, গোসাগি কোন প্রকার
মংস্য বিশেষত চি ভূমিংস্য এব ভূষা দ্বি কিছা ভালফলের স্থিত কালী
ফল ভোজন করিবেনা

ভ্ৰা, দ্ধা, সাসকলভাৱে দাউল মধু কিমা খুতের সহিত লকুচকল (গাদার) ভোজান কবিবে মা

যে সকল এবং ৯% পছ যে গোল ভোজন করিতে নিবিদ্ধ সেই সকল দ্রব্য ভূগ্নপান করিয়া ভদ্তে গান-ভোজন করিবে না।

কপোত মাংস সরিবাব তৈলে ভালিয়া ভে:জন কবিবে না।

কপিঞ্জল, মহ্র ছাত্রা, তিজির এবং গোসাপ; এই সকলের মাত্র এরওকাতের অভিতে পাক কিছা এরওতিলে ভাজিলা ভোজন কবিবে না

যৃত কিমা মন্ত্রণজ কাঁদাব গাজে রাখিলা পান করিবে না। উঞ্চলবোর সহিত গুদকামাই পাক করিয়া ভে'জন করিবে না। তিলবাটার সহিত কল্মীশাক পাক করিয়া ভোজন করিবে না।

নারিকেশ এবং বালহংদেব মাংস একত্তে পূক্তের চরিবিকে ভাজিমা ভৌজন করিবে নাঃ

কুক টুমাংস প্রের সিচক বিধিয়া অলাবের শ্মিতে পাক করিয়া ভোজন করিবে না।

মধু এবং জল কিষা মধু এবং খৃত ভুলাপরিমাণে পান করিবে না।

হুই প্রকার স্বেহ জকা, মধু ও কোন প্রকার সহ জ্বা। এবং জল ও কোন

প্রকার সেহজবা একত পান শুরিবে না।

क्याखन-मर्भन।

্মধু কিমা কোন প্রকার স্নেছ পান করিয়া তথপরক্রেই বর্ণার করিবে না।

भधु ব এবং অলবস এক জিত হইলে রুসে ও ধী প্রে বিনন্দ হয়।

মগ্নর এবং লব।রম ; ও মগ্নর এবং কট্টরম এক বিচ ২ইলে রনে। বিবিধ্য এবং পরিপাকে বিক্তম হয়।

মধুব এবং ভিক্তর্ম একত্রিত হইলে ,রসে এবং প্রিপাকে বিক্র হয়।

মপ্রর এব কর্মরসঃ এব জল ৬ নব্দরস একতিত হইলে রসে বিক্ষাহয়।

আন এবং কটুরস একজিত ছইলো, রসে এবং পরিপাতেক বিস্কাত্র।
আনতিক্ত এবং আন্তাহধায় একজিত ছইলোরসে বীচেশ এবং পরিপাতেক বিকাম হয়।

লবন এবং কটু-রম পরিপাকে বিকল হয়।

লবন এবং ভিক্ত-রুল । এবং লবন ওক্ষার রুল কলে স্বীপে। এবং প্রিপাকে বিক্তম হয় ।

কটু ও তিক্ত-রুম।—বসে এবং বীর্বের বিকল্প হয় ।

কটু এবং ক্ষায়-রস এবং তিক্ত ও ক্যায়-রসে বিক্ত ক্ষা। জানিবে।

পুর্বোক্ত যে সকল নিষিদ্ধ এবং বিশ্বন্ধ পানাধারের কথা বলং হৈইয়াছে ভাষতে অভ্যাস থাকিলে, পরিমাণ অপ্প হইলে • " হিন্ন দ্বীপে থাকিলে, তক্তন বন্ধত্ব হইলে, দেহ স্থিন্ধ থাকিলে কিছা ব্যাধান্দাল অথবা বলিদ্ধ হইলে বিশ্বন্ধ পানাহার ক্লেণ্ডানক হব না।

ব্যায়ান গুণ।

• গুড়াদি ভোজন ছারা বলবান ব্যক্তির ব্যায়াম বিধেয় বিশেষতঃ বন্দ্র প্রতিক্র ব্যায়াম বিধেয় হিছেবোধ হয়।

গ্রহার সদাকাল ব্যায়াম পথা। বিজ্ঞ কুন্দিতে; স্পাটে, প্রীবাতে ধর্ম

ব্যং জুড়িশ্র খাস হইলে ব্যায়াম বর্তব্য নহে। ক্র্ম করিলে শম ব্যেশ্

কৈশসহা, বাত, পিত এবং ককের সমতা, অগ্নির।ক এবং বিক্সা ভোজন করিলেও সহজে পরিপাক হয়, রক্তপিত রোগী, কুখাতুর বাজি, ভুক্তবান মাজি, জ্বীলোক এবং ক্ষীণ কাজি; ইহাদিণের ব্যায়াম বর্ত্বা নহি।

প্রভাঠে অগ্নাদি সেবন গুণ ।

প্রভাতে অমি সেবন করিলে,—বায়ু শুন্তিত বক্ল, শীত এবং কলা নক হয়; এবং শাম ও বক্তপিন্তের রুজি হুইনা থাকে। প্রম সেবন করিলে,— বায়ু এবং পিত্তির রুজ হয়। হিম সেবন করিলে; কফ এবং বায়ুর রুজি হয়। শিশির সেবন করিলে,—শীত্স, গাঙুপুন্তি, কফ এবং বায়ুর রুজি হন এবং কোয়াস। সেবন করিলে,—শতান্ত কফ এবং কফ ও পিত্তের রুজি হয়।

टेज्नाजाम खन।

ভিল মর্দন করিলে, শরীর আজি হয়, কফ এবং ব য়ু নই হইরা থাকে এবং ধাতুপুটি, তেজা ও বর্ণ প্রান্ম হয়। পদান্ত, জা,-নিজাকর, চক্ষুর। হিতকর অথচ পাদরোগম কিন্তু কলরোগবিশিষ্ট ব্যক্তির পালে হিতকর নহে। তৈল মর্দন করিয়। আন করিলে, বল রিন্ধি হয়, এবং লোম য়পে এবং বিরম্পুথে তৈল প্রবিষ্ট হইলে নাড়ী ভূপ্ত হয়। তৈল হায়। মন্তক আজি করিয়। রাখিলে,-বির শুণ, খাল ধরা, মাংসলোসিত এবং টাকরোগা উৎপার হয় না; কেশ,-খন, শক্ত এবং য়ফেল্ব হইল। থাকে এবং ইলিনেরাগা বিশা প্রমা ও মুখ জীঘুক্ত হয়। কলে তৈল পুরন করিলে,-কর্বরাগা বিশার হওন নই হয়।

न्यानक्ष्म ।

সাত্ত ইলে, — শরীর শীতিল এবং পবিত্র হয়, শ্রাম এবং মলা দুর ক বল রাম হইরা থাকে; ক্য ব্যক্তির ও তেজ, উৎপন্ন হয়। উষ্ণজনে স্থান করিলে, — শরীরে সেক এবং মলা দুর, সম্ভব্যের এবং চফুর হিত্সাধন এব বলাধান হয়। উষ্ণজনৈ মধ্য হ তুষাইয়া স্থান করিলে, — তৃষ্ণা তালু ও গুট- ' ধশাষ নিবারিত হয় এবং কণু, শিলোয়োগ এবং পিতজনা রোগ ন্ত ছইয়া থাকে। বচ বালা এবং নিম্ছাল দিয়া জল উক্ত করিয়া আন করিলে-শ্লেমানই এবং নৈত্তর জ্যোতি হয়। ক্ষতিল দিয়া জল উক্ত করিয়া আন করিলে, – চক্ষু এবং কেশের উপকারী এবং বাগ্লু উপশ্মিত ছইয়া থাকে। অস্তাত বাজীর শরীব সর্বদা উষ্ণ থাকে, আন করিলে শ্লীর স্কর এবং অগ্লি দীপন ছইয়া থাকে।

অর্দ্ধিতরোগী, নেত্ররোগী, মুখরোগী, বর্ণরোগী অভিপিনাসরোগী এবং অঙ্গীর্ণরোগী; ইহাদিণের পক্ষে স্থান নিষিক জানিবে।

গাত্রমার্জন।

জীজ্ফত।, ভুৰ্গন্ধ, গুৰুতা, মনা, কণ্ডু এবং স্মান্ধ হয়।

वख्यांत्र खन ।

নির্মাণ বজা ধারণ করিলে, —কাভিযুক্ত, যশসী শংক্ষী নই এবং হয়। উৎপন্ন হয়।

मुनिक्षिप्रया (लशन छन्।

প্রী হিযুক্ত, ধাতুপ্তি এবং স্বর্জ, ত্র্গজ্জ, পাপ এবং প্রান নই হয়।
চন্দ্র গুলা।

শীতদ এবং তিক্ত শরীরের উত্তাপ ও রক্তপিখন ই হাা !

অগ্রন্থ চন্দ্রন গুণ।

উষ্ণ, ভিক্ত, বটু, ত্রন, কফ এবং বায়ু নষ্ঠ হয়।

রক্তেচন্দ্রন গ্রন।

রক্তপিত্তম, বলর্জিকর এবং চল্চের হিতকর

क्यक्य खन।

শরীরের বিবর্গা, কণ্ণু এবং কফন্ন।

মুগনাভি গুণ,।

হুর্গন্ধ, রক্তপিত তবং জ্বস ও উতাবী দ্যী।

কক্রী গুণ।

मानाहत, भीवन, विकारम् अत्र मूस्तारात विकंत ।

(कारिया खन।

ক্ষায়, মধুর এবং দাহ ও রক্তপিতনাশক।

অস্কশর শুণ।

ख्यमायक, खिक्क এवर मृश्विनाभक।

দিবানিদ্রা।

শীতল এবং অজীর রোগাদির মূল। তৃষ্ণাযুক্ত শূলী, হিলারোগী, অজ্ঞার্পরোগী এবং অতিসারী; এই সকল ব্যক্তির প্রতি দিবানিজা হিতকর জানিতে হইবে।

র।তি জাগরণ।

কৃক্ষ এবং নিজাতে বিশ্ব হয়। ক্ষরোগী, মেদরোগী এবং বিষরোগীর প্রক্ষে রাজ জাগারণ হিভকর জানিবে।

रेभथन खन ।

ধাতুকর এবং আপদজনক। অভি দৈখনে, লখাদ, কাস, এবং রুজ্ত্ত্ব। উৎপর হর।

শ্লেষ্মা বিজ্ঞান।

শ্লেষা, - গুক, খেতবর্ণ, বিশ্ব, পিচ্ছিল এবং শীতন। সেই শ্লেষা মধুর-রস্বিশিষ্ট হইলে অবিদাহী এবং লবণু-রস্বিশিষ্ঠ হইলে বিদাহী হয়।

শোণিভ বিজ্ঞান।

শোনিতের স্থান থকং ও প্লীহা। শৌনিত উষ্ণ কিষা শীতদ নছে । প্লিয়ে রগুবর্ন, গুৰু, মাংসগন্ধবিশিক এবং পিতের সম বিদাহী গুণ্বিশিক । হয়।

वात्रु श्राद्यानकत कार्या ७ एवं नि ।

যলিতের সহিত বাগরাম, অতান্ত বাগ্রাম জীসংস্গ, অধান্তম, পতন, ধাবন, প্রপীতন, অভিযাত, লভ্যন, প্লবন, (জিল থাকা) সম্ভ্রণ, রাজি জাগরন, ভার-বহন; গ্রাক্ত, অধ্যারপদি বাহন কিছা পদরজে গমন হটু-ক্যান্ত্য, ভিক্ত কিছা ক্ষত্রারণ; লঘু কিছা লীতল ভেজবিশিক্ত প্রবা, শুক্তশাক, শুক্তমাংল, কোদালক, কোরদূষক লামাধানা, উভিধানা, মুদ্দা, মহুর, অরহর ও কলাই; এই সকল প্রবা ভোজন, অন্তলন, বিশরীত ভেজন। অবিধ ভোজন: এবং বাত, মৃত্র, প্রীয়, শুক্ত, ছদ্দি, হাঁচি, উদ্দার এবং আলি আলি বার্গ প্রাদির বেশ ধারণ; এই সমস্ত কারণ জন। বায়ুর প্রাক্তিন ও ইরাধ কে।

পিত धारमानकत नार्वा ७ सनानि।

क्कांध (भाक, खंद्र, हिसा, खेलांद्र), खंद्रांच्य, देव्युन, खेलांगन किया वर्ष्ट्रे क्का, लदन, खेळू, खंद्र, खंद्रा, खंद्रांचे, खिल देखन, लिनांक, कुलंध, प्रयंत्र मिना इतिहलं भाक, त्यांगांत, अध्या, इतिहलं प्रयंत्रांच्या (ययमाध्या, मिन, त्यांत, मिन्छ, इतिम्थें क्रिंग, खंदां किया त्यांन, इतिम्थें क्रिंग, खंदां किया त्यांन, इतिम्थें क्रिंग, खंद्रांचें किया त्यांन, प्रयंत्र क्रिंग क्रिंग, खंद्रांचें क्रिंग खंद्रांचें क्रिंग क्रेंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रेंग क्रिंग क्

कफ श्राकाशकत कार्या ७ ऋवानि।

দিবানিদ্রা, শ্রমাভাব, অলস, মন্তর-রস, জল স, লবনরস, শীতল, প্রিঞ্চ, গুরু, পিছিল-দ্রবস্থা, হৈমন্তিক ধান্য, যব, মাষ, গোন্তম, তিগণিটেক দিনি, হৃদ্ধ, কুপরা, পাছস, ইক্ষুবিকার, মাংস, ১বসা, মৃণাল, কেশুর, গাঁণীকল, মধুর-রস বিশিষ্ট অল বু, এবং কুল্লাও প্রস্তৃতি লভাকল; সমাক ভোজন স্থাবা অভান্ত ভোজনা; এই সমূহের মারা ককেব প্লাক্ষেণ্য হটয়। পারেন। বিশেষ্য শীভল ক্রির করিলে, কিম্বা শীত অধ্বা বসন্ত গড়ত এবা প্রাক্তি

প্রাভঃকালে, সায়িংকালে ও পাছারের পরক্ষনে কক্ষের প্রাক্তি।

তেষধ সংগ্রহার্থ ভূমি বিজ্ঞান।

বে ভূমি শর্করা, প্রশুর বৈলীক, শাণান, শাধূনিক দেবায়তন ও বালুকাদির দারা দোবযুক্ত নহে এবং ছিজ বিশিষ্ঠ, লোনা ও ভদুর নহে অপচ ক্রিয় রক্ষতাদির শক্ষুর বিশিষ্ঠ, কোষল, ছির, সমতল এবং কৃষ্ণ বিস্থা গৌরমর্প বিশিষ্ঠ, এমত ভূমি হইতে উষধ গ্রেছন করা বিধেয়।

ওষধ সংগ্রহের লক্ষণ।

দোষ হীন ভূমিতে উষধ উৎপত ২ইলেও রুমি, বিষ, শস্ত্র স্থাত।থ বায়ু, অগ্নিত জাদত্তেত আদির ছারা অনুশৃষ্ত, স্বাভাবিক বয় যুক্ত পুন্ত সুন্ত অব্যাতৃ মূল বিশিষ্ট উষধ এহেণ করা বিধেয়।

सः (भाधनीयर्श विकास ।

भवनाकना, कुष्ठित, (५४) छ, ७ किना छ. प्राणाः, त्याणाः इकी, मर्थल विष्णाः, विश्वलाने, वह छ, छ। कु.स. १०१६ नतुष्ण, व्याप्ताः भवन । विष्णां वह छ, छ। कु.स. १०१६ नतुष्ण, व्याप्ताः भवन । वह विष्णां क्षा वह वह द्वा विष्णां क्षा वह । वह विष्णां वह वह वह विष्णां वह वह वह विष्णां वह वह वह विष्णां वह विष्णां वह वह विष्णां विष्णां वह विष्णां वह विष्णां वह विष्णां वह विष्णां वह विष्णां विष्णां वह विषणां वह विष्णां वह विष्णां वह विषणां वह विषणां वह विषणां वह विष्णां वह विषणां वि

তেউড়ে, শ্যামণতা, দতী, মুনালীলড়া, নাকল, নাচনাল্য নেইশ্ন্ত, বেষণ্ডা, মুনালীলড়া, নাকল, নালাল্য নেইশ্ন্ত, বেষণ্ডান, মনসালিজ, অনুকারীলালা, চিত্রক, আপাং, কুনা, সামে লোধ, কমলাগুড়ি, পটোলনুল, পাইলে, গুরুড, ছাতিম, আর্ক বেং নফট্রী এই সফলের দ্বারা শ্রীরের আধোভাগ সংশোধিক হয়। ইহাদিগের মধ্যে তেউজ় হইতে কাশ পর্যান্ত, সমূহের মূল এবং লোধ হইতে পাইল পর্যান্ত অব্যের অব্যার অক, কমলাগুড়ি চুন, গুরাক হইতে এরগুপ্রান্ত অব্যান্ত কল, করঞ্জ এবং সেঁ দালের পত্র, এবং আব্লিন্ড রক্লাদির ক্রীর লওমা ব্যবস্থেন।

কোশাভকী, সপ্তৰা শশ্বিনী, দেবগালী ও করলা ;]ইতাদিগোর দ্বারা উর্ক্ত এবং অধ উচ্চের ভাগা সংশোৱিত হয়। ইতাদিগোর রস গ্রহণ ব্যৱস্থয়।

िश्लिको, विख्ल, खालान, गिल्ना, (भुक्त ने नित्री, मांत्र, कत्वीत, विद्यो जलवाक्रिका, खालान वह, नक्रवेशों के के के, कर्क एन्ड जाकम त्रञ्च, खाउँहर, स्थी, डावीम, उमाल, ताक्षन, वाक्षेत्र प्रति, हेन्द्री, देन्द्री, क्रवान क

अ०भावनी जना कथन।

गाउ-मर्भवनी पर्य।

न्दमान, कूके, हितिसा, वकन, स्यम कि, (च्राट्टिस्स), शिहरवर्णमा, किन किनी, शिन्याहका, अवाणका, मलकी, शाक्स, ज्ञानिस ही व्याप्त, अवन्त, शाक्स, अवन्त, शाक्स, अवन्त, शाक्स, अवन्त, शाक्स, मान्यूमी, श्रूमवी, श्राचाह-स्वन, शाक्स शिक्षनी, काक्समहक्त, वाममहाणि, काशाम, विष्टू कि, मालिक्षा-माक, यव, काल, क्रम्थ ज्यापि अवश्विमादि ग्राचादि ग्राचादि ग्राचादि श्राचादि श्राच श्राचादि श्राच श्राच

शिख-मः भमनी नर्ग।

ह्मिन, त्रक्षक्रमन, लाला, रश्वामून, मिक्किन, कार्त्वानी, जूर्यक्राध, अस्मी, श्विम्न, रिवानी, प्रातीक्ष, व्

ভিক্ত-রস গুণ।

ভিজ্ঞারস, - চ্ছেদনকর, কৃচিকর, দাখিকর, শোধনকর; কণ্ড, কোচ, ভৃষ্ণা, মৃত্ত্বি এবং আরের শাভিকর; শুন্য-শোনকর এবং বিষ্ঠা, মৃত্ত, ক্লেদ, মেদ, বসা ও পুরের শোধনকর

এই ভিক্তরস শৃত্যুর্থ দেবন করিলে শরীরের স্পন্দরিছিত, মনাগুল্ড, ছন্তু পদাদির আক্ষেপ, শিরশূন, ত্রম, জোদ, ভেদ, ছেদ ও মুখের বৈরস্য উৎপ্রহয়।

कशांग्र-तम छन ।

ক্ষাররস, নমল, মূত্র এবং রক্তাদি ক্ষাক্র, প্রশেকর, পূরণকর, ভ্রেকর-শোধনকর, লেখনকর, শোধনকর, পীড়নকর ও ক্লেদশোবনকর। এই ক্ষায়-রস অভ্যর্থ সেবন, হৃৎপীড়া, মুখলোষ, উদ্বাধ্যান, বাক্রোধ, মনাতিন্ত, অলম্ফুরণ, কর্ণে চুম চুম লক লবন এবং আক্ষেপ্ ও আকুঞ্ন প্রভৃতি রোগ উৎপন্ন হয়।

यफ्-वर्श विकान।

मधुत-दर्भ।

कारकानग्रामिशन, इस इल, रमा, मच्छा, भाविधाना, यादिधाना, यतः भाधूम, मायकलारे, शांभिकल रुख्यं, भागा, शामूक, कर्कादे, खलात्, खत्रमुख्यं कलकत्रम शिर्टनाच्या (खयीत्रविरम्ध) शियाण, शाम्योख, शाखात्रीकल, र्माल-खाका, ध्रद्ध्यं, कोशारे, जान, नादिरकल, रेक्ट्रविकात, शील्टराङ्गा, स्थल-रिट्टमा, खानकूनी, ভृषिक्षाल, शहमा, शाक्युती, मूझालडा, मल्दि ख क्ष्या खानिः अरे मकनरक मामानाङः मधुत्र्वर्शं रुना यहा

अञ्च-वर्ग।

দাভিদ, শামগনী, জামীর, শামড়া, কপিথ, পানিমামগা, বড় কুগ্ বিজ্ঞি, কোপাজ, কৃমি, ল, ডিন্চুদ, বেজকল, মাদার জ্লবেতস, জামীর (বো,ড়ালেরু) দাধ, তজ্ঞ, হারাবিশেষ, সাধারণ জ্লারস; ক্রিট্র, কুল্লেদক শাস্ত্রা, লাবি; এই সকলকে সাম্নীভঃ জ্লাব্র বলা ধাব।

प्रवाखन-मर्भन।

लवन वर्ग।

तिह, भारा माखती, गायुक्त, शक्तिम, याकात, के काद्र ए स्वाहिकांति এই সকলকে मामानाण्ड नवनवर्ग रागा। कहे दर्श।

পিপ্পল্যাদি, স্থানাদি, থিও মধুশিও, রশুন, সুমুখ (খেচ তুণদী, মোরী, কুড়া, দেবদাক, রেণুক, সোমরাজীকল; মুখা, কাঁচড়, মুবাকানা গুগ্গল, সোণাপাত ও গালু আদি, এই সকলকে প্রায় বটুকা বদা ব্য়ে।

जिक-वर्श।

भाद्रदेशिमिनन, अस् हानिर्मन, मिल्हां, विक्रमदीत, इहिताः, माक्रहित्सां, हैक्स्यन, वक् ख्रुक्त, भाक्क्ष्री, मार्थ्यं, व्रश्नी, विक्रमी, विक्रमी, व्रश्नी, व्रश्नी, व्रश्नी, व्रश्नी, व्रश्नी, व्रश्नी, व्रश्नी, व्रश्नी, क्रिक्री, क्रिक्री, क्रिक्री, क्रिक्री, क्रिक्री, क्रिक्री, व्रक्री, व्रक्रिक्रवर्गं क्रस्थां

क्याग्र-दर्भ।

ন্য গোধাদিগণ, অন্ত দিগণ, পিছসু আদিগণ, রোপ্তাদিগণ, তিফলা, আম, বকুল, ভিন্দুক, কতকশাক, শাধানভেদী, পুষ্পাধীন রাক্ষর ফল এবং ধুনাদি; এই দকল গুলি প্রায় ক্যাধ্বর্গ। ্ক ে, কাঞ্নর্ক, জ্ঞীবস্তী, চিল্লা পালক্ষ, প্রযুদ্ধাকাদি এবং উড়িধান্যাদি; এই সকলকে সামান্য ক্ষাধ্বর্গ বলে।

खनविज्योन।

আকাশ হইতে যে জন বর্ষন হয়, ভাহা অমূত তুলা, জীবনীর তৃ,প্তকর, ধারক্র আধাসজনক, শমন্ন এবং ক্লান্তি; তৃষ্ণা, মৃত্যু মৃত্যু ভল্লা, নিজা এবং দাহের শালিকর এবং একান্ত হিতকর জানিবে।

(ভोमजन।

ভেষিজ্ঞল, নাত প্রকার। যথা। কুপের জ্ঞল, নদীরজ্ঞল, সরোবরের জ্ঞল, পুকর্নির জ্ঞল, প্রাক্রবনের জ্ঞল, উদ্ভিদজ্ঞল, এবং ক্ষুত্রকুপেরজ্ঞল। বর্ধান কালে – আন্তরীক্ষ এবং উদ্ভিদজ্ঞল সেবন করাই বিধেয়, ইধা বিশেষ উপকারী জানিবে।

अइ.जि. कलकान ।

বর্ষ ক'লের জ্বল;—গুকুপাক, মধুব এবং সারক; শবংকালের জ্বল,— লঘুপাক; হেমন্তকালের জ্বল,— স্মিন্ধ বলদারক, ধাতুপোশক, এবং গুক্-পাক; শিশির কালের জ্বল,—কফ এবং ব য়ুন্টকর এবং হেমন্তকালাপেকা লঘুপাক; বস্তকালের জ্বল;—ক্যায়, মধুব এবং ক্রক্ষ এবং জ্বী,মকালের জ্বল,—পাচক।

শরংকালে – সমত জাসই নির্মাল হয়, শরংকালে স্কল জালই সেবন করিতে পার। যায়।

হেমন্ত্ৰণালে, – সংবাবর এবং পুছবিনীব জল দেবন করাই বর্ত্বা। বসন্ত এবং এই আকালে, – প্রজ্ঞান ও কুপের জল দেবন করিবে। প্রার্টি-কালে, – কুজ কুপের জল এবং নূতন বৃক্তির জল না হইলে সকল জলই সেবনীয় হইরা খাকে।

বিক্লভজন।

কটি, মুক্ত, বিষ্ঠা, শব কিখা বিষ, দ্বারা হুন্ত অথবা তুন প্রাদির দ্বারা দৃধিত যে নুতন জ্ঞান; তহাতে যে ব্যক্তি অবগাছন করে কিখা দেই জ্ঞান পান করে, তাহার বাহ্নিক এবং আড্রিক বিবিধ প্রাকার রোগোৎপ্রহর।

-- य जन निर्वाल भक्ष, छून । शाम्प्रकामित घारा आफ्त । जारूस । दिनी अ अरे रायु पाता (गिरिड नर्ट अरे रायु जन किया नर्गामित आ चामस्ति निष्ठे, राष्ट्रे जनत्क विकृष्ट जानित इंदि । स्वा जार्मित जार्मित का सामस्ति निष्ठे, राष्ट्रे जनत्क विकृष्ट जार्मित इंदि । स्व जार्मित जार्मित का स्व विक्रिक विक्रिक विक्रिक । स्व विक्रिक वि

क्तिगुक्त-मर्भन।

দর্ব অস্ত্র শ্রন্থ বিশাদ কোন প্রকার আফ দ থাকাই রস দেব, কোনরপ নার থাকাই নার্দ্রের পান করিলে, — পিশাসা, গুকতা, শুল এবং কক-প্রদেক জানিলে বীর্ন্দোষ, এবং অধিক বিল্বে পরিপাক ছইলে কিম্বা ভার হইয়া থাকিলে বিপাক দোষ জানিতে ইইবে। আন্তরিক্জাল – সর্বা প্রকার দ্বির্হিত।

শোধিত জল।

দোষিত জল হইলে ক্ষিতে কিয়া প্রুষ্ঠ কিরনে ট্রনিন্ধকর তপ্ত লৌছ-পিগু মালুকা, কিয়া ইংপিও তাহাতে নিক্ষেপ করিয়া শীতল করিবে, এবং নাগ্রকেশর, চম্পক, উৎপল এবং পাটল প্রুম্প, দির দারা তাহা ক্ষাধ্বাসিত করা বিধেয়।

জলের লঘু গুরু এবং দোঘাদোষ কথন।

থে নদী পশ্চিম বাহিনী ভাছার জাল লঘু বলিয়া সেবা জানিবে। যে নদী পুর্গাণাহিনী ভাছাব জাল গুৰু ব লিয়া সেবন যোগা নছে। যে নদী দক্ষিন বাহিনা ভাছার জাল লঘু কিছা। গুৰু নছে।

যে সমস্ত নদী সহা-পশ্মত হইতে উৎপত্ম হইয়াছে, ভাছাদের জন্ম সেবনে কুঠ রোগ উৎপত্ম হয়। যে সমস্ত নদী বিদ্ধাপাৰ্শত হই,ভ উৎপ্র হইনাছে, ভাছাদের জন সেবনে কুঠ ও পাঙ্রোগ উৎপত্ম হয়।

ষে সকল নদী মলয়-প্রতি ছ্ইতে উৎপত্ন ছ্ইগ্রছে, ভাছাদের জ্ঞাল সেবনে কমি রোগোন্ডব হয়।

্ যে সকল নদা মহেন্দ্র পর্বত ছইতে উৎপন্ন গইরাছে, তাছাদের জ্বল দেবনে শ্লীপদ এবং উদর রোগে দ্রেব হয়।

हिमरान शर्ज इन्हें उप नहीं छेदशज्ञ इन्हें हिंह, छाइन्द्र स्नन स्मर्क कार्यान कार्यान

িনদী বেগৰতী হইলে কিছা জল নিৰ্মাণ হইলে লঘু হইয়া থাকে।
মন্দগামী এবং ভজ্জনা শৈব্ধ স্ঞিত হইয়া দেখিত হইলে জল গুৰু
(৪)

হর। যে নদী মকভূমিতে প্রবাহিত ভাহার জল প্রায় ভিক্ত এবং লব রস্মুক্ত, স্বহক্ষায় ও মধুর রস হইয়া থাকে এবং ব্যুত বলের পক্ষে দিশে উপক্রী।

ভাল প্রহণ করিবার কাল কথন।

স্ক্পেকার ভৌমজল প্রাতে গ্রহণ করাই বিধেয়, যে ভেডু ভংকার আৰু নির্মাণ এবং লীঙল থাকে। নির্মাণ এবং লীডল, জন্মের এই ছইং পরম গুণুজানিবে।

যে জনে দিবারাতে স্থা এবং চ.ক্সব কিবন প্রিচ্ছা, দেই জল কম কিম্ব নের্হোগ্রারী নহে। সেই জলকে বর্ষার জন্ম সম গুন্কারী ব্যাযার।

त्रिकिज खन।

র্থিঃ আল তি দাবের শার্শ তকর, কলপ্রাদ, রসায়ন, মেধাজ্যক রক্ষোচ, লীঙল প্রফুলকর এবং জুর, দাক এবং বিষরোগের লাভিকর জানিব। র্থিবিজল প্রতিক্র পাতে এহন করা বিশেষ।

চক্তকান্ত (প্রানিদ্ধ মান বিশোষ) ছইতে যে জালোৎপান ২৯, দেই জল পিশুল এবং বিমল , এবং মূজ্যি পিন্ত উপ ইইলা দাহ উৎপত্তি ছইলে, বিষ-রোগ, রক্তস্বস্কীর-রোগ, উত্থান বোগা, জন, লান্তি, তমক্ষাদ বমন-রোগ এবং উদ্ধানত রক্তিনিত, এই সকলে শীতল জনই প্রশন্ত। পাশ্ব শ্রিলে, প্রতিশ্যায়ে, বাতবোগে, গলনেশের রোগে, আল্লানে, মৃহ্নোতে এবং নবজ্বর ছইতে সদ্যমূক্ত ইইলে, হিক্লা-রোগে অথবা স্বেছ জব্য পান করিলে শীতন জন পরিভাগি করা বিধেল।

নদীর জল, - ব য়ুবর্জনকর, ফক্ষ, অগ্নিব দীপ্তিকর, সমু এবং লেখন-কর:
নদীর জস মপুর-ব্রসবিশিষ্টি এবং গাঢ় হইলে নেজ রোগকারী, গুরু এবং
দ্বেষা বর্জনকর জানিবে।

সরোবরের জল, - পিপাদা-শান্তিকর, বলকর, কবায়, মধুর এবং লঘু।
ভড়াগের জল, - বায়ুবর্ছক, স্বায়ু, কবায় এবং কটুপাক।

ধাণীর জল, – বাও প্লেখার শান্তিকর, সন্ধার, কটু এবং পিক্তবন্ধনি-কর। কু.পর জাল, – সক্ষার, পিতিরজন্কর, কহুম, জ্যার শীপ্তিক্র এবং রুঃ

জুপ ক্রেগর **জন, - অগ্নিকর, কক্ষ,** মধুর অধ্য খোলাকর নাজ বারণার জন, - কফার, ম**গ্নি**কর দী গ্রিষর হৃদ্ধ বাং লাগু। জ'ডির-জন - মধু , শিক্তম এবং শ্বিদ্হা। রুহ্য কুণোর জন, - কুটু, সক্ষার, কক্ষা, বাসু এবা স্থানি ইছিকর।

८क्कर धत छन, - मधु , धक छ । प्रायत्कि ।

कृत शुक्र विशेष कला, - यहु , धक वदर विशिषार्श्वक ।

্যামু আল জিলা শাসামীস-গল, লাবন্য গবিভিন্ন এবং স্কাঞ্জু ছেও এছিছিল জিনি করে।

শাইপাদশারে জাগ (সালাস্থিরি জাল) – ব্ল প্রাসার দে(যাকর, সামেরাগোদ কর এবং গীহিতি।

क्षण था.म८मा क्षण, – शृंद्रशकः मर्थक्षण। ८०० विक्र, ४५००० **७१ विभिक्षे,** विष्क्षे ७ विविधान्सा विक्र क्षेत्रिकः, ४६ विक्र, ४००० व्या ध्वर देश्

डेक अस भग्न

মঙ জল পাক কাংবেক, ভাষ্ট্য স্থানিটি বিভা জনবলিট ব্যুক্ত শাদ্ধীন ক্রিলে, ভাষ্ট্যেন উফোন্দ্য বলে :

देखज्ञान्त्र खण्

भंगकीय छ स्थानक, - त यु. महेकतः , व्यक्तिति है स्थानक, - लिख मैं के तत थवः शानविभक्ते छिरस्थानक, - कक मस्टेकतः, व्यथाक अवः व्यक्तित त्र विकास करा । भिनित कात्न, - शानविभक्ते छिरस्थानकः वमस्ट कात्न, - शानविभवः अवः भात्र श खोद्यकात्न, - व्यक्तितृ निक्षे छ स्थानक वावस्थात कता विराध । विराध कर्तिकात्न व्यक्तित्व । विराध कर्तिका विराध ।

ি দিবাপক, জনু দিবাতে এবং রাতিপক জল রাত্তে পান করা কুঠবা। উফোর্দক দুকল ঋতুতেই পথ্য। উফোদক – কাস, জুর, কোটবন্ধ, – কফ, বায়ু এবং আমদেয়ে নউকর; পাছক, কোটভন্তিকর, সকল প্রকার স্লেখা। নাশক এবং বাছুব সমভাকারক। রাজিকালে উক্লোদক পান করিলে, ভ এবং আভি অজীণ্ডি বোগ উপশ্যিত হয়।

উল্ফোলন সিদ্ধ इहेश विश्वीन, क्लाहीन, निर्मान এবং नघु इहेटन এः চতুর্বাংশের একা শ অংশিকীথানিলে গুণকারী হয়।

वानि উঞ্জল, जल कृष्ट इत्या क्रवरम्टम हाचात्र मक्षय करत्।

गा^द त्रक्त क्रन खुन

সিয়া, আহু, হিমা, মুখপ্রির, আন্নিকর, বস্তি:শাধনকর, র্যা, তেয়াজর শিক্তশন্য পিপাসার শাভিষর এবং গুকা।

কোমল নারিছেল জ্বল, – পিউন্ন অথা ডেনক। পাক অর্থাৎ বুনা নারি কেলের জ্বল, – গুকুগাক, পিজুর্দ্ধিকর এবং কোন্তংগ্রিক। শীক্তকালের নারিকেল জ্বল, – মদম্ভাগ, ছর্দি, মৃচ্ছা, পিজুজ্বর, আমজন্য প্রানি, ভূষণা দাহ এবং বিধনাশক; বিশেষভঃ অজীর্গরোগে নারিকেল জ্বল মছোস্থিব লম হয় এবং জ্বলিভেও ফলনায়ক ছইলা থাকে। আহার কালীন নারিকেল জ্বল পান করিলে বায়ুব সমতা হয় বিস্তু নিশিভ্যেজনান্তে অজ্বরাজের পারে গান করা বিধের নহে।

তু ধাবিজ্ঞান।

গো, ছাগী। উল্লী, দেবী, মহিবী, অধিনী, নারী এবং ছন্তিনী; ইহাবা নানারপ ওমধ ভক্ষণ করে, ভত্তন ইহাদিগের হুদ্ধ প্রাসন্তন আন্ধাসজনক । গুক্ মধুর, পিছিল, লী চল, স্লিন্ধ, নির্মাণ, সারক, এবং মুহু হইবা থাকে। হুদ্ধ, —বিবিধ রোগ আন এতং ক্লমাদির শান্তিকর, পাপনাশক, বলকর, রুষ্যা, বাজীকর, রসায়ন, মেধাজনক, সন্ধানস্থাপন, ব্রস্থাপনী (শরীর জীব হন্ন না) নায়ুকর, জাবনীর প্রকর্ম, ব্যন এবং বিরহনের ভুগা হিতকর এবং ওল্পবর্জন কর।

ना जिङ्क छन ।

গাভীক্ষ, - নেতের দোকারী নহে, স্কিন্ধ, গুকার রসাবন, রক্তপিত্বর,

ছातीइक्ष खन।

ছ'গীহন্ধ,-গাভীহ্ন সম গুৰ্বিশিষ্ট, সকল রো গ্র বিশেষ হঃ শেশ্ব-রোগে বিশেষ হিতকর।

छेकी इक्ष छन ।

উটী হয়,—কক উষ্ণ, কিঞিং লবন রসবিশিষ্ট, জার এবং ব্যু। শোক, গুলা, উদর, মান, কুমি কুষ্ঠ এবং বিষ, এই সকল রোগে উটী হয় বিশেষ হিডকারী।

(मधी इक्ष खन।

মেধী ভূগ, — মরুদ, বিশ্ব, গুৰু ও পিত্ত- সংখ্যাজ্ঞনক। মেষভূগ কেবল ব্যভ্জ কাসরোট্য বাবছেয়।

মাহিষত্থা গুণ।

মাহিষত্য, -- আহিশয় নেজরোগকর, মধুর, আয়িনাশক, নিজাকর, শীঙল কর এবং গ্রাভ্যাংশেকা স্থিয়ত্রী ।

একশক গুণ।

ং বাহাদি, গর খুব দ্বিং শুভ নহে, ভাহাদিগকে একশফ কহে অর্থাৎ গর্দ আরু, অ্যাতর, গৌর-শর্ভ এবং চমনী। যথা।

খরোহখোহখতরো নোর শরভশ্চমরী তথা। এতেটেকশফাঃ ক্ষত্ত শূলু পঞ্চ নথান্ পশূন্!

একশক জন্তর ভ্রা — উষ্ণ, বলকর, ছন্তশাদের বাতরে¦গছ, মধুর ল এবং প্ষচাৎ লবন-রসবিশিষ্ট, কক্ষ এবং লঘু।

नात्रीइक्ष खन।

নারীজ্ঞ, – মধূব পশ্চাৎ ক্যাল, হিম, আবনীল, অঘুও অভিনিত্ত দীওি ক্র।

व्खनीइक्ष खन।

ুহন্তিনীত্রা, – মধুর পশ্চাৎ কষ্মি, তেজ্ঞার, গুক্, ভিশ্ব, হিত্যাকর, শীতল, চন্দুর হিতকর এবং বলকর। প্রাভিংকালের ইন্ধ প্রায়ই ভার ও শীতল হয়। অপরাহ্নালের হ্রা বায়ু অন্তলানকর, প্রাতিনাশক এবং চকুর দী প্রিকারী।

ক্রিছিল প্রায় ভার এবং বৈজের রোগকারী। জ্যা অগ্নিতে সিদ্ধ কবিলে দায় হয়। অগ্ন হয়ের মধ্যে ধাঁরোক্ষ জ্যুই গুনবিশিক্ত, দোহনের পশ্চ.এ শীতল হউনে বিপানীত গুন হইয়া থাকে।

শরির হ্র অপক বস্থার ছিভকর!

সকল প্রকার এক্ষ অধিক সিজ করিলে তাব এবং পুর্ত্তিকর ছয় !

তুষ শনিক গন্ধ কিলা অভ্যৱস জ্বিলে অথবা তাহা বিবর্গ, বিরুষ, লবন-মুক্ত কিলা বিতাথিত (ভিডে গাওরা) হইলে পরিতাজ্য জানিবে।

पशि विकान।

দধি তিবিধ। যথা; মধুর, শ্বান এবং শহানা। সর্বপ্রকার দ্ধিই পৃশ্চংৎ ক্ষারা। দ্ধি,—স্মিল ও উষ্ণ, পীনস, বিষম স্ত্রী, স্মতিসার, স্মৃতি এবং মৃত্র-ক্বছেবোণোর পাতিকর, স্বান, প্রাণকর এবং মন্ত্রনক।

मधूत-त्रम पृथि, - त्याब्दांश छि००। पर এवर कक ও याएपत ज्ञांक्षका । काल-त्रम पृथि, - दिल्लाः त्राक्षिकत् , এवर काश्चल्याः पृथि, - द्रळ झ्छेकत कानित्य।

দধি মন্দ্রজাত হইলে অর্থাৎ উত্তমরূপে না বসিলে, – বিদাহী হর অর্থাৎ বালা জু.ল এবং মল, মূর, পিছ ও কক রুদ্ধি ছুইরা খাকে!

भगामिध खन न

গাবাদধি, - স্নিগ্ধ, মধুর, অধিকেব, বলহর, কচিকর এবং পবিত্র।
ভূগিদ্ধি গুণ।

ছাগদখি, – লয়ু, কফ-লিজ এবং থা হজকর রোগন্ন, অর্শ, খাস এবং কাস রোগের হিতকর এবং অগ্নি বর্জনকর ধ

মাছিষদ্ধি গুণ।

माश्चिम्यि, - मध्त, (क्षाच्हतू, वायु शिख्त मालिकत्, कक्षक्र नक्त्रं अत्थ (सर्थ)

ভাইটাৰ্যি গুণ।

के हो मि.- शांटक के है मा कारयुक्त, धक्यांक এ१९ (खनकत, वांक, कर्म, कुर्छ, क्रमि ख उनशै त्रागंध।

दम्यन्धि छान ।

শেষদ্ধি, — বাজজোলা এবং অর্শনের প্রেকোপকর, রাসে এবং পাকে মধুর , চলুরোগের এবং দোষের বন্ধনিকর।

व्यभिनीमध खन्।

অস্থিনীদ্ধা,— অগ্নিকর, নেতারে অভ্ভিকর, বাতবদ্দেশ্র, ককা, উফা, কিছার এবং কফ ৪ মুড্রা

नाजिन्धि खन ।

নারীদ্ধি, — রিষ্ণ, বিপাকে মধ্য বসকর, জুপ্তিকর, ভাষ চল্লুর হিতৃকর ও দোষসা

रिखनीत निधि तन।

হস্তিনীর দ্ধ্যি – দ্যুপাক, কফন্শক, উঞ্চবীর্যা, অজীর্কর এবং মূল, বন্ধ নকর।

গব্যাদিযে সমন্ত দধির বিষয় হলা ছঠল, তাহার মধ্যে গ্রাদ্ধিই সক্ষ-শ্রেষ্ঠ। গ্রাদ্ধি, – স্বাহ্ ও পরিপ্রাত অর্থাৎ বজ্রে ছ্রিড্ড হই ল শ্রীরের প্রক্রিশাধন করে, বায়ুর শান্তি, করে, শ্লেষা হৃদ্ধি করে বিদ্ধু পিত রুদ্ধি করেনা।

भक्त्रदक्षत मध्या

সিগ ছথে যে দ্ধি উৎপন্ন হয়, তংহা যায়ু পিত্র, কাচিকর এবং ধাতু অগ্নিও বলের বন্ধনিকর।

मित मत खन।

দ্বির সর, – গুরুপ্কি, তেজজর, বায়ুর শুংডিকর, জার্মকর এব বফ ও ভিজেপ বন্ধ নকর।

जगात मिश खन।

দ্ধি অন্ধি ছইলে অথাং ক্রেছগা না থাকিলে – বক্ষ, মলরোধক, বালুবছনিকর, অগ্নিকর, সমুক্ষায় এবং কচিকর জানিখে।

দ্ধির নাত গুণ।

দ্ধির মাত অথবা দ্ধি নি প্ত জল, – ভৃষ্ণা এবং ক্লান্তিহারক, স্থু শরী রর দার শোধনবর জল, কবার, মধুর; বাতককল কিন্তু র্ধ্য নছে। প্রহলকেন, মনের ভেদকর, বলকর এবং ক্রিকর।

দ্ধি যদিও তিবিধ বিশ্ব প্রকার ভেদ সপ্ত প্রকার জানিতে হইবে যথা; স্থাত্ব, অঞ্চ, অভ্যস্ত, মন্তর্গাও প্রভ্রন্তে, দ্ধি-রস, এবং স্থাসার দ্ধি; এই স্প্রপ্রস্থাস্থিত ছইল।

দ্ধিবিজ্ঞান সমাপ্তা।

তক্র বিজ্ঞান।

তক্র, — মধুব এবং অল রসংশিষ্ট এবং পশাং ক্যার। শুক্র, — উঞ্চবীর্ষ্য ল্ছু, কক্ষ, অরিকর; গণল শোফ, অভিসার, গ্রহণী পাণ্ডু, অর্মা, প্রীহা, গুল্লা অক্চি, বিষনজ্বর, ভ্যা, বমন, প্রসেক, শুল মেদ শ্লেঘা ও ব য়ু; এই সকল রোগয়; পাকে মধুব, মুখপ্রিয়, মূতর্যন্ত্র পান কিয়া জক্ষন জনিত রোগ ছইলে ভাহার শান্তিকর; তে, জার উদ্দাপক নতে।

তক্র গুণা

4)

শন্ধ জল মিশ্রিত যে দধি হবতে নবনীঃ এহন করা যায়, সেই দধি শ্রুত নত্ত ক্ষা শতান্ত ভলে না হয় তাহাকে তক্তে কহে।

জ্ঞানর হিত দ্ধি মন্থন করিয়া নবৈনীত প্রহণ করিলে, সেই দ্ধিকে যোল কহে। সেই যোল ক্ষতরোগে, প্র্বল লারীরে, এবং মৃত্যু, ভ্রম, দাহ ৩ ২০ছ পিতরোগে এবং প্রীঅকালে সেবা নহে। ক্রিমান্দো, কফজারোগে, ইচ্ছিয় দারের অবরোধে অর্থাৎ মল মুক্ত প্রভৃতি ইন্তির কার্য্য সর্ল না বাংকিলে প্রবং বাসু স্থাইইলৈ ও শীতকালে ব য়ু সেবা জানিবে। শুক্র মধুব হইলে, — শ্রেষা কুপ্রিত পিতের শান্তি হয়; জ্ল হইলে, — ্র্যুর শান্তি ভাগিতের রজি হয়।

কায়ুব প্রকোপে অলবস বিশিষ্ট তক্ত দৈয়ে বৰ সহিছ সেবন বিধেষ। বিভে প্রকোপে মধুব হল বিশিষ্ট তক্ত শর্করা সংযোগে দেবা এবং কংগর কোপে শুঠী, পিপালী, মরিচ এবং যবক্ষার যোগে তক্ত দেবন বিধেয়।

उर्ककृष्टिका खन।

ভর্নকুচ্চিক জর্পাৎ ছানা, নমল মুত্র রোধক, বায়ুরুজ্কির, কক এবং মতিশন্ধ গুক্ষাক।

ভক্তাপেকা-মণ্ড (ঘোলের) এবং দান। ক্সেক্ষা নংনতে প্রত্তর। কিলাটি গুণ।

(অর্বাৎ ক্ষীর) গুক্সকে, বাহা পুক্ষত্ম র জিকর এত নিজ্ঞাপ্রিদ) সপ্ত হ প্রস্তা গাভীর চ্পা এবং মারট গুল। মধুর, পুঞ্চিম্র, এব ভেজসং।

गान । भाक न निष्ठ उप।

म्मू किश्वन, मधुन, क्यात, जेनर पञ्च, भी उत्त, शिनक, शिवकि व मूथि शिव, मन्यू क्रमरे शांकक, नोबु लिखिय, रिक्यू प्रां, श्रामिकी शिक्य क्रमण, भाषि, जेन श्रामे शिक्य क्रमण, श्रामे अपने क्रमण, श्रामे अपने क्रमण, विश्व क्रमण, व्यापकी क्र

অপক হগ্ধজাত নৰনীত গুণ।

অভ্যন্ত ক্মিন্নকর, মধু , শাভল, কোব্রতা সম্পান্দত, এলেব নিষ্কির মলের সংগ্রাহক, রক্ত পিত্ত এবং চক্ষুরোগের শান্তিকর এবং প্রায়কর।

57.भेत्र गत्र १५ ।

মা মুনাশক, ভূঁ গুৰুর বলকর। শেজজন, বিশ্বকর, কিচিক্র, আ'হ্, শৈরিক গাবের মধুন, বক্তলিতের শাভিকর এবং গুলাগাক। পুর্বেশিক্ত দ্ধি, তক্র এবং নংনীত প্রভৃতির মধ্যে গাবাই উৎকৃষ্ট; ছাগামহিবাদির হুয়েবে সকল দ্ধি ইত্যাদি উৎপন্ন হয়, সেই সেই ত্রব্য অং অং হুয়ের গুণাহুরূপ ক্ষি,কর জানিবে।

যে যে রোগে দধি দেওয়া যার।

গীনসরোগে, অভিসার রোগে, শীত-ভুরে, বিষম-ভুরে, অফচিতে;
মূত্রকুজ্তে, এবং কীণ রোগে, বিবেচনাম্সারে দধি দেওয়া ঘাইতে পারে।
শরংকালে, গ্রীম্মকালে এবং বসন্তকালে প্রসন্ত, কিন্ত রক্তপিভাধিকারে
এবং কফেতে দধি দেওয়া বিধেয় নতে।

যে যে রোগে ভক্ত দেওয়া যায় !

শোপরোগে উদরীরোগে, অর্শরোগে, এইনী রোগে, মুমাঘাভরোগে, অফ্চিতে, পাঞ্রোগে এবং বিষরোগে বিবেচনাম্সাবে তক্ত দেও। বাইভে পারে। ক্ষারোগে এবং ম্বান রোগে তক্ত দেও। ক্ষারা নহে। শীতকালে, ক্ষামান্দো, ক্ষারোগে, উদরকম্পরোগে এবং মুফ্ট ব্য়ুজন্য পাথরোধ রোগেও ভক্ষবিবেচনা পূর্বক দেও। বিধেয়।

ঘৃত বিজ্ঞান।

হত - সেখি। শীত্রীর্ষা, মৃহ্নুমধুর, অংশ, অভিযান্দ, ব্রিষ্করর, উদাবর্জ, উমাদ, মৃথী, শুগ, জুর, আনাছ ও বাত-পিত্তের শান্তিকর, অগ্নির
দীন্তিকর, ম্মৃতি মতি, যেধা, কান্তি, অর, লোবণা, সৌকুমার্যা, ওজঃ, তেজঃ,
বল এবং সায়ুর বর্জনকর পুক্ষত ২ক্ষনকর, প্রিত্ত, বরঃছাপক (শরীর
সবল থাকে) গুক্সপাক, দৃত্তি-রহিত্কর, স্ম্বোর্জনবর, পাপ ও জ্যুক্ষী
শান্তিকর, বিষয় গুক্ষ নাশ্রি।

भवाश्व खन।

পরিপাকে মধুর: শীভল, বাভ-শিত ও বিষয়, দৃক্তির (ছতকারী রদকর এবং গুণে সর্বপ্রকার মহাপেকা উৎকৃষ্ট।

ছাগায়ত গুণ।

শায়িকর, দৃষ্টির ছিতকর, বলর্জনকর, কাস, খাস এবং ক্ষয়েরোগের উত্তম পথ্য এবং লঘুপাক।

মাহিষয়ত গুণ।

ু মধূব-রম গুক্সাক-রক্ত-পিত্তম কেখাকর, বাজলিতের শান্তিকর এবং নীজন।

মেষী মূত গুণ।

শন্ত্, পিভের প্রকোপকর নছে; কফত্রেগেট, বায়ুরোগেট, যোনি দোষে। শোষরোগে এবং কজ্পে-বিশেষ ছিভকর।

একণফ জন্তুর মূত গুণ।

लघु, উक्किनी व्या क्रमान्न, क्रमान, क्षीय मो खिक्त এবং মূর্টেরাধকর। নারী সুম্মের স্কুত।

অমূচ তুল্য, অগ্নিও শরীবের বর্ধনকর, লয়ু এবং বি.যর শান্তিকর। হস্তিনীর মৃত গুণ।

ক্ষার, মল-মূজেরোধক, ভিজা, অংশিকর, স্মু; কক, কুষ্ঠ, বিষ ও ক্মির হিভকারী।

ক্ষীর মূত গুণ।

মনরোদক, রক্তুপিত, অম এবং মুচ্ছ।র শাতিকর এবং চতুরোগোর হিচকর।

সু ভ্রেমল গুণ।

মধ্ব, সারক, যোনিশুল, কর্ণশুল, নেতৃশুল এবং শিরংশুলের শান্তিকর। মতের মল, –বভিজেমা, নস্ত এবং আকিপ্রণে উপদিউ হরু।

পুরাতন ঘূত গুণ ৷

সারক, পরিপাকে কট্-রস, তিলোমনাশক, মৃক্ত্র, মেদ, উন্থাদ, উদ্বৰ্ধনাতে, জ্বর, গ্রহণ, শোক, স্থাধী এবং যোনিশ্বর, কর্ণশ্ব ও নেত্রশুলের শান্তিকর এবং অগ্নির দীভিকর। প্রাচন হত – বৃত্তিকেরা, নস্য এবং অকি-পুরবেও উপদেশ করা গিয়া থাকে।

পুরাতন হক, – তিমির, খাদ, শীনস ও জ্বর-বাসের শান্তিকর, এবং সুক্ষ্য, কুষ্ঠ; বিষ, উথাদ, এছ এবং অপকারনাশক।

একাদশ শত বংসরের রক্ষিত প্রাতন মৃতকে কুইস্পিকিছে, ভাষা রক্ষোম ; উহাপেকা অধিক কালের রক্ষিত মৃতকে মহাযুত কছে। মহাস্ত ক্ষম এবং বায়ুপ্রাধান বাজির পক্ষে পোর। ইহা বলকর; প্রিত্ত, মেধাজনর এবং তিমিরনাশ হ'; এই যুত সক্ষ প্রানির শান্তিকর।

टेडल विख्वान।

শ্রেছ, — আগয়্র, উপান, তীক্ষ্ণ, ময়্বর, পাকে ময়্বর, প্রক্তিকর, ভৃপ্তিকর, আমি।ধ্র্মের উ ওলক, স্থান, নিশদ, ওক, সারক, বিকাসি, তেজজ্ব জ্বের প্রাসম্মতা সম্পাদক, মেধা, দেহের কোমলতা এশং মাংসের দৃতৃতাকারী, বর্ণকর, বসকর, দৃত্তির হিতকর, মূর্রোধক, লেখনকর, ভিজ্ঞা, পশ্চাত ক্ষাম, শাচক, বাত্রোল্যাহারী, রুনিনাশক; শীত্র-পিত্তজ্বক নছে; যোনিশ্র্যা, শিরশ্রেল এবং কর্নশ্রার নাজিকর, গর্ভাগাহের শোধনকর, ছিল্ল জন উহিলিই, বিজ্ঞা, চৃত্তে, মধিত, ক্ষত্ত, পিন্চিত, ভয়্র, স্ফুটিত, ক্ষাবদ্ধ, অয়িদয়্ব বিলিই, দারিত, অভিহত, ভ্রম্ম, হ্যা, ব্যালাদি কর্ত্তক দংশন; এই সমূহ ভ্রেত্র প্রিষ্টেক, মার্মিন ও অব্যাহনে ভিল্পতিলই ব্যব্দ্যে।

বস্তিজিনাতে, পানে, নসো, কর্ণরেণে ও অন্নগানের সহখোগ ও ব্য জমন্থিতিল ব্যবস্থের।

এরও তৈলগুণ।

মধ্র, উফ, ই ফ্লু, অগ্নিকর, কটু পশ্চাৎ কথার, স্ক্লান নাড়ীশোধনকা ত্ব.কর হিতকর, র্যা, পাকে নগ্র এবং বরঃস্থাপন (দেহ শীত জুন যন্ন না ুখানি এবং শু ক্রের শোধনুকর আরোগা, মেধা, কান্তি, আ্তি এবং বলে উংখাদ্যে, বাত, হেলা ও দহের শেধোজাগের দোবহারক।

নিষাদি তৈল গুণ।

্নিস্থ, অতসী, শৃণ্, কুম্ম্ন, মূলক, দেবতাড়, যোষ্ক্রা, আর্ক কলিয়া কাল, বড এংগইচ, শীলু, করঞ্জ, ইন্সুনী, শিলু, সর্থপ, স্থবর্চলা; (তিসী বিড়ন্ম এবং জ্যোতিস্থতী; এই সুমূহের বীজের এবং ফলের জৈন। ভীক্লু, বল্লু, অল্লা-বীর্ষ্য, রনে এবং পাকে কটু, সারক এবং বাত স্লেক্ষ্য কৃমি, কুন্ঠ, প্রামেহ এবং শিরোরোগের শান্তিকর।

मान नी: खत रेजन छन।

বাচন্ন, মধুন, বলক্র, কটুপাক, নেত্রের অহিত কর স্মিট দ উষ্চ, গুৰুপাক এবং পিত্রানাপ্তর ।

সাৰ্বপ তৈল গুণ |

রুমিন শক, কণ্ডু এবং কুষ্ঠনাশচ, এছু, বক, মেদ এবং বায়ুর শান্তিকর,, শেখনকর, কটু এর অগ্নন দী শুচর।

हेजूरा रेजन खना

কৃদ্নি। শাচ অংশ ভিক্তা, লঘু, কুঠার্যা এবং কৃদিয়া, এবং দৃটি, ওক্ত এবং বংশর ক্ষাকর।

কুসুদ্বীজের তৈল গুণ।

পরিপাকে কটু সর্বপ্রকার নেষ্ট্রেন্কর, রক্তেপিওজনক, তীক্ষু, নে তার অভিতকর এবং বিদ্যাহী।

िशंडानि टेडन अन।

চিরাভা, ভিনিশ, বহেভা, নারিকেল, কুল, গীলু, জীবন্তী, পিরাল কর্ম্বার, স্থাবলা, জপস্থ, এর্মাক্ষ, কর্মাক্ষ, কুমাও প্রভৃতির তৈল। মধ্ব-বার্থ্য এবং পাকে মধুর, বায়ুপিজের দমনকর, শীত-বার্থ, নেজের অহিতকর মলমুক্তজনক এবং সর্গোদান্য কর।

মগুকাদি তৈল গুণ।

মধুক গাভারী এবং প্লোদের তৈল। মধুর ক্যায় ও কফ-পিডেয়।

ভুবরক এবং ভল্লাতক তৈশ]

. खेक, मध्त, कयात्र, शंकाद जिल्हा, नात्रू, नक, भाग, क्र्फ, रण्ड अवर कृतिक, अवर जिल्हा जिल्हा कार्य कार्या कार्या

সরল ও দেশদারু আদি তৈল গুণ।

্ সরল, দেবে, গান্তীর শিংসপা এবং অগুক ; ইছাদিগের সাহের ভৈল।

্ ভিক্ত, মটু, ৰৰায়, ভ্**ষ্টত্ৰণেকর, শোধন**কর, কৃমি, কফ, কুণ্ঠ এবং বায়ু-ভ্ৰাশক।

ভুম্বি আদি তৈল গুণ।

पृथी, क्वांच ख. मखी, अवसी, भगभा, मखना, भीता, काण ल व मिश्रामी हे हेशकिरगत रेजन।

ভিক্ত, কট্, কলায়, দেহের অধোভাগের দেবিয়া; কুমি; কক, কুষ্ঠ এবং ব য়ুব শান্তিকর ও জ্উত্রণের শোধনকর।

या जिल डिन खन।

সর্বপ্রকার দোষের শান্তিকর, জ্পা ভিক্ত, জ্মির দীপ্তিকর, লেখনকর, প্রায়, প্রিত্ত এবং রসায়ন।

এই ক'ষকা তৈল গুণ।

একৈবিকা তৈল অর্থাৎ বক্পু স্পর ১ তল,—ম মুব, অতি শীতল, পিত্র, বায়ুর দ্বিকর এবং প্লেমার বদ্ধিকর।

জাম্বীকের তৈল এ।।

জ্পতিক্ল, ক্ষতি হুগলি, বাতলেখার শান্তিকর, ক্ক, মধূর, ক্যায় এবং ইহার রসের সম্ভায়ন্ত পিত্তকর।

अक्त रिजाल मार्था जिलरे जनहें खेरकू के सामित्य ।

वमः, (मषः ७१९ मर्ज्जः। विक्कान।

তালে, অনুপ এবং জলচর জন্তথ বদা, মেন এবং মজ্জা,— থক; উষ্ণ, মধুব্ এবং বাজনাশক।

এক-শক্ত, মাংসভো জী ও ভালল পশুদিগের বসা। মেদ এবং শক্তা, ল, শীতল, ব্যার এব স্কুলিভিন্মপুক।যু প্রতুদ আর্থাৎ শীকারী পক্ষী কিছা সাধারণ পক্ষী নকলের বদা, দেল এবং মজলা, – লেআনাশক।

ण्ड, रेडन, तना, रमन अवर मञ्जाः अहे नदन উक्टरहा इत श्र्यांक अवर वायूत मास्टिकद्र खानिस्त ।

मध् विख्वान।

মধুন-মধুর পশচাৎ ৰধান, কক্ষা, শীত্র, অন্নির, বর্ণকর, বলকর, লয়ু, কান্তিকর, লেখনকর, আংল, সালানকর, শোধনকর, রোপনকর সংস্থান লাক্তির বছ্ষনিকর, সাংগ্রাহী, দৃষ্টীর হিত্তবর, স্ক্ষাণ্থগামী, পিত, প্লেখা, মেদ, মেহ, হিক্কা, খালা, অভিসার, ছার্দি, ড্সাং, ক্ষা এবং বিব্যু, প্রক্রুলনর এবং ক্রিদোষ্য। মধুন-লখুভা হেডু ক্ষম্ম এবং পিচ্ছিলভা, মাধ্র্য ও ক্ষায় ভাবপ্রযুক্ত বাভ-পিতিয়।

মধু অফীবিধ। যথা; পৌতিক, নামর, কোন্তা, মাকিক, ছ'তা, জার্য্য, ব্ উদালক এবং দাল।

শৌত্তিক মধু গুণ।

हैश शिक्षण वर्ग शृंखिका नामक इहर मिक्का मा शृंबीक; हैबात वर्ष मिक्ष्मिट्य नावि । धहे शोखिक-मध् मकण श्रिकात मध् व्याशक्त, कक्त अवर खेल, कात विष मरायाशक्षना वाक्रक अवर शिष्टत श्रिकात श्रिकत, (इमनकन, विमाशी ध्वर मानक।

ভাষর মধু গুণ।

ইংগ জনর স্থিত ; এই জানর মধু - শিচ্ছিণ এবং অভান্ত মধুব জনা গুৰুপাক।

क्कि मधु खन ।

हैही शिक्त दर्भ कूछ मिक्काहर हैश्रुत दर्भ किला। এই क्रिक्र मधुर्भ कोट बेंग्स अदर (तक्षमकत्र)

মাফিক মধু গুণ!

ইছা নীলবর্নধান মক্ষিকাকৃত, ইছার বর্ব তিলের সম এই মাজিক মধ্, ব্যুতর এবং কক্ষ; ইছা সকল প্রানার মধ্র সংগ্রুকা উৎকৃতি, স্থাসাদি রোগ ইছা বিশেষরে: প্রযুক্ত হয়। সাত্ত গুক্তিণ কি, হিন, পিছিল এবং ক্তে-পিছেল।

स्वास्य खरा ।

ইং! বোলভাব চাক সঞ্চিত; এই বংটীক্ত মণু ন্না প্রকার মেত্র শান্তিকব, ক্রমিয় এবং অভান্ত ভিতকারী।

कार्यामधु खन ।

তিলা পার্য নাদক দীঘা পাঁচলিপ্ন জাতর সদৃশ নিক্তান্ত । তথা বিলোধ দিততার, বধায় স্টুলাত, নিজে নাখত বায়ুল্লিকর নাবে।

लेकानक शर् छन ।

ইংশ উইপোকারুত। কচিকর, আরের হিঙকর, কুর্তু এবং বিষয়। দর্মান্ন উন্ধা, সম্লগিত্তার এবং পাতে বটু।

मान गत्र खन।

ইংগ ইন্দ্রীপলের সম স্ক্রম শক্ষণ টুৎগল, রুক্ষর কোটরজাত : এই তক্ষ।

सू उन मधु खन ।

🚤 পুঞ্চিকর, সারক এবং সমধিক শ্লেমানাশক মছে।

পুরাভন মধু গুণ।

भिष् ७ खून छ न्। भक गः आ ही ७ लिथन कत ।

প্ৰ মধু গুণ।

ভিদেশের শান্তিকর।

जशक मध्युत।

जिल्लास्यव अधिकत्र।

মপু নানা, প্রকার ক্রেবার সহযোগে নানাকণ বোগ এক করে।
নানাবিধ দ্রেবার সারাংশ মিলিচ জন্য ইহা অত্যন্ত উৎকৃত দ্রবা। দ্রবা,
সা, গুল, বি.র্বার, এবং বিপালে প্রপাধ বিকন্ধ; নানাপ্রকার প্রশোব বস
হা, স উৎএর ভল বলিরা এবং স্বিধ মন্দিকা ইইতে জাত হেতু ইইডে
ন্মুস্য উল্চার মর্থাত মুম্বর প্রীজ্যর প্রেশ সম্বাহ প্রতীকার কহে।

है कू विख्वान

हे कू - महून, शांटकछ मधुर, धकुशांकः भी उस. १८० (११४) तुम , १६ इकिन्द्र, उक्कशिखंद कृषि अवर कक्क क्रमक ।

র্জিকর, বজ্ঞ গিতত র্কমি এবং কফ জানক।

ইক্ বিবিধ প্রকার। যথা।— পোওক (গুডিইফু) ভীকক, বংশক
সোম-শাড়া ইকু) শতপোরক, কান্তার (কাজনীইফু) ভাগ্যেলু,
কার্ডেকু স্চী পতে, নিপাল, দীর্ফাত, নীলপোর এবং কোশ্যুৎ। কেবল
ছুশতার তারতদ্যে ইকুর জাতিভেদ জানা যায়।

্পৌশুক এবং ভীক্লক ইফু গুণ।

অপ্রতিশ, মগুর, ঝিন। পুথিকর শ্লেম্ল দারক, শ্রিদাহী, গুলাণাক

यः मक हे क्कू खुन।

পুর্বোক্ত ছই প্রকার ইক্ষুর সমতুল্য গুণবিশিষ্ট, এবং কিঞ্চিৎ সক্ষার। শতপোর ইক্ষু গুণ।

वश्मात्कत्र मम श्रम विभिन्ने, किश्विष्ट উक्ष अवर व सू भाश्विकत्र।

काकिल धादः जानगरेकू खन।

এই উভন্ন প্রকার ইক্ষ্ট বংশকের সম গুণ বিশিষ্ঠ। কাঠেইক্ষু গুণ।

আঞ্জী ও ভাপদ ইক্ষুর তুলা গুণ্কর এবং বায়ুর প্রকোপকর।

সুসীপতা, লীলপের, নৈপ লীএবং দীর্ঘপতা ইক্ষু গুণ।

বায়ুর বর্জনকর, ককপি্তম্ব, কদান্ন এবং বিদাহী।

কেলকার ইক্ষু গুণ।

গুক্, শীতল, রক্তপিত এবং কর রোগয়। মূল এবং মধ্যহল আং মধুর।

ज्या श्रेकात देक्दंत एगा नवनत्र मविनिष्ठे सानित्व ।

मखिनिष्पीर्ष हेक्कू द्रम खन।

ক্ষল্পক, অবিদাহী, বায়ু পিত্তন্ন, মুখের প্রীতিকর এবং ভেজকর।

যন্ত্র নিজ্পীড়িত ইক্ষুর্গ গুণ।

গ্রহ্মপাক, বিদাহী এবং মল রোধক।

্পক ইস্ফুরয় গুণ।

(প্রক্ত অর্থাৎ পাক্তর। ইস্কুরস) গুক্পাঁক, সারক, স্থিয়, তীক্ষ

ফাণিত রস।

(কালিত পর্বাৎ বাতাসার পাক যোগ্য রস) গুরপাক, মধুর, শুনুজা কারী, প্রক্রিকর বিস্তু তেজস্কন্ন নহে এবং তিদোষজনক।

ইকু গুড় গুণ।

সক্ষার, মুধুর, অত্যন্ত শীখল নহে, স্লিগ্ধ, মূত্র শোণিতের শোধন, কর, কিন্তু অধিক পিঞ্চান্তিকর নহে, বাত নাগক, মেদ এবং কফ জনক, বলকর এবং রব্য

. 'পূর তন গুড় গুন।

পিত্তনাশক, মধুর, **ওদ্ধ বা**তনাশক, শোণিতের প্রাধানকারী অতিশয় গুণ বিশিষ্ট এবং উৎক্**ষ** দ্রবা।

यरमञ्जिषाथछ এ" र भर्कता i

্মংসভিকা গও অর্থাৎ মাহনীন কঠিন কিছা নিরস গুড়) এবং শেকরা অর্থাৎ চিনি) – নির্মান, শীতস, স্নিয়, গুকুপাক, মধুর, র্যা এবং র্জুপিত ও ভ্রমান, শক। ইহারা জনশঃ যত নির্মান হয়, ডভই স্মিয়, মধুর, গুকুপাক, শীতস এবং সারক হয়। মংস্তিকাখও এবং শক্রা, —সভাবভঃ ফেরপ গুণবিশিক; ইহানিগকে আবিত করিলে ও ভক্রপ গুণদারী জানিতে হইবে। শক্রা যত সারবিশিপ্ত নির্মান এবং কারহীন ছইবে, ততই গুণকারী জানিবে।

मध्मर्कता।

ছদ্দি এবং অভিসার নাখক, কক্ত ছেদনকর, মুখপ্রির, ক্বার-মধুব পাকেও মধুর।

যবাস শর্করা গুণ।

মধুত, কষায়, পাঞ্চাত ভিক্ত, শ্লেষ্মা নাশক এবং সারক !

যাবদীয় শর্করা গুণ।

দাহ এবং রক্ত ভিন্ন, এবং ছুর্দ্দি, মুচ্ছ্ । পিপাসা নাশক ।

মধ্ক পুজালাত ক নিউ গুণ।

মধুকপুষ্পা (অর্থ মউন পুষ্পা জাত ফানিত) বাত-শিতের প্রতিকাপকর, চফনাখক, মধুর, পাকে কষার, এবং বর্তিদোব নাশক।

भए विक्छान।

শার্সযুক্ত সর্ব প্রার মদাই পিতপ্রকোপকর; অগ্নিকর, কছিকর ভেদক বাদক বাতলেখানাশক, মুখ প্রিয়, বন্তিশোধনকর, শর্থাক, বিদাহী উষ্ণ তীক্ষু, ইন্সিয়ের উত্তেজন, প্রফুলকর, এবং মলদূত্রেব বর্ষনক্ষ।

न बीक भना खन।

भाषीक मना व्यर्थार जाका किया व्याज्युत्रमना, व्यतिनाही, मधुत, रूक शाकार कथान, मधु, जातकः अतः भाषाद्वाभ छ विषमव्यव नामकः स्है। मधुत विषमा दल्लिखात्र का वायाद्य क्यानितः।

र क्वित मना खन ।

থাজ্ঞারমদা তেশকামদোর সহিত অংশই প্রভেদ জানিবে। বায়ুর বর্ষন-কব, বিশদ, কচিফ্ব, কফনাশক, কশক্রী, স্যু, কষার, মধুব, মুখপ্রির-প্রসাধি ও ইতিমধেব উত্তেজক।

স্থার। গুণ।

সামান্ত, কাশ, আগনি গ্রহনী-দোষ, মৃত্র'ঘাত, এবং বায়ুব শান্তি-কারিনী, স্তন্য এবং রক্তক্ষাে বিশেষ হিত্যায়িনী এবং পুরিও শ্রির উল্লেখ্য

খেতাজাত স্বরা গুণ।

ে খোগাঞ্জাত ক্ষ্মা (অর্থাং শক্রি। জাত ক্ষ্মা) কাস, অন্ত, গ্রহনী, শ্ব'স এবং প্রতিশায়ি বোগে এবং ছর্দ্দি, অক্তি, হৃদয় এবং কুক্ষিদেশের বেদনার প্রবং শূল রোগের বিনাশকারিনী, এবং মৃত্তি, কফ, স্তন্য, রক্ত এবং মাংসের বর্ষনকারিনী।

যবআত সুরা জাণ।

ক্র দোষের প্রায় কারিনী। কফ, বাজ-আর্শ, ও কোর্ছ রোগের শান্তিদায়িনী এবং লিউ ও অংশ কককারিনী, এবং কক্ষা।

মধুলিকাজাত সুরা গুণ।

র্ধুলিকা জাত (অর্থাৎ মউরিক্সাত) স্থা, - পুর্বেজ যবজাত, স্থার' সম্ভন বিশিষ্টা, নল মূত্রোধিনী, গুলু এবং শ্লেখাকারী।

আফিকীজাত পুরা গুণ।

আকিনীকাত সুর', (মর্থাং তিনিশরক জাতসুরা) – পুর্বোত সুরা দামা-ন্যর গুন বিশিষ্টা, করা; অপ্পান্ফকারী, তেজোর্দ্ধি এবং পরিপাক-কারিনী।

কোহল মদ্য গুণ।

কোহদকদা (অর্থাৎ তীক্ষু মদাবিংশষ) ব'য়ু পিতে এবং ককের ইন্দিকরঁ, ভেদক, তেজক্ষর, এবং মুধাপ্রায়।

कत्रन भना खन।

(জাগা মদ্য ডাক্ষা নিংস্ত) ইহা নশ্যুত্রেধিক, উষ্ণ, পরিপাক্ষর, কৃক্ষ এবং শিপাসা, কফ, শোফ্স।

বক্স মদ্য তাণ।

ছর্ষজনক; প্রবাহিকা, আটোপ, আর্শ, ত বায়ুজ্ঞন্য শোভের শান্তিকর, এবং সারক; শক্তিকরে বলিয়াইছা সংগ্রাহক ত বায়ুর প্রকোপকর, অগ্নিকর বেমুত্র জনক, বিশদ, অপ্পাশদক এবং গুক্তাক।

(त्री फ़-मिश्रु खन

ইহা গুড়জাততীক্ষ্ম মন্য, -কষায়-মধুর, পাচক ,এবং অয়িদীপ্তিকর।

শার্কর শীধু গুণ।

ইহা শর্করা জাত তীক্ষুমণী, – মধ্র, ক্চিকর, অগ্নিদীপ্তিকর, বাত্তর শোধনকর, বাত-নাশক, পরিপাকে মধুর, ছদ্য এবং ইন্ডিরের উত্তেজক।

পরুরসজাত শীধু গুণ।

ইক্রস গুড়, চিনি প্রভূতি কোন এছে।র রস শগ্রিতে চোয়াইয়া এই
মদ্য প্রান্ত হয়। একণে প্রচলিত ইণরাজী ভাষাতে ইহাকে "রম, কিমা
ক্রিটি বলিলে বলা ঘাইতে পারে। এই মদ্য,—পুর্বোক্ত গুণযুক্ত, বল
এবং ক্রির, সারক, শোক্ষ অগ্রির দীপ্তিকর, হৃদ্য, ক্টিকর, শ্লেষা এবং
শ্রেশ্র হিতকর।

আকিক শীগু গুণ।

দেহক্শকারী, শীতল-রুমুক্ত, শোপ এবং উনররোগন্ন, বর্ণকর, জারক, শুর এবং ত্রণের পক্তে ি পেখোগী, কোঁক্টরোধ এবং অর্শরোগের পার্ত্তিকর, পাঞ্রোগন্ন, মলমূজের কঠিনত। সম্পাদক, স্মৃ ক্ষার, মধুর, পিতনাশক এবং শোণিত প্রসাদনকর।

किश्त-भीत् खन।

ইতা জামফ লের ১দ্য - মংমুক্তরাধক, কবার এবং বায়ু প্রকোপকর।
সুরাদ্ব গুণ।

তাল থজুবাদির রস মাতিয়া উঠিলে এই স্থরাস্ব কছে, – ইছা তীকু জনা, মৃত্রুদ্ধিকর, কফ এবং ব য়ু-শান্তিকর, মুখপ্রিয়, স্থিনদ অর্থাৎ মন্ত্র অধিকক্ষণ ছায়ী এবং বায়ুনাশক।

मध्रामय खन ।

ইছা মগ্ন ছইতে প্রস্তুত হয়, — এই মদা,-র্যু, ছেদক, মেছ, কুট্ট এবং বিষের শান্তিকর, ভিক্ত, ক্ষায়, শোক্ষা তীক্ষ্ আত্ লখ্য বায়ুর্জিকর নছে।

रिभटतम् जागन छन।

এই মদ্য ধাত্রীপুলপ, এড এবং আমানি সহবোগে প্রস্তুত হইরা থাকে। ইহা তীকু, ক্ষান্ত্রাদক, অর্শ, কফ ও গুল্মনাশক; কৃষি, মেদ এবং বায়ুর শান্তিকর ও গুৰুপাক।

श्रृषी के रेकू-त्रमामृत खन ।

এই মদ্য আলুর ও ইকুরস সহযোগে প্রস্তুত হয়, ইহাকে ভিনিগার কিছা ছিরকাকতে। ইহাবল্যর, শিত্র এবং বর্ণর।

मधुर्भुष्माक मधु खने।

ইহা মধু পুস্পকাত আর্থৎ মউর্ল পুস্প জাত ইহা বিদাহী, জ্যাকর। বলকর কক, ক্যায় এবং বা চপিতের প্রকোপকর।

অপর অপের হল, মূল এবং ক্লজাত আসবের গুণ, ত'হাদিগের রেসের অধি নির্ভিটিক।

स्डम मना खन।

নেত্রবোর্গকারী, শুক্পাক, বায়ু পিত এবং কলের প্রকোপকর, অনিষ্ঠ গান্ধবিশিস্ত, বিরস, অপ্রির এবং বিদাহী।

পুরাতন মদ্য গুণ।

অ্গন্ধবিশিক্ত, অগ্নিকর, মুখপ্রের, ক্তিকর, রণিয়, মাড়ীপথের শোগন-কর ব্যু এবং বায়ু-পিতায়।—

व्यति छ।

শরিষ্ট শর্থাৎ আরক দ্রব্য সহগোগে সংস্কৃত হত্যা জন্য বিশেষ গুণ-কারী। তজ্জনা বহুদোষল্প এবং মুকল দোষের সমতাকারক, কফ-বাতল্প, সারক, শিক্তবিরোধকারী, শুল, আধ্যান, উদ্যুরোগ, প্লাহা, জজুর্ণ এবং আর্শের-বিশেষ হিতকর। প্রিপাল্যাদিগনের সহযোগ অরিষ্ট প্রস্তুত করা ছইলে, কফরোগের শান্তিকর হইলা থাকে।

অরিষ্ট, আদব এবং শীধু, ইহাদিগের দ্রবা, গুন, ক্রিয়া এবং প্রস্তুত্ব করিবার প্রানালী বিশেষরূপে জানিলে বাবহার করা ব্যবদ্ধের জানিবে। বেহেতু ইহারা গাত হইলো, —বিদাহী, হুর্গন্ধযুক্ত, বিরুষ, কুমিকর এবং গুক্ত-পাক্ষ হয়। তক্তন হইলো, অপ্রিয় এবং তীক্ষ্ণ হয়। মন্দ পাত্রে থাকিলে—
উষ্ণ হয়।

বে মদ্য ব্যাপত শৃষ্ঠ করিছে ক্রাণ্ডির যে গ্রিমাণে প্রাপ্ত করিছে হয়, তাহার কোন ক্রব্যের স্থাগ ব্যাপতা, কিন্তা কোন ক্রব্যের ব্যাপতার পিছিল কিন্তা স্বাহা পাত্রে ব্যাব গিছিল কিন্তা স্বাহা পাত্রে ব্যাব গিছিল কিন্তা এমত মদ্য পারিত্যাগ করিবে।

যে মদ্যের উপকরণ দ্রব্য অংপ এবং যাহা তক্ষণ ও পিচ্ছিল সেই মদ্য গুৰুপাক, কফের প্রকোপকর এবং শাশু পরিপাক হয় না।

ষে মদ্যের উপক্ষণ রেব্য অধিক হয়, তাই। পিগুপ্রকোপকর, কুল্ল-ইঞ্জ, বিদাহী, অপ্রিয়, ফেনিল, ভূর্গদ্বযুক্ত, কুমিকর, বিরস এবং গুক্সপাক হয়। পর্যাসিত হইলে বায়ুর প্রকোপকর বঁর, এবং এস্ক্রপ্রকার দেষে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

্থে মদ্য অধিককাশ থাকিয়া জাত রস হয়, তাহা বাত স্লেমার শান্তি-কঃক্চিকর, দেবেরহিশ; স্থান্তিবিশিষ্ট রেবনীয় এবং মাদক। রস, এবং বর্ষি। প্রভেদে মদা নানাকপ জানিতে হইবে। মদোর মীর্যা,—সুক্ষা, উষ্ণ তীক্ষা, এবং প্রফুলকর জানা জঠর নলের সহিত হৃদয়-দেশত ধমনীপথে প্রবেশ করতঃ উর্গ্ধ গমন পুর্বেক মন এবং ই ক্রিয়াণতক সঞ্চাণিত করিয়া উন্মাদিত করিয়া।

সেখা প্রকৃতির লোক মদ্য পান করিলে অধিক বিলম্বে মত হয়, বায়ু প্রকৃতির লোক মদ্য পান করিলে অনতিবিলম্বে মত হয় এবং পিত প্রকৃতির গোক মদ্য পান করিলে সত্মেরই মত হইয়া উঠি।

মদ্যপানে মন্ত হইয়া উঠিলে স্বাত্ত্বিক প্রাত্ত্তি লোকের শৌচ, দান্দিনা, হ্ব, সৌন্দ্র্যার ইচ্ছা এবং গীত, অধ্যয়ুন, সৌ্দ্রাগ্য এবং স্বত ক্রীড়াতে উৎসাহ জ্বো। রাজসিক প্রকৃতি লোকের ভঃখণীলতা, সাহস পুর্বক আত্মনাল, এবং কলতে মন ধাবিত হয়। ত মসিক প্রকৃতি লোকের অশোচ, নিদ্রা, মংস্বা জ্বাম্যাদিত গ্যন ইচ্ছা এবং অসত বাক্য উৎপ্র হইয়া থাকে।

শুক্ত বিজ্ঞান

কোন প্রকার কিয়া মূল লবন মিলিত তৈলে ফেলিয়া শুদ্ধ করিবে তৎপর তাহা জলে কেলিয়া রাখিলে তাহা মাতির। উঠে, সেই জালকে ছিবনা কিয় তিনিগার অধবা শুক্ত কছে।

ভক্ত-রক্তপিত্রকর, ছেদক, স্বারের বিকৃতিকর জারক, লৈখা, পাঞ্ । ফুমিয়া, এবং লগুলাক।

শুক্ত চোরাইরা যে রস উৎপ্র হয়, ভাহা ভী ক্রাফ, সূত্রল, সৃদ, কফ নাশক, কটুপাক এবং বিশেষ কচিকর।

ুপ্ত , রস অথবা মধু সহর্বাণো যে সমন্ত শুকু জব্মে, সেই সকল শুকু নেঅরোগানর। গুড়জাত অপেক্ষণিরসজাত শুক্ষ লঘুতর এবং রসজার অপেকা মধুজাত শুকু লঘুতর।

তুষোদক গুণ।

পয়ু ্যদিত অলের আমানিকে তবোদক কছে ইহা অগ্নিকর আছি ক্রিটাগ, পাত রোগ এবং ক্মিরোঞ্ম।

मितीतक छन।

है इप्त मार्गान विदल्य। हे हा छाइनी अवर मर्गद्रतादग्रेस मास्तिकत अवर ভেদক।

भानामा खन।

আমানি অধিক দিন রাণিলে মা^ততয়া নির্মাণ জালের সম যে কাঁজি র**েখ**় ভাতাকে ধানালৈ কতে; ইছা অগ্নিকর, দাহনাশক, মর্দ্রনে এবৎ পানে বাত্রেখা এবং শিপাসা নাশক এবং শ্যুপাক। ধান্যাল অভ্যস্ত হীক্ষ্ণ, ভজ্জনা এক গণ্ডুব পান করিলে তৎক্ষণাৎ ককের শাস্তি হয় এব**ং** (খের বিরস্তা, তুর্গন্ধ, মনেব কঠিনঙা এবং প্রান্তি নিবারিত হয়। (ना) ला. क्यां प्रकतः, जातकः, एक्षक धार जाक्षां शासत शास विश्वास खेशकाती ামুদ্রতীরবাসী জনগণের প্রাকৃতিসিম সেব।।

গ্লুত্র বিজ্ঞান।

গৈ।, মহিষ, ছাগা, মেষ, অশ্ব ছন্তি গদিত এবং উষ্ট ; ইহাদিলাগুর ্ত্র, – তীক্ষ্ণ, কটু, উষ্ণ, ভিজ্ঞা, পশ্চাৎ শ্বণ-রস বিশিষ্ট, লঘু, শোধনকর কক্ষ্ণ, াত, কুমি, মদ, বিষ ওলা, অর্শ, উদববোগ, কুষ্ঠ, শেংফ, অ্ক চ এবং iioুরোগের শান্তিকর, হৃদ্য এবং অন্নিদীপ্তিকর।

গে মুত্র গুণ।

कर्रे, जीक् डिक ७ काइविभिन्ने अना बाबूत প্রকোপকারী নতে मधुः গলির দীপ্তিকর, পবিত্র পিতল, বাততে আর শান্তিকর, খুল, গুলা, উদুর-রাগ, আনাহ আদি রোগে'এবং বিরেচরু অভাপন আদি মুবসাধ্য করিব্ विष्कृत वाक्ट्या

মাহিষ্যুত্র গুণ।

ক্ষা উদর্বে গ্রাণ, শূল, কুন্ধা, মেহ, কানাহ, কোফ, গুলা এবংরোগ।

ছাগমূত্র প্রণ।

কাল এবং খাদারোগনাশক; শোষ, কামলা এবং পাও বেরাগছারী; ক্ট্রিক্ত এবং দ্বং বায়ু প্রকোপকর।

নেষমূত্র গুণ।

কাস, প্লীহা, উদরবেরাগা, স্থাস, এবং শোষবেরাগছারী; মল সংগ্রাছৰ এবং লবন, ভিক্ত ও কটুরসমুক্ত এবং উঞ্চ ও বাতনাশক।

অশ্মূত্র গুণ।

আংগ্রিদ্ধিকর, কটু, ভীক্ষু এবং উষ্ণঃ বাভ ও চিভাবিকারনাশ্ক । কুমি ও দক্তেরোগনাশক।

হ স্থিয়ত গুণ।

ভিক্ত এবং লবণ-রসমুক্ত, ভেদক, বাতনাশক, পিতের প্রকোপকর এর ভীক্ষা এই ছতিমূব ক্ষারজিয়া এবং ছুলি রোগো বিশেষ বাবস্থেয়।

গদিভযুত্ত গুল।

ভীকু অগ্নিকর, কৃদি, ব.ভ e কফ ম; হাবল, চিভবিকার এবা এছণীরোগ হিচকারী।

করভমূত্র গুণ।

শোক, কুষ্ঠ উদরবোগ, ভূমাদ, বায়ুরোগ, অর্শ এবং ক্রমিরোগনাশক।
ম'কুষমূত্র গুণ।

্পুর্কোজ্ঞ সমস্ত অশ্যুক্ত এবং বিষয়। দেশ এবং কাল ভেদে এই সর্কপ্রকার মূত্র রোগ বিশেষ ভবাবাহ

জনাদি বিজ্ঞান।

मानिधाना खन।

লোহিত, কমল, কর্মন, পাণ্ড স্থান্ধ শকুনাস্থত, পৃষ্পাঞ্জ, পৃথবীক, ধাশালি, শীত-ভীক্ক, রোধুপ্যস্পাক, দীর্ঘশুক, কাঞ্চন, মহিষ-মন্তক, ছায়ন, কি এবং মহাদুষকাদি ; ইহাদিগকে শালিধান্য বলে।

শালিধানা,—মধুর, লীতণীর্যা, লঘুপাক, বলকর, শিশুনালক, জ্পা বায়ু বং কফ প্রাকোশকর, স্নিপ্ধ, মলের জ্পা লাকারী এবং মলরোধক। সর্বাকার লালিধানোর মধ্যে লোহিত ধানাই উৎকৃষ্ট। লোহিতলালি, বেনালক, শুক্র এবং মূত্রে জ্বিকর, নেত্র এবং অরের পক্ষে হিতলারী, বর্ণ বলকর, হান্য এবং প্রান্তিহারক, ত্রনের পক্ষে হিতলাধক, এবং জ্বর ক্রিক্রি দোষ ও বিধের লাভিকর। জ্বনান্য লালিধান্য উত্তরোভার পা শুন্বিশিষ্ঠ জ্বানিরে।

यक्तिशाना खन।

ৰ্ফি, কন্তুক, মুকুন্দ, পীত, প্ৰমোদ কাৰুল, আসনপূচ্প, মহাৰ্ফি চুৰ্ন, ব্ৰব্ এবং কেদ বাদি; এই সকল ধান্যকে ভাষায় ষাট্ধানা বলে।

वाहे थाना, - ब्रांस वादः शादक मधूर, याङ-शिख्य, छातं श्रांस मानि-ात्मात मनुन, शृक्तिकत, कक वादः छात्कत द्वाक्षिकत्रं। याहेशात्मात मादशा विभागाहेश्राया। यक्तिशाना - श्रंकाः हैयाव-त्रमधूळ, मधू, प्रक्, श्रिक्ष, बामायनामकः (मार्ट्य क्षियं, छ यमञ्जक्षिकाद्री, विश्व क मधूत, मः खादी वादः गानिशात्मात्र मादशा लाहिङ-श्रादमात मम छनकाद्री। मना। याहेशाना ति शद छात्व मान्याः कानित्य।

विशेषांना खन ।

ক্ষাত্রীহী, শালামুখ, জতুমুখ, নন্দীমুখ, অবাক্ষ, ছবিত্ক, কুঁক্টাও,

्वहें आध्याना, - क्यांव मधूर, भारक मधूर वरः भीज वीर्यः नरहा, भणा नेक्द्रत्नाकाती, यिविधारनात सम अनेकाती वरः महमत संख्याहक। वहें वीक्षेथाना सक्तान मध्या क्यवें शेहे सुर्व्याष्ट्रको। हेंदा शस्तु। क्यांव द्रमिति शिष्ट वर्ष । भनामा मर्स्थकात बिही थाना उपत्राखत पण्ण-

मश्च च्याका ज माने धाना खन।

বে সমস্ত শালিধানা দশ্ধভূমিতে উৎপন্ন হয়, ভাছারা শ্যুপাক, ক্ষায়, মশ্মু-অন্ন সংগ্রাহী, কৃষ্ণ ও লেখাছারক।

च्लकाठ धाना खन।

স্পঞ্জাত আর্থাৎ উচ্চতুমিজাত ধান্য, - ঈষৎ ভিজনুক্ত, মধুর, বায়ুও আগ্নিগ্রিকর, কফ এবং গিভাগ, ক্যায় এবং পশ্চাৎ কটু।

रेकमात्र धाना खन।

মধুর, র্ষা, বলচর, পিতের শান্তিকর, ঈষৎ কষার, শুপা মূলকারী-শুকপাক, কফ এবং শুক্রের বর্ষনকর।

রোপ্যাতিরোপ্যা ধান্য গুণ।

राष्ट्रभाक, अञास स्वतकाती, अविनाशीः (म.सप्त, वनकत्र এवर मूखवर्षकः।

कक् इविभिक्षं माणिशाना खन।

যে সমন্ত শালিধান্যের অন্তর অন্কর্বশিক্ত, তাহার। কক্ষ, নলবর্জনকর, ডিজু, কম্ম পিতন শিক্ এবং শ্লেখাজনক।

क्-धाना विक्रान।

ুকোরদূবক (অর্থাং ছোট মটর) শার্মা (অর্থাং শ্যামাতৃন) নীবার (অর্থাং ঝ্রাধানে যে হক্ষ জ্বন ভাষার শস্য শান্তন্ত্, তুরব (অর্থাং আঢ়কী অথবা অরহর ক্লাই) কোফালক (অর্থাং কেনোধান্য) পির্জু (অর্থাং কেঁয়েুগান্য) মধুলিকা, নান্দীমুখা কুফবিন্দ (অর্থাং কুল্ল কলাই) গবেধ্ক (অর্থাং গড়গড়ে বাক্ক, উদ্পানী মুকুন্দ ও কেন্য্যাদি > ইংলিক্ষান্য কুংখান্য কুংহা এই সকল কু ধান্য—উষ্ণ, ক্ষায়, মধুর, কক্ষ্ণ, কটুপাক, ক্ষেত্রা নাশক, বিদ্যোধক এবং বায়ুশিভের প্রকোপকর।

ইহাদিনের মন্ত্র্য, কোন্তব্য, নীবার, শ্যামা এবং শাশুন্থ-ইহারা ক্যায়,
গুর এবং শীত-পিত্তম;

প্রেম চারি প্রকার। যথা ; কৃষ্ণ, রক্ত, শীত এবং খেত প্রিম দু। হারা উত্তরোভর অধিক অধিকতর গুণকারী, কৃষ্ণ, বফছ।

मधूनो,-मधूर এतर जीउन।

नामं मूथी, जिन्न।

করক এবং মুকুন্দ, – অতিখন শে।বনকারী।

বেণু যব, - কক, উষ্ণ-বীষ্য, কটুপাক, মূত্ররোধক, কফল, এবং বাডের প্রকোশকর।

মূদ্য আদির গুণ।

म्ला, रनगुला, कनाव, मकूल, मस्त मनगा, हनक, मजीन (कार्यार महेत) विश्वेष्ठक, स्ट्रान् (आर्थार कनारे विट्निय) अवर आहुकी आपि; देशप्रिक विपन करस्

এই সর্ব্যক্তিকার বৈদল, - ক্ষায়, মধুর, শীভল ক্টুশাক, এবং বায়ুব প্রকোপকর, মল মুত্ররোধক এবং পিতক্তে আনাশক।

এই সকল বৈদ্যলের মধ্যে মূদ্র অথাৎ মূগ অধিক বায়ু র্লিকর নছে এবং দ্ঠির হিতকারা।

বনমুদ্যাগুণ।

অর্থাৎ বনমুগ্য, – মুগের সম গুণবিশিষ্ট্য

্যপূর গুণ।

মহর, — পাকে মগুর এবং ভেজোবর্জনকর।
মকুষ্ঠ (কলাই বিশেষ) ক্রিকর এবং অভ্যন্ত বায়ুর প্রকোপকর।
আচুকী, –কফপিরস এবং বায়ুর প্রকোপকর নছে।

हनक व्यर्थीए (हाना, - वाश्ववर्धनकत्र, मी क्या, मध्त्र, क्याय, क्क, कुक अवः इक्ट्रिक महिक्त अवः श्रक्षक्यामा। स्टब्रम् এवः मुजीन,- मनत्रक्षिकत्र।

মুদা, বনমুদা এবং মন্ত্র ব্যন্তীত সকল বৈদলই আধ্যানকর জানিব।
মায় অর্থাৎ মাধকলাই, — গুকলাক, মলমূদ্ধ ভেদক, বিশ্ব-উষ্ণ-বীর্ষা, র্ধা,
মধুর বায়ুর শান্তিকর, অধিক তৃত্তিকর, অন্যজ্ঞনক, বলকর এবং শুক্ত ও কফ র্জিকর। মায়কলাই, — কষাম্বরস্থুক্ত হইলে মলভেদক, মুক্তবৃদ্ধিকর এবং
কক্জনক হয় না এবং বিপাকে মধুর, গুলবিশিষ্ট অগ্নিনাশক, ভৃত্তিকর, অন্য

जाज्ञ ७ थ। मि छन।

আ, অগুগুপ্ত অধাৎ আলকু নীবীজ, – মাধকলাই সমগুণকারী ক্ষায়প্রয়ুত্ত মধ্যুত্ত ভেদক, কিছা ক্ষজনক নহে, পাকে মধুন, ভৃতিফর, গুনাকর এবং কুচকর।

কাকাগুফল, – আত্মগুপ্তের সদৃশ গুণশালী। বন্যমায়, – কক্ষ্যার এবং অবিদ্হী।

कुलपानि खन।

কুলথ কলাই, — উষ্ণবীষ্ঠা, কৰার, রস, কটুপাক, কফ এবং বায়ুনাশক মলের সংগ্রাহক, শুক্তাশারী, গুলা, প্রীনস, আনাহ, মেদ, কোষ্ঠবদাত হিকা এবং খাদ; এই সমন্ত রোগের পক্ষে ভিত্তকর। রক্তপিতজ্ঞনক এবং কৃষ্ণ নেত্রগোনাশক।

বনাকুলথকলাই, – পূর্বোজ কুংখ কলাই দ্বের সদৃশ গুণশালী, বিশেষ। উবং কবার, তিক্ত ও মধুর, সংগ্রাহক, পিজকর এবং উষ্ণ।

তিল, - পাকে মধুর, বলকর স্মিন্ধ, ত্রণের আলেপনে ছিতকর আমিকু মেধাজনক মুত্তের লাঘবকারী, শুনাবন্ধনকারী, দন্ত এবং কেশের পক্ষে হিত কর, বায়ুনালক এবং গুৰুপাক/

ি সকল প্রকার তিলের মধ্যে ক্ষণাভিল শ্রেষ্ঠ্য খেত তিলমধ্যম, অন্যান তিল নিমুক্ত জানিবে।

यवामि खन।

যার, নধার, নধুর হিমা কট্পাক, কফ পিতাল, অনুরোগো প্রাঃ পুরুরে । ধক এবং পাত ভায় জায় তিন্তার বিদন্তর, পারীরের ছিরতা, পা

মেধা, স্বর, এবং বর্ণকব, শিচ্ছন, মেদ এবং তৃষ্ণা মাশক, বায়ুর অহালাম-কারী, কক্ষ এবং হক্ত শিত্য।

অভিয়ৰ অৰ্থাৎ ঘৰ্ববিশেষ্ট – সকল প্ৰকার যৰ হুইই ত কিধিং অংশগুৰু বিশিষ্ট।

গো ধুন, মধুর, বলকর, গুক, চের্ছাকারী, ক্তিকর এবং শক্তের বর্ষনকারী, ব্রিশ্ব, শীতল, ব রুপিডল্ল, সন্ধানকর, শ্লেমকর এবং সারক।

निया जर्था ए छं ने, - कक्क, करायः , এবং বিষ, भाक, एक, हाय।
पृष्ठित क्ष्मकातो, विमादी करूलांक, मध्त, मलएएकक, उ वायु लिख वर्षनकव।
भाज, तक्क, लीज এवং तळ्वल (ज्या निया वर धाकात ह्या हेदाता वर्ष:क्राम छ। भानी ; त्राम এवং পাत्क करू এवः छक। निया, - मून इहेट्ड, এवः
निज्ञ हेट्ड छेदल हि इहें स्थादक। हेदाता शांदक এवः त्राम मध्य, वनकत्र
भिज्ञ जा छ विमादी, कक्क, व्यवक्कात । श्वादिया श्रीद्वाक इय अवः
वायु त्रुक्त इत्ता। मक्न श्रीकात विमादक व्याधि कन्नाहे व्यापि दिमनदक निया
वर्षाः किहत्त । किन्न श्रीकात व्याधि महास्व श्रीद्वाक ह्या।

শৃত্সী অর্থাৎ তিসা, - উষ্ণ, স্বাহ্ম, বায়ুনাশক, পি.তার বাইনকর এবং কটুলাক।

কুম্বস্ত অর্থাৎ কুমুমবীজ, - রলে এবং পাকে কটু, কককাশক, বিদাহী
মুভ্রাং অহিত সাধক।

সর্যপ অর্থাৎ সরিসা-রসে এবং পাকে কটু, এবং রক্ত গিতের প্রকোপকারী। খেত-সর্যপ, – পুরেষাক্ত সঙ্গপের সম গুণ মুক্ত শিশেষ ৩ঃ ত, ফু, উষ্ণ,
ক্র এবং কলবায়ুর নাশক।

• যে প্রকার ধানাই হউক, উপায়ুক্ত শতুতে উৎপন্ন নাছইলে, বাাধি ধারা নই হইলে, প্রাণালী মতে এবং ভূমিতে না জামিলে, কিছা নুতন হইলে গুণ বিশিষ্ট হয়না।

तृजनधाना, निकटताशकात्री, এक वरैमदत्तव श्रतांजन धाना मम् आनिद्व। धाना दिता दिना दिना विषये विषये

मारम विख्वार।

জনদর, সজল-দেশ বাসী, আমবাসী, মাংসভোজী, একশক এবং জাল এই হয় প্রকার মাংস কথিত আছে। ইহারা উত্রোত্তর শ্রেষ্ঠ অর্ধা জ্বলদর অপেকা সন্থা-দেশবাসী শ্রেষ্ঠ, তাহাপেকা আ মবাসী শ্রেষ্ঠ। অপ লালর এই রূপ জানিবে। ইহারা ছই প্রকার। যথা জালল অর্থাৎ ব্য অবুং অনুপ অর্থাৎ সজল-দেশবাসী।

काक्षण वर्धा

জালল-বর্গ শইষিধ। যথা। জভ্যাহ, বিকির, প্রতুদ, গুহাশয়, প্রাস্থ পান্ম্যা, বিলেশয় এবং আমা।

যাহারা জভ্যাদারা জ্ঞান করে; ভাহাদিগাকে জভ্যাল কহে।

ষাহার। আহারীয় দ্রব্য খুঁটীয়া খায়, তাহাদিগকে বিক্তির কছে অর্থ।

যাহারা বলপুর্বক খাদ। স গ্রহ করে তাহাদিগকে প্রভুদ, গুহাশা এবং প্রসহ কহে, ইহারাও পক্ষী বিশেষ।

এই সকল জালল,দি,গার মধো জভ্যাল এবং বিশির এই ছুই উৎকৃঃ জানিবে।

षाड्यां मार्ग विड्डान।

এণা হরণ, ঋষা, কুরজ, করাল, কুত্রমাল, শরত, ঋদংগ্রু । (অর্থ) কুকুরের সম দত বিশিষ্ট পশু) পুষত (অর্থাৎ ঋতবিন্দু বিশিষ্ট হুগা) অফ জন এবং ম্যামাতৃদাদি; ইংগ দিগকে জন্ত্যাল পশু বলা বায়। ইংগা ক্যায়। মধুর লবু, বাত ও পিরুষ, তীক্ষু, হুদাং এবং বভিলোধনকর।

ध्वन मार्ग खन।

কৃষ্র, মধুর, হাদ রক্তশিক এবং কেফর, সংআহী, ক্চিকর বুলকুর এবং, জরমণ্

रुजिनमाःम खन ॥

মধুর পাকে মধুর, দোৰস্থ, অগ্নিস্থ জিকর, শীতল, মণ-মূত্ররোধক, তুণস্থি। বিং লঘুপাক্।

ক্ষাংশ স্গতক এন, ভাষাংক হিমান হারিন এবং ক্ষাং আধারা ভাষাংশ নাছে। বিহানে আরক্ষ বলো।

মুগণাতৃক। প্রভূতির মাংশ গুণ।

শীভ এবং হক্তপিভয়, স্মিপাভ, ক্ষয়, শ্বাস, কাস, হিকা ও অব্জ ্শক।

विकित मारग खन।

শাব, ভিজিনি, কপিঞ্জল, বজিনি, বর্তিক, বর্তক, নপ্ত কা, বাসীক, চকোর, শবিক, ময়্র, জেকর, উপচক্র, কঞ্চি, সার্জ, প্রপত্তক, কুজিভিরি, কুব্ব হুক্ বং যব্যক আদি; ইহাদিগকে বিভিন্ন জাতি বলে।

বিভিন্ন জ্ঞাতির মাংস, – লঘু, শীতল, মধুর, কধায় এব॰ দে:বছ।

नावनाश्म खन ।

সংশ্ব হী, প্রিকর, ক্ষার-মগ্র গ্লিম্ এবং বিপাকে ক্টুরস্ভ সলিপাতে তপ্রদ

তিভিরিলাংস গুণ

केसर श्रक, उक्ष, मध्य, हक्षा, स्मधा अवर् व्यक्षित अस्ताना अस्ति। वर वर्णात श्रीमाननकत्।

গোর-ভিভিরিমাংস গুণ।

ভিজিরি শাংসের তুল্য গুণবিশিষ্ট, বিশেষত হিন্ধা, স্থাস এবং বীস্কু-শক্ত

(b)

किशिक्षण माःम खन ।

কলিঞ্জন ম'ংস অর্থাৎ চাতকের মাংস, – রক্তলিত্তম, শীতন এবং লমুপাক কফল রোগে এবং বায়ুদদ হইলে ইহার মাংস ব্যবস্থেম!

क्वत्रभारम खन ।

বায়ু এবং পিশুল, তেজকর, দেধা, শারি এবং বলের বর্ত্তনকর। শুলু ও শ্বাজু।

छेशहक माश्म खन ।

উপ্রক্ত আর্থাৎ চক্রবাক বিশেব পাক্ষির মাংস্য – ক্রকর মাসের সম-গুন্দালী এবং ব্যায়, আছু ও লবন-র্মবিশিপ্তি, ত্রক ও কেশের র্ছিকর এবং ক্রকর।

ময়ুরমাংস গুণ।

স্বর, মেধা, স্বায়ি দর্শনে জ্রির এবং প্রাবনে জিরের দৃত্তাকারক, স্নিঞ্চ, উষ এবং ব'য়ুনাশক, র্ব্য, স্বেদ, স্বর এবং বশর্ষদকর।

क्क हैमारम खन ।

ৰন কুক ট মাংস, – রংহণ, বায়ুরোগ, ক্ষা, বনী এবং বিষম-জ্বরয় আমান-কুক ট মংস সম গুণকর কেবল গুকশাক।

প্রভুদ মাংস বিজ্ঞান ।

কলোড, পারাবত, ভৃদরাজ, পরভৃত্ত, পরভৃত্তক, যঞ্চিক, কুলিদ, গৃহকুলি
গোলোড়ক, ডিডিন, মানক, শতপত্তক, মাতৃনিন্দক, ভেদাশী, শুক, সারি
নজুলী, গিরিশাল, আল, দুবক, প্রগৃহী, গুঞ্জরীটক, হারীত এবং দাড়
আদি পকীগণকে প্রভৃদ জাতি বল্লে; ইহার ক্রার, মধুব, ক্লেড

প্রভূদমাংস গুণ

প্রতুদ জাতির পশ্চির মাংস, – বায়ুকর, পিত এবং শ্লেমানাশক, শীতল, মূলরোধক এবং অপপ তেজস্কর।

ভেদাশীমাংস গুণ।

नर्यादमायकत्र अवर मालत (मायझनकः)

কানকপোত মাংস গুণ।

কানকপোত অর্থাৎ কাকের ছানার মাৎস, – ক্যায়, স্থাত্ এবর্ণ লব্নেরস্ক-বিশিষ্ট, গুরুপাক।

भातावक मार्म खन ।

রক্তপিতম, কবায়, বিশদ, বিপাকে মধুব এবং গুৰুপাক।

कुलिक गारम खन ।

কুলিক অর্থাৎ ফিকার মাংস, – মধুর, স্মিগ্ধ, কফ্ ও শুক্রের বর্ধনকর। গৃহ কুলিকের মাংস, – রক্তপিতন;শক এবং অহাত শুক্রের বিকর।

खश्रामाश्रम विकान।

निःह, नार्फ्न, हर, जर्देक्, अर, बीली, मार्क्कात, मृगाल, मृगू এবং अर्काकक जामि, हेरामिशक शर्माक श्रेष्ठ राज ।

छे হাশর পশুর মাংস গুণ।

মধুর, একপাক, স্মির্ধ, বলবুরু বায়ুনালক, উষ্ণবীর্ধানশুর প্রবং চ্ছু গুরু রোগীগণের পাকে বিশেষ হিডকর ধ

श्रहम मार्म विख्वान।

कांक, कहा कूत्रत, हाया जाम, जामाजी जर्गाय गांजशकी, उल्लेक, हिझी, भाग छ गृथ जामितक श्रम ह वरण।

প্রহ্মমাং স গুণ।

এই প্রহস জন্দ সময় সিংহ আদি জন্তগণের সম গুণবিশিষ্ঠ, রস, বীর্ষ্ট এবং বিপাকে, বিশেষভঃ শোষরোগে বিলেষ হিভকর।

পর্ম্গ বিজ্ঞান।

য়ুদা, সৃষিক, রক্ষারিক। বকুশ, পুতিযাস এবং বাসব স্থাদি ই**ছাদি**গকে প্রায়িগ বলে।

পর্ণমাণ্য खन ।

মধ্র, গুৰুপাক, র্ষা, এবং শোষরোগ্যের বিশেষ হিতকর। মশমুত্রের র্জিকর, কাস, অর্শ এবং কাস্থা। সমুক্তক্তাত প্রাণী অংশক্ষা নদীক্ষাত প্রাণী বিশেষ গুণবিশিক্ষা

'বিলেশয় বিজ্ঞান।

भाविध भज्ञक, (गांधां, भभ; ह्रवनःभ; तालाक, तामभ, कर्वकम्भो, प्रग-श्रिक्क, भज्ञगत, भर्श, पृथिक, नकूल এवर प्रकायक आहि; हेर्डाहिगटक विटन-भन्न करू वटल।

विष्त्रभन्न भारम खन !

ভেজ এবং নূত্তের সন্ধানকর, উষ্ণবীর্য্য, পরিপাকে স্বাহ্ন, বায়ুনাশক, শ্লেমা এবং পিত্তর্জিকর ও কাস, স্বাস এবং ক্লশতানাশক।

मामार्ग खन ।

क्याब-मध्द्र, शिष्ठ এवः क्षण्य अल्ग्रह भी व वीद्य नट्य, खळान, दाशुद जनका शाक्ता

प्तवाखन-मर्भन।

(त्राधामारम खन।

পরিপাকে মধুব, কষার-কটুকী, বায়ু এবং পিতয়, রুহণ এবং ব**ল** জিক্র।

नलक्षारम एड

স্বাহ্, পিন্ধয়, লঘু, দ্বী হল এবং বিষ্ণ :

朝日 劉力中日 フルウ

ব যুরোগের ভিতকব।

即有好有人提升 神经

অসারোধ্যের প্রকেছিতকারী।

मर्भारम खन्।

আশনাশকঃ বায়ুন।শা দে স্থাবক, ক্রমি এবং দুবী-বিষ অধাৎ
নাকড্সাদির বিষ নিবারক নেজাবাদেল ছিল্ডন্ত, পাকে মধুব এবং মেধ ।
নিম্নু বর্ত্তনকর। সর্পনিংশ ন গ্রেশ দক্ষীকর অবং ফল্যধারী সপের
নংসু অগ্নির্দ্ধিকর এবং প্রিপানক কটু, মর্ব নেত্তের শিতকর এবং মলমূত্র ও
বায়ুর সন্ধানকর ।

গ্রাম্য বিজ্ঞান।

অশ্ব, অশ্বতর, গো, ধর, খরু, উন্টু, বন্ধ, ওরজ, দের এবং পুজ্কাদিকে গ্রাম্য বলে।

व्याभा भारम खन ।

বায়ুনাশক, বর্জনকর, কফ এবং পির্ক্তকর, রুসে এবং পাকে মধ্র, ট্রাইটার ; এবং বলের বর্জনকর।

श्ख्यारम खन ।

বস্তুমাৎদা অর্থাৎ ছাগ্যাৎল – অত্যন্ত শীবল » নহে, গুরুগাক, স্মির্থ পিত্ত এবং কলের স্মত্তাবার্ক, ক্ষেত্রোগ্রুর এবং গীনগ্রেগার শান্তি-

खेत्रज्याश्म खन।

উর্জ্যাংস অর্থাৎ মেষ্যাংস্য-র্ংছন, পিত এবং শ্লেম্বান্ধর এবং ও

(यम এवः श्रुष्ट्कमाःम खन ।

মের্মাংসের সম গুণবিশিষ্ট এবং রুষ্য।

भनामांश्म खन।

খাস, কাস, প্রতিশ্যার ও বিষম-জ্বরত্ব, শম এবং জ্বিক জ্বরির পা ভিতকর, পবিত্র এবং বায়ুনাশক।

একশফ মাংদ।

গদ্ধত, অখ্ব, অশ্বতর, গৌর-গেরিত এবং চমরী আদি অর্থাৎ যাহাদি। পুর বিধঞ্জিত নতে। ইহাদিগের মাংস সদবন হইলে দেবদাংসের সম্ভ বিশিষ্ট এবং অংশ সেখাকারী হয়।

জাল্ল-বর্গ আট প্রকার যে বলা হইরাছিল তাহা সমুদার বলা হইল।
বে স্কল পশু কিছা পান্দী লোকালরের কি জ্ঞলাশরের অধিক দূ
খাকে তাহাদিগের মাংস অপপ শ্লেমাকর এবং যে স্কল পশু কিছা পা লোকালরের কিছা, জ্লাশয়ের অভ্যন্ত নিকটে থাকে, তাহাদিগের মা শ্লেমাকর।

अकरन चाइलवर्ग चर्था । मजनदम्भवामी मित्रात्र कथा वना इहेत्व।

আনুপৰৰ্গ বিজ্ঞান।

শ্নুপ্রর্গ পাঁচ প্রকার। যথা ; কুলচর, গ্লব, কোশছ, পাদী

क्न हां त्रंश विष्ठान।

থাজ, গাবল, মহিব, কক, চমর, সৃমর, রোহিত, বরাহ খড়রী, গোব শালপ্ত, কোজ, নাজু নাজু অব্লগ্ধ-গাবলু আদি; ইহাদিগত্তে কুর পুত্ত কুকে।

कुन हत्रवर्शित भारम खन ।

, शक-मार्ग खन।

বিকক্ষণ, লেখনকর, উষ্ণ-বীর্ষ্য পিতত্ত্ত্ত্ত্ত্বিকর, আহি, শল এবং শ্বণ-রস-শিষ্ট ও শেলা ও বায়ু নিবারক।

গ্ৰয়মাংস গুণ ।

স্থিয়, মধুর, কাসম প্রিশাকে মধুর এবং জীদংর্গের ব**ছন্দ্র।** মহিযমাংস গুণ।

ধিষ্ণ, উষ্ণ এবং মধুর, স্ব্যা, ভৃতিজনক, গুৰুপাক; নিজা, প্র' স্থুবল বং স্থনাস্ক্রিকর ও মাংদের দৃত্তা উৎপাদক।

क्रक्रभःग खन।

মধুর **শশ্চাৎ কযার, বাত**পিতস, গুৰুপাক ও শুক্তের **র্জি**কর।

ठम त्रभारम खन।

ব্রিঞ্ধ, মধুর, কাসস্থ, পরিশাকে মধুর এবং শায়ুশিতম।

मुभव्रभार्म खन।

মধুর পশ্চাৎ ক্ষায়,বায়ুপিতছ, গুৰুপাক এবং শুকো: বুজিকব।

বরাহ্মংস গুণ।

স্ফোদকর, বর্ষনকর, রুষ্য, শীভল, ভৃষ্ঠিকর, গুরুষ্ধার্ নাশক এবং বলর্দ্ধিকর।

থজাীমাংস গুণ।

খড়রী গণারকে বলে। গ্রারমাংস, – কক, দ কবার, বু'য়ুন্লক, বিরুদ্ধেক,

त्या-कर्मारम खन।

মপ্লর, স্নিঞ্চ, মৃহ্চ কফকর, পরিপাতেক মধুর এবং রক্ত-পিড়ায়;

প্লববর্গ বিজ্ঞান।

হংগ, সারস, ক্রেঞ্চ, চক্রবাক, তুরর, কাদধ, কাদম, জীবজীবক, বক, বলাকা, প্রত্তীক, প্রব, শবারীমুখ, নন্দামুখ কদ ৪. উৎক্রোশ- কাচাক্ষ, মলিকাক্ষ, শুক্রাক্ষ, প্রকরশারী, কাকে নাল কাম্বু, কুক্টুটিকা, মেষরাব এবং খেত চরণাদি; ইহাদিগকে প্লব কছে। ইহারা ছলে ভ সিয়া কিম্বা লাকা-ইয়া বেড়ার।

अतदर्शित भारम छन।

রক্পিতিয়, শীতল স্থি, র্যা, র্যা, ব য়ুবাশক, মলমূ,তার বর্ষক এবং রসেও গাংকি মধ্ব ৷

কে:শস্বৰ্গ বিজ্ঞান।

শুখা, শুখানখা, শুক্তি এবং শাস্কু কাদি। ইহাদিগকে কোশস্কুচৰ্গ কছে।

পাদীবর্গ বিজ্ঞান।

ज्य, क्षीत, कर्कंडेक, क्रक्षकर्कंडेक এবং निखमात्र आर्मि, हेश्मिश्क शामोवर्शवरमा

শেখ এবং কুর্ম প্রভৃতির মাংস গুণ।

রুসে এবং পাকে মধুর, বায় নাশক; শীতল, স্মিন্ধকর, পিছের হিতকর, তেজোর্ছিকর এবং শ্লেষার বর্জনকর।

क्ष कर्क हैक मार्म खन्।

केषङ्कः, वाञ्चनाणक এवः वनकद्र।

শুক্ল-কর্কটমাংস গুণ।

नकात्रुद्ध मनम्बकत अवर वार्ष अलिख्य।

बद्मवर्शिवळान।

মংসা ছই রূপ। যথা; নদীলাত এবং সমুস্তজাত। স্পার ফুড কূপ-াত এবং বাপীজাত। সরোবরজাত এবং তড়াগাদি-জাত মংসা জানিতে ইবে।

निमेका उ मदम वर्जी।

রে হিড, পাঠীন, (অর্থাৎ বোয়াল) পাটলা, রাজীয় (অর্থ ৎ রুহৎ াৎসা বিশেষ) (বর্মি অর্থাৎ বানি-মৎসা) গোমংসা, রুফামংসা বাগুঞ্জার, রুল ও সহজ্ঞ দংক্টু আদি; ইহাদিগকে নদীজাত মংসা বলে।

निषां प्रथम छन ।

মধুর, গুৰুপাক, এবং বায়ুন শেক; রক্ত পিতাকর, উষ্ণ, র্না, আরি এবং মংশা তেজাকর।

রোহিতমৎস গুল।

ম ধুর, অর্থাৎ কষায়, বায়ুনাশক, এবং অপ্পাশিক্তর্ন্ধিকর। ইহারা শৃপ্য দর্থাৎ নূতন যাদ এবং শৈবল অর্থাৎ শেওলা ভক্ষণ করে।

পাঠিন মৎস গুণ।

(অর্থাৎ বোরাল মৎসা রোত্মকর) র্ষা, এবং নিজাকর। ইহারা আল পিতকে দূষিত করে, এবং কুর্তু রোগ উৎপাদক। ইহাাদগকে মাংসাশী দানিবে।

बुद्रेश महम खना।

त्रं इन, त्रवा, खना এवर (लचकत्र)

রায়মৎস গুণ।

মধুর, ধাতৃপোষক, শুক্র এবং ধাতু রাজিকর।

সরল পুঁটিমংল গুণ।

जिय जरूर मूथ्दत्रांग ७ कर्नद्रांग नामक।

ञेषर পाखु त गरम छन।

মধুর, স্থিয়, ধরেক এবং শুক্রস্থাকিকর।

खित्रलय्ट्म खन।

স্বাহ, স্বিষ, শুক্র এবং কফ রুত্তি দর।

मक्नम एम खन ।

মধুব, ধারক, কক, এবং আম ও পিত্তের পক্ষে হিডকারী।

মাগুর মৎ গ গুণ।

বায়ু নাশক, স্মিশ্ব এবং গৃহ দোষয়।

न्स्रिंग्ट्म खन ।

ওৰুপাক, ধাতুপোষক, ক্যার হস বিশিষ্ট এবং পিডয়।

कन्देम्दम खुन।

ে আড়ে স্লিষ্ধ, গুৰুপাক, বল এবং শুক্র র দাকর।

विक्राधारम छन ।

গুৰুপাকু, ধারক, মধুররস, বলগ্ধবক, দেধ এবং রক্তপিভের হিতকার ধাতুপোষক, কচিকর এবং কফ ও বায়ুর বৃদ্ধিকর।

विहिन मूरमञ्जल ।

मध्य । त्रक्ष, रतकत, कक अवर व श्रूना गंक।

(5९ मरमखन।

ু লঘুপা∱ন, বা হরোগের হিতকর, এবং ≪চিকর।

ति इंग्रेंग्रेग्रिंग

मध्र, कल, कवाम, भी छन अवः नघुशाक !

भक्दतभर्ग खन्।

বা হয়, স্লিশ্ব এবং শুক্র ও বল স্কুদ্ধকর।

বাটামৎস গুণ।

স্বাহ্, গুৰুগাক, স্মিষ্ক, স্লেখার্ডিকর এবং বায়ু ৪ কফ নাশক ৷

এलिकाम्बर्ग खन ।

मधूर, भाकृत्शायक, भात्रक अवर कक ख व सू मानक।

(वरमयरम खन।

লযুপাক, কক, এবং বায়ুর্দ্ধিকর।

हिहिना (तत्नम् न खन ।

লঘুপাক, মধুর, আছে, পিতায় এবং বলকর।

मितितायरम खन।

মধুব, ধাবক অগ্নির পক্ষে হিতকর এবং গুরুপাক।

म्जकमदम खन।

७ मधुत्र, এবং বলকর।

ठम्लक्क्मग्रहम खन् ।

গুকণাৰ, ধাতু পুষ্টিকর, মধুরী, বাভপিঞ্লের পক্ষে হিতক রী।

माफिकांबरन खन।

ক্ষন্ন, তিজ্বস, বাত পিজের হিতকর এবং ললুপাক।

किन्द्रास्थ्य छन्।

किक, भागवात्री, रकनामक अवर मधुलाक।

विषय प्रम खन।

मधुत् थित्र, व युर्गभक् अधाकत्र अवः अस्त्राकः।

थिनिमां यर्म खन।

थात्रक, कवात्र, जाश्चव टकाण इक्तिकत्र ।

श्रकाष्ट्रियस्य खर्ग।

षाञीर्नकत, धक्राक, এवर (श्रंषात्रिकत्र।

शूँ हिंग छन ।

ভিক্ত, কটু, স্ব ছ: শুক্রার জিকর, কক এবং বায়ুনাশক, স্লিয়া, মুধরে গ এই কুষ্ঠুরোগের পক্ষেত্রহিত্তর।

মৎদ কুর্ম এবং পক্ষী আদির অওগুণ।

আহে, অসীর্ণকর, বুকটুপানী, ক চিনর বাত ও স্লেঅ র পকে হিতকর।

मक्षेप्टम खन।

সমুদার মংসদত্ত,—গুৰুপাক, ধাতুপৃতিদর শুক্রর্মাকর, প্রাণবাঃ
বর্দ্ধক, ক্ষাণশুক্র এবং জ্বাব্যক্তি ও নিত্য জী সঙ্গমকারী ব্যক্তি; ইহাদিনে
পাক্তে তৈল এবং লবণ মিশ্রিত দ্ব মংল্য জ্বল করা বিধের। সলব
মংল্য পাত্রে বৈজ্ঞান করিরা কর্মণ দ্বারাণলেপ দিরা ক্ষাণরে দক্ত করিছে
ভাষাকে দ্বামংল ক্রে। ভাজানংল দ্বাহণ্ডল অপেকা গুণে কিঞ্চিৎ ম্ব

मत्त्रावत्र । उद्योग का उभरम खन ।

श्चिकत्र, এवर मध्त त्रम विणिक ।

महारम कांड मरम खन।

রূপকর।

यान जान जान रहत अने।

विकास नरहा । अवस्था

स्यामकाठ मरम वर्ग।

তিমি, তিমিজিল, কুলিল, পাকষংস, নিরাশক, নিলিবারলক, সকর। গর্গরক, চন্দ্র, মহাঘীন, এবং রাজীবাদি, ইহাদিগকে সংমুজেক অধাৎ সমুজ-জাতুমংস কছে।

.সমুদ্ৰজাত মংস গুণ।

গুৰুপাক, স্মিন্ধ, মধুন; স্মাপা পিতার্জিকর, উষ্ণ, বায়ুনালক, রুগ্য ভেজস্কর, ও স্লেমা বর্জনকর। সমুদ্রস্থাত মংস-সঙ্গ মাংস ভঙ্গণ করে। ভক্ষন্য বিশেষ বল্লালী হয়।

ক্ষুদুক্পজাত ও কৃপজাত ২৫ ।

अधुनाभक, हेरांद्री नामृजिक मरना जाताका कविक छन विभिन्ने।

বাপী-জাত মংগণ্ডণ।

বিশ্ব, পরিপাতে স্বাহ্; ইহারা ফুত্রকূপ এবং কুগ্রাছ-মংস সংশক্ষা অধিক গুণ বিশিষ্ট।

निकां कार्म खन।

ইহার। মুখ এবং নাজনাভিন্ন বিচরণ করে, তক্ষনা ইহাদিণের মধ্যদেশ গুক্পাক।

সেরে বর এবং তড়াগজাত মংসক্র।

ইহাদিশের শিরোভাগ অর্থাৎ মুড়ো বিশেষ লঘু।

যে সকল মংস মৃতিকার শুদুরে বিচরণ করে, এবং বে সমস্ত মংস উৎসের শর্বাৎ নিম্বরের জল পার করিয়া জীবিত থাকে, তাহাদিণের শিরোভাণের শুপ্সভাগ ভিন্ন শুপুর সকল শরীরই অত্যন্ত গুরুপাক।

मृद्रावत कांच मरमगरिशत जायांकांग मगुनातरे, अस्त्राक धरः जाराता । উরোদেশ সঞ্চাননকরিয়া অমণ করে, তাহাতে ভাছাদের পূর্ব্ব অবী অর্থাৎ উর্ব্বিশ্বা বন্ধাক জানিবে।

: जन्मसम्मनामी चलास (अन्यरित<u>ी।</u>

অধন মাংস বিজ্ঞান।

মাংস বর্গের মধ্যে শুক্ক অর্থাৎ শুটকি, পুভিগন্ধ বিশিষ্ট অর্থাৎ শচা-পীড়িচ, বিবাক্ত সর্পদারাহত, বিবলিস্ত, অক্তাদি দারা বিদ্ধা জীপ অর্থাৎ পাকা, রুশ, বাল, এবং যাহার আগন আপন প্রাকৃতির বিক্কাচারী; এই সকলের মধ্যে অভক্য অর্থাৎ ভক্ষন করিবেনা।

অধ্য মাংস গুণ।

ৈ শুক্ত মাংস,—জ্বাচিদর, প্রতিশারেকর, এবং গুরুপার। বিষ অধবা বাাধি দারা হত এরপ জন্তর মাংস ভোজনে মৃত্যু হইরা থাকে। বাল অর্থাৎ তবল জন্তব মাংসে ছর্দি জ্বেছ, জীর্ন মাংসে,-কাস এবং খাসরোগ উৎপন্ন হয়। প্রাভিত জন্তর মাংসে তিলোবের উন্নতি হয়। ক্রিন অর্থাৎ ক্রেদ্যুক্ত মাঃসে,-বমী হইয়া বাকে, কুল জন্তর মাংসে,-বায়ু কুপিত হয়।

উछ्य याश्म विकाम।

চতুপাদ অর্থাৎ চারিপাবুক্ত অন্তদিগোর মধ্যে প্রীর অর্থাৎ মাদীর মাংস শ্রেষ্ঠ। পশীদিগোর মধ্যে প্রকাষর অর্থাৎ মর্দার মাংস প্রেষ্ঠ। রহৎ আকার জন্তর মধ্যে কুলাকারদিগোর মাংস প্রেষ্ঠ, কুলে আকার জন্তরদিগোর মধ্যে রহৎ আকারদিগোর মাংস অ্রেষ্ঠ এবং এক জাতীর জন্ত দিগোর মধ্যে মহাশারীর বিশিক জন্ত অপেকা কুলেশারীর জন্ত প্রেষ্ঠ।

कछिपिरगत भन्नीरतन थाजू जवर छाहनत मध्

রক্ত, মাংস, মেদ, অন্তি, মজ্জা এবং শুক্তা; এই প'তু সমূদ্ধের মধ্যে পার ুপার গ্রুতর। রক্ত অপেকা মাংস, মাধ্য অলেকা মেদ, মেদ অপেকা অন্তি, অন্তি অপেকা মজ্জা এবং সাকাপেকা শুক্ত গুরুতর হয়।

সমূহ প্রাণীরই শরীরের মধ্যে মধ্য ছান গুৰু । পুৰুষ প্রাণীর পূর্বভাগ এবং জী প্রাণীর অধ্যোভাগ গুৰু। পক্ষী জাতির উক্ ; এবং ঞীবা গুৰু। পক্ষী সলক উর্দ্ধে পক্ষ নিচক্ষণ করে, ভজ্জনা তাছাদিগের মধ্যভাগ সমান। ফল-ভৌজী পক্ষীদিগের মাংস অভ্যন্ত কক্ষ। মাংসাশী পক্ষীদিগের মাংস অভ্যন্ত বর্ধন-কর। মংস-ভোজী পক্ষীদিগের মাংস পিত্ত রুদ্ধি কর। ধান্য-ভোজী পক্ষীদিগের মাংস বিভিন্ন।

জনচর, সজন-দেশ জাত, আমা, বাংস-ছোজী, একণক প্রসহ, বিলবাসী, জভ্যাল, প্রাচুদ এবং বিক্ষির; এই সমূহ জন্তু পর পর লঘু এবং পর
পর অসপ সেন্থাকারী। অবাৎ জলচর অপেকা সলল-দেশ-জাত, সজনদেশ-জাত অপেকা আমা, আমা অপেকা মাংস-ভোজী, বাংসভোজী
অপেকা একলক একলক অপেকা প্রাসহ, প্রসহ অংপকা বিশ্বাসী,
বিলবাদী অপেকা ভঙ্যাল, জঙ্যান অপেকা প্রতুদ এংং প্রতুদ অপেকা
বিক্ষির লঘুতর জানিবে। ইহা বাতীত জন্ত সমূহ পুর্ব পূর্ব লঘু এবং পুর্ব

অ অ জাতির মধ্যে প্রমাণাধিক জন্তুদমূহ স্থপ বলকর এবং গুৰুপাক।
সমস্ত প্রাণীর সমস্ত দেহ হইতে যে সকল প্রাধানতম যক্ত প্রাদেশবন্তী দেই
সকল গ্রেহন ক্রাই বিধেয়, প্রাধান অভাবে মধ্যম, তাহার অভাবে সদ্যোজাত অক্লিফ বাংস বাবতেয়ে।

मारम निष्क्र,न ममार्थ।

भरमहापि मः युक्त वहक्षन विक्कान।

পটোলপত্র সংযুক্ত মৎদের ব ঞ্চন গুণ।

जीर्ज्यत এरर वाज्यहा नामक।

भारतीय मेर्युं क मर्दात वाञ्चन छन।

কক এবং পিত্তমু, প্রিয়, ক্রিকর, এবঃ অগ্নি, ভৃষণা, জ্বর, মের এবং বিদর্প রোগ নাশক।

ব র্ত্তাকু সংস্কুক্ত মৎসের ব্যঞ্জন গুল ।
• স্কুপধ্য কফ এবং পিতন্ত্র অগ্নিশুর কৈচিকুর এবং বাধনাশক।

' তৈলের গহিত কিন্দ্র মৎস গুণ।

िश्रीय, क्रिक्त, এवर अधुलाक

ম্বতের সহিত সিদ্ধ মৎস গুণ।

, कक्षाक, अदः अधिनां भक

ক্লার গেড়ো সংযুক্ত মহলের ব্যঞ্জন গুল। বাতপিত্যু, ধাতু প্রকির ক্যায়, মধুন, ক্তিকর এবং গুক্গাক

मर्गत घन्छे खन।

খাতুপ্তিদর, দোষাকর, এবং ওকপাক।

कारुषा मरशुक भरमात वाञ्चन खन।

আছে, বাত্মু, ধারক; অগ্নিকর, ফচিচর, শুন্মু, রক্ত মাংস ই দ্ধিক; শ্বনাস্ট) বায়ুনাশক, ধাতপুঞ্জির, ক্যার, মধুর, প্রিন্ন, পিত্মু এবং ্ফ্চিকর।

শাক সংযুক্ত মৎসের ব্যঞ্জন গুল।

ভিক্ত, ক্রিকর, এবং বফলিত্তন। শব।

क्षिश्रीष्। मः युक्त भ ९८मः। वाञ्चन छन ।

ঝামুলা জ্বাং শোধ এবং জ্বন্ন জ পার্ম র্দ্ধিকর, জ প্রায় নাশক, লঘুপাব স্মোপাত, এবং মেইনাশক।

क्षा ७ मर्युक मर्टमत वाक्षन छन्।

ধা হু রিদ্দির, রক্তপিত, কুই, মেছ এবং কি মনাশক।

ृणभामः यूष्ण भ ९ ८ गर्भ व उञ्जन खन।

एं इ किन्द्र।

तिया मर्युक मर्तमत वाञ्चन खन।

क्षांशिख मडेकत्र!

মূলসিংযুক্ত মৎসের ব্যঞ্জন গুণ। কৈচিক্তঃ, শন্ধিক্ত, এবং ক্রিমিক্ত মন্বিদ্ধি, এবং ক্ল ও বাক্সালক।

सकाया मध्यमबद्दमह शक्य वर्ते।

क्ष । वृश्विमानक वर्षः श्रं जू शृक्षिकः

वर्षे मृश्युक पर्दम् त्र वाश्वन छन्। याष्ट्र भूकिमत्र, এवर उक्तिक, क्षे त्रक, क्रिम, अवर विषय।

भाग जरश्रक मद्दरमंत्र याक्षन । भूग, उन्द्रकका, बाज्यसमा जरेर कार्ष्ट्रका नामकः व्यितः शोहकः व्यवस् धिकतः

তে ভূল সংযুক্ত মহুদের ব্যঞ্জন গুণ। উক্ত, বন্ধনল এবং কলনাশ ; অগ্নিকর এবং ফ্রিকর।

- ইঞ্জাক সহিত মংসের ব্যঞ্জন গুণ। মধ্র, প্রির এবং অজীন জ্বনা বায়ুনাশক।

্ ইঞ্ছাকমূল সংযুক্ত মৎদের ব্যঞ্জ গুণ। ক্টিকর।

अञ्जी मः युक्त मर्मात वाक्षव छन्। भामवाच्या

সোন্দালিয়া পত্র স বুঁক্ত মহসের বাঞ্জন গুৰ।
আমবাত, কটুশুল, এবং কোষ্ঠবঁদ্ধ নাশক। অর্ণেরি ছিতকর।

माछ तात्र महिल हिला ए। भरतात् वाक्षन छन।
मध्य छक्षाक, मुख्य किन्द्रा मिलाका क्रिका व्यव क्रम महत्व।

्रेक्निक नर्युक भर्टम याञ्चम छन।

थितः किन्द्रः क्येलिक अवर भूगनाणकः किन्द्रिकतः अवर वाज्यनः।

े जासिक मध्यक प्रश्ति बाक्षम खन ।

अभवस, उन्दर्कणा, वाज्यामा, এवर विषया नामकः किनद्र अवः व्यक्तिद्वासकद्र।

আক্ষাদি প্র সংযুক্ত মংসের বাঞ্জন গুণ। ' অশ্নাশক, অগ্নিস্থ ক্ষর, ফ্চিক্র এবং পাকে মধুর্'।

জামরুল সংঘুক্ত মৎদের ব্যঞ্জন গুণ!
কক, ৰাভ এবং আমশুল নাশক; ধারক, অগ্নিকর, প্রিয়, কচিকর এব
বায়ুর অধোকারী।

আমানি সহিত মহসের ব্যঞ্জন গুণ। শীপক, কচিকর কফ-বায়ু নাশক, প্রিন্ন এবং স্বাহ।

ফল বিজ্ঞান।

অন্নবর্গ।

দাভিম, আমলক, বদর, (১)কোল, (২)কর্বকু (৩) সেবির (।
সিখিডিকা কল (৫) কপিথ (৬) ম তুলুল (৭) আত্র, আভক, (৮) ক
মর্দ্ধ (১) পিয়াল, লকুচ (১০) ভবা (১১) পরাবভ (১২) বেত্রকল প্রাচী
আমলক, ভিন্তিভ়ী (১৩) নীপ, (১৪) কোলাত্র (১৯) অসিকানারল এ
জ্বীরাদি; ইহাদিগকে অস্তর্গ বলে।

প্রমাধর্ম ফল গুল

जिल्लाम विभिन्ने, धरुशांक, रहेशवीर्ष), शिष्ठक्रवेत, वाश्चवाणक, का हिरहाल करा

क दिन्द्र । २ तम्त्रो क्ला । ७ क्ला वनत् । ४ महादम्त् । ४ नमीर ७ क दिन्द्र वन । १ हो दिन त् । ७ मामणा । ० क्यम् । ३० मानात् । ४० हो ७२ श्रीवेषन् । ३० (उँजून । ३६ क्मम । ५८ (क्वण्डा

माजिय कम खन।

পশ্চাৎ কৰার রস, অংশ পিতকর, অন্নিকর, ক্তিকর মুখপ্রির, তেভের । লবরোধ কর। দাড়িম হ্ইপ্রকার। বথা। মধুর এবং অল। মধুর ছইলে তিদোবের অর্থাৎ বায়ু-পিয়াও কফের শান্তিকর, এবং অল ছইলে কফ এবং ায়ুর শান্তিকর হয়।

आभनकी कन खन।

মধুর রদ বিশিষ্ট, অল, তিজ্ঞানার, কটু, সারক নেত্রের হিডকারী, কিল দোবের শান্তিকর এবং স্থা। আধ্যানককলের অলভার দারা বায়ুর নিতি হয়, মাধুর্য্য এবং শীতলভার দারা পিতের শান্তি হয় এবং কৃক্ত ও বার তাবের দারা লেখার শান্তি হয়।

এই भामनकी कन मकन क(नत म(४) उँ एक्ट ।

আমলকী বীজশাস্য গুণ। কৰায় মত গজনক এবং অমলকীর গুণ বিশিষ্ট।

হরিভকী কল গুণ।

হরীতকী সপ্তপ্রকার। স্বেহ পানে জীবন্তী, ক্ষরেরাণে রোহিনী, সকল
র্মে বিজয়া, লেপনে পুতনা, বিবেচনে অমৃতা, নেজরোণে অভ্যা এবং কার্থে, কনিকা ব্যবহার করা বিধেয়। হরীতকী লবন সংমুক্ত হইলে বায়ু
ট, মধ্ সংবোগে পিতনন্তি, এবং শুতী সংযোগে কফ নস্ত এবং গুড় যোগ, সর্বপ্রকার ব্যাধি নন্ত করে।

हत्रोजकी बीजनगणना

চকুর হিভকারী এবং বাভপিত্র ।

रहिएं। कन खुन !

ভেন্তী, তীক্ষ্ণ, এবং উষ্ণ ; বিৱস্য, এবং জেনিনাশক, চক্ষুর বিভকারী এবং কি অনুত্র, কথার বসবিশিষ্ট, এবং কফ পিতনাশক।

वर्ष्ण वीक्यमा स्था

िशिशाना, रुक्ति, कक अवर वाञ्च नाणक, अवर ब्लेशीकी

A. A.

विक्रमा ख॰।

किर्मायम् अवर मन रखनम् ।

কুল এবং সেহাকুল ফল গুণ!

কক এবং ব'রুনাপক; প্রক ছইলে, — ব্রিঙ, মর্র রস বিশিষ্ট এবং পিডার অর। শুক ছইলে, – বায়ুরোগ নফকরে এবং পুরাণ ছইলে, ভ্রাণ এবং মাশক এবং অগ্নিও সমুপাক হয়।

कूनदीसमा खन।

मशूर तम विणिके, शिख, इकि, धर एका नामक।

कर्कक्रु, क्लांग ध्वेश वनत कन।

অশক কর্মু, কোল, এবং বদর, - পিন্ত ও কক্ষ বৃদ্ধিকর। এ স্ব প্রু, ত্ইলে, - অন্ত কগুব, সারক, এবং বায়ুপিতের শাত্তিকর হয়।

পুরাতন কুল গুণ।

তৃষ্যার শাভিদর, প্রথ নাশক, অগ্নিদর এবং সযু।

मोबीत छ यमत खन।

ব্দিখ, মধ্র এবং বায়ু পিজের শান্তিকর।

সিমিতিক। কল গুণ।

व्यर्वार विमेशका। कक्षात्र, व्य इ, अस्वाही, वदर वीडन।

किनिय कन छन।

্তিৰ্বাৎ করেতবেল। অপক কলিখ,—বরের শহিতকর, ককনা লংগ্রাহী, এবং বায়ুর্বিকির। পক কলিখ,—বাতদেখার পাতিকর, দ ভালরন বিশিষ্ট এবং গুকশাক।—খান কাল প্রবং ডুক্চি বাল্ড, ং বিবারক, এবং কুঠা পোধনকুর।

Canada esta l

मार्म्य-गम छन।

वर्षाद है। बार्टियू । नयुशाक, क्षेत्रज्ञिकि, व्याप्त क्षेत्र वर्ष यु क क्षेत्र क्षेत्

পাতিদেবু ফল গুণ।

ু সুগদ্ধি, স্বাহ্ন, অঙ্গ, ফচিকর ছর্দিনাশক এবং স্থপিত্ত র।

(भाषात्मयु कम खन।

কিঞ্ছিৎ মধুব, অভ্যন্ত পিত্তকর, গুরুপাক। পক গোঁড়ালেরু – জার রক্ষ্ বায়ু এবং কে,প্রস্থান উকর।

कमनारमयु कुन खन।

শীতল, শ্লেমার প্রকোপকর, মুখের বৈজ্ঞাত,হর, ক্রিকন, আহু, গুৰু-

নারাদা লের তাণ!

धक्नाक, ज्थिक्त, केयर बध्द दम विभिन्ने, वनकत्र, धवर वाश्चनाभक।

काम कन।

কচিন্দান, লাগত এবং বায়ু র্দ্ধিকর। যে পাত্রের কেসর বিশিষ্টাটো, শিতকর, মুখপ্রির, বর্ণকর, কচিকর, রক্ষমাৎস এবং বলর্দ্ধিকর, মধুর, পাতি হ কবায়, বায়ু নাপক; তেজার অবর এবং গুরুপাক। প্রক্রান পিছেই বিরোধী, ভক্রেজিকর, তেজের র্দ্ধিকর, মধুর, বলকর, গুরু, বিশ্বী অন্ত্রীন করিয়া সাপনি জীব।

আমৃতিক ফল তাব।

অর্থাৎ আমডা। র্ষ্য সম্প্রহ এবং লেখ র র্জিকর। (মতান্তরে) আবিড়া, – তৃতিজনক, বলকর, ঝাতরোগা এবং অজীবকারক।

ে 🦠 🦠 পানী আমড়া ফল গুণ। "

ধারক, স্বান্ত, অল এবং কচিকর।

क्षेत्रं इ.इ. खन।

তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, কটুপাক, অম এবং পিতকর।

লকুচ ফল গুণ।

(অর্থাৎ মাদার ফল) ত্রিদোষ এবং বিফক্তকর ও ওক্তনাশক।

कत्रमिक्न खन।

(অর্থাৎ কর্মচা) অল রসবিশিষ্ঠ ভ্ষণানিবারক, ক্চিকর ও পির্ক্তকর।

পিয়াল ফল গুণ।

ৰায়ু পিতন্ন, হ্ৰষা, ওক এবং শীতন।

ু ভবাফল গুণ।

্ (অর্থাৎ চালতা) মুগপ্রির, আহু, করার ও অল রসবিশিপ্ত এবং মুখ-ইশাধক, পিডালেখানাশক, মল সংগ্রাহকর, গুক্ত, বিফন্তী ও শীতল।

পারাবৎ ফল তেওঁ।

(वर्षार गांव कन) मधूत, किंहत, अलाक्षि, धवर व शूनामक।

नीय ७ थाहीन व्यामनक कन खन्।

विकित नावनक मधीर शाका जामनक) रेरक्षा ज्यादिताम नामक।

আমাত বিড়ী কুল গুণ।

विषय राहा (रुप्त) राम् नामुक, शिक व्यर मियानाती।

ৰ পৰ্ক ডিন্তিড়ী কল ভূণা 📧

मर्गे मरखाद्रक छैक, णामकत, कहिक्क, भरर क्क ७ वासू प्रमत्काती।

क्रमा खर्गन्मार्गि ।

(कार्याय केन खन।

(जर्बार रेक्टज़ करा) जिल्लि जैं। जर्मा किश्वर क्रम कर्गविनिके।

व्यक्तिका कन खन ।

(অর্থাং' ভেঁডুল বিশ্বেষ) প্রক ছইলে, ÷ পৃথেবিভিক গুণবিশিষ্ট এবং ভেদক।

নারক ফল তাণ।

মধুর রস বিশিষ্ঠ অসরস, ফান্য, বিশদ, এবং অফ্চি নাশক, বাতনাশক, হক্তর অর্থাৎ আশু জীর্ণ হয় না এবং গুক্সাক।

काशीत कन खन।

ভৃষ্ণী, শুল, কফ উৎক্লেণ, ছর্দ্দি এবং স্বাসন্ন, বাভল্লেন্ম এবং বিবন্ধন্ম ভক্ষাক এবং পিতকর।

এরাবত ফল গুণ।

(जर्था ६ त्न त्रिया) जल इम विभिन्ने, पास्त अ अ अ कि ने विकास विभिन्ने ।

काइइक कम वर्ज।

ক্ষীরব্ধ-কল, – জাষব, রাজদন, ভোদন, তিন্তুক বকুল, ধরন, কাষ্ট্রক অ্থাকর্তা, কলগু পার্যক, গাড়েন্ট্রকী পুষ্করবন্তী বিলু এবং বিষী আদি কল প্রধান শীতল কফ এবং পিন্তর, মল সংগ্রাহক ক্ষা এবং ক্যার মধুর।

की तहक क्ष छन।

की तहक, - जर्था ६ वर्ष व खळक व त, जायथ, जिहीक এवर शाकूछ ; अहे भेडिंग हरूं के दह। देवहति हात कन, - श्रक, विकेटी, जीवन, कवात. भूगतम विभिन्ने अवर मध्रत ७ वायतीक कत नहरी।

T PO PAPER W

व्यक्ति व शुद्धक्तिका वर्ष मा आहरू वर्ष कर व निका ।

त्राकानन कन छ।।

चित्रं, चाह्र, करात्र बेदर शक्नशंक ।

তোদন কল গুণ।

क्योत्त. मधुत, कक अर्थ कर्फ राधुनास्तित्तत्र; क्रान, खेरू, नघू जःधारी विकार शिख अरथ क्याहिक्तता

িতিম্দুক ফল তাণ।

অভাক ভিচ্ছক, – কৰাৰ সংগ্ৰাহী, বায়ুব্ৰছিকৰ এবং বিপাৰে বহু। পক ভিত্ৰুক, – মন্ত্ৰ এবং কফ ও পিড়ন।

दक्ष कन खन।

্মধুর, কনার, ব্রিশ্ব। সংগ্রাছী, দভের দৃঢ়ভাষারক এবং প্রাসমকর।

धञ्च कन ७० । क

্কৰ'য়ে, ছিখ, স্থাড় 'এৰং ব'য়ু ও ককল 🗄

गारकक्रकी ७ अभुस्क कन एव।

भारतको वर्षा (गावक हाउँ निवार) এवर व्यवक वर्षा व व्यवहार वर्षा व

कल कन खन।

्यार्थाः काक प्रमुद्धः विश्वतः विश्वतः स्वयतः स्वयतः स्वयः व्यवस्थितः विश्वतः व्यवस्थितः विश्वतः विश्वतः विश्वत

श्री कर कर है

THE THEORY OF THE PARTY STATES AT PROPER STATES

शुक्ततवडी कन खन।

(অর্ধাৎ পশারীর) স্বাহ্ন, বিশ্বন্তী, বলকর, কক্ষর, গুক্র, পরিপাকে গুর, শীতল, এবং রক্তশিত পরিকারক।

• বিশ্বফল গুণ।

অর্থাৎ বেল, অপক বেল, — ৰক্ষ এবং বায়ু নিবারক, ত ক্ষু, শ্লিঞ্জ এছি, দীপন, কটু ভিক্ত, ক্যান্ন এবং উষ্ণ। প্রক বেল, — প্রশাহ মধুর ন বিশিষ্ট, গুৰুপাক বিদাহী, বিষ্টম্ভকর এবং দোষকারী।

অশ্বরণ এবং বিশ্বীকল গুল।

ন্তন্ত্ৰারক, কফ এবং পিত্তম ; তৃকা, দাহ, আুর, রক্তপিত, কা্স খাস বংক্ষম ।

তাল আদি ফল বর্গ।

ভাল, নারিকেল, পানস, এবং মেচি।দি ফল সমূহ পরিপাকে এবং রসে গুর-রসবিশিষ্ট; বাত পিশুল, বলপ্রাদ, স্মিগ্ধকর এবং হিমগুণবিশিষ্ট।

ाम कल।

স্বাহ্রস, গুরুপাক, এবং পিজ্য। তালবীজ্ঞ,—স্বাহ তালের অ[া]টী ; রিপাকে নধ্র, মূত্রক্ষিকর, এব^{ণ্} বায়ু ও পিত্য।

जान जांक्रिय महा खन।

মধুর শীতন, গুক্পাক এবং পিত্র।

উপলঙ্কর ছোপ।

- श्रुक्णाक, कर्ण बेवर व्हिमनाणक कहित्वत्र, भी वन, श्रेष्ठांव ह्री सञ्जनक बवर यु ह्रिक्कत्र।

' নারিকেল ফল গুণ!

্শুকপাক, স্মিয়া, পিতম স্বাহ্ন শীজন, বশ এবং মাংস র্জিকর, মুখপ্রিস্ন ছণ এবং ব্যাহিন্দাধন কর।

मात्रिक्न ममा खन्।

শুক্শাক; ত্রিও, পিতর, আছু, বল এবং মাংস করিক, মনোহর, ধাতু-পোষক; এবং শুল্কিরক; বিশেষভঃ কোমল নারিকেলশ্যা, – পিগুলুর মুল্দোব, ভূফা হ'র্দ্য, দাহ এবং রক্তশিত রোগন।

প্ৰস ফল গুণ।

আৰ্থাৎ কাঁটাল। ক্যার রস বিশিষ্ট, স্ব ভ্রুস, স্মিন্ধ এবং গুৰুপাক।
মৌচ ফল গুৰুণ।

শৰ্থাৎ কৰলী। স্বাস্ত্রস বিশিষ্ট্য কৰায়, বিশেষ শীতল নছে, রক্তপিওয়, ব্রম, ক্চিক্র শ্লেষ্ডানক এবং গুক্পাক।

जाका कान्मर्था () भधुक श्रूष्ण ७ श्रेष्क् वानि कन छन !

রক্ত পিডায়, গুৰু এবং মধুব।

দ্রাকা ফল গুণ।

সারক, স্বরের হিডকর, মধুব, স্মিষ্ক, শীতল, রক্ত লিভ, জ্বর, শ্বাস, তৃষ্ণ। দাহ এবং ক্ষয় রোগন্ন।

্ কাশ্যত্তা ফল গুণ।

্ ইদ্যেম্বব**ভের শান্তিকর, রক্তপিত এবং ব য়ুনাশক, কেশের** হিডকর, মুস্যুয়ন এবং মেধ্য**ত**্কক।

मधुक भूष्म (वर क्न खन।

মধ্কপূজা, – পুঞ্জির, মুখের অপ্রিয় এবং গুক্ । ইহার ফল, – ব যু এরু পিছর।

বাভাষানি ফলবর্ছ 🔭

রাতাম, (২) আকোড় (৩) রভিযুক, নিচল (৪) পিচু (৫) নিকোচৰ (৬) এবং উক্ষাণ আদি, লপিডগ্রেখা নাশক, স্মিউ, অধচ উষ্ক, গুৰুপাৰ রংহন, বায়ু নাশক, বন্ধারক ও মধুর রসবিশিপ্ট।

🌊 (८) गचात्री।

् ३ व (पर्य । ७ जाटका दिकन् । हे इनद्वज्य ६ महन्। कन् । • ७ जादका ज्या

निवनी-कन छन ।

(वर्षार' लाबाजिकन) क्यात्र, क्क बदर शिष्ठत्र किकिर जिस्त्रत्र विभिक्षे, किक्त्र, पूर्यक्षित्र, स्राक्षी, बदर विभव।

্বসার ফল গুণ।

অর্থাৎ গলপেপার্গ করা,—পাতে শীতল, ত্রণকর, মলুমুত্র রোধক, দিউন্তা, হর্জর, কক, শীতল, বায়ুর প্রকোশকর, বিপাকে মধুর এবং ইক্তপিত্র।

ठेककन खन।

(অর্থাৎ নীলকপিথ কল) শীতল, ক্যার, মধ্র, বায়ুর প্রকোপকর এবং গুক্পাক।

रेजू नी कन एव।

ক্রিয় অথচ উষ্ট, তিজ্ঞ অথচ মধুর, এবং বাচল্লেখা নাশক।

শ্মাফল গুণ।

धक्राक, याइ, कच डिक, धर (कन्य।

শ্লেয়াতক ফল তাণ।

(অর্থাৎ বহুবার ফল) গুরুপাক, কফকারী, মধুর এবং দীতন। করীর আদি ফল গুণ।

করীর (১) অক্ক এবং শীলু। ইহারা ছুনশুনা ফল। – স্বাহ্, ভিক্ল কুটু এবং উষ্ণঃ কক এবং বায়ুনাশক।

• भौलुकन खन।

िक, लिखकंत्र मात्रक, दिलाटक करूँ, खोक्नू, खेक्क, टेडगोक्न, এবং कक्क ख र यू नास्त्रिकत्र ।

তুবরক ফল গুণ।

ত্রণকর, কবার এবং পরিপাতে কটু, এবং উষ্ণ; কুমি, জুর, জানাই, মেছ এবং উদাবর্ভরোগ নাশক।

कत्राक्ष मिकन खन।

কর্জ কিংশুক ও অরিষ্ট ফল, – কুন্ত, গুলা, উদর্গী, এবং অর্শব্রোগারী; পরি; । কালে, কটু এবং কুমিও প্রমেহ রোঁ গার পাজিকর।

३ (के छि। ।

বিড়ঙ্গকল গুণ ।

কক। উফ, পরিপাকে কটু, লঘু, বায়ু এবং কফ্ছ, ভিজ্ঞাবিষের পক্ষে
অংশহিতকারী এবং ক্ষিনাশক।

অভয়া ফগ গুণ।

(অর্থাৎ চল্পানেশ জাত পঞ্চশিরা হরীতকী) ত্রণের ছিত্তর, উঞ্চলারক, ঘেষ্যা, দোষ্যা, শোষ্ঠ ও কুঠ্ম, ক্যায়, অগ্নিকর, অল, এবং নেত্তের ভিত্তকর।

व्यक्तन खन।

অর্থাৎ বয়ড়া। ভেদকর, লঘু, কক্ষ, উষ্ণ অরের ব্যাঘাতকর, ক্রিমি, মাশক, নেত্রের হিতকর, পরিপাকে আছু, ক্যায়, এবং ক্ষ ও পিত্রমী

পুগফল গুণ।

অর্থাৎ অ্পারি। কক এবং পিশুল্ল, কক্ষ্, মুখের ক্লেদ এবং মল নাশক, ক্ষাররস বিশিষ্ঠ, মগুর এবং অংশ সারক।

জ্যতিকোশ ফল গুণ।

জ্যাভিকোশ (১) কপুর, জ্ঞাভিফল, (২) কটুক, (৩) কাকোলক (৪) এবং লবজ। এই সকল কল, ভিক্ত, কটু, ককম, লঘু, ভৃষ্ণানাশক এবং মুখের ত্লেদ এবং মুগন্ধ নাশকর।

কপ্র শুণ ৷

ভিক্তরস, বিশিষ্ঠ, স্থর্ডি, শীতল, এবং শযুপাক। পিপাসা এবং মুখ-শোহে মুখের বিরস্তা জযিলে বিশেষ হিত্তপুর।

লতা কন্ত রিকা গুল।

ৰপূরির তুলা গুল সম্পন্ন শীলন এবং বলির পোধন কর। পিয়াল-মজ্জা গুণ।

"মধুর, প্রব্য, ব'ষ্টু এবং পিউন্নৰ্গ 🦠

বিভাতকী মজ্জা এণ।

मख्डाबनके, क्क अवः वाश्चनानक।

(काल ५६६) खन।

ক্ষায়, মধুর, শিত্তমুভূদ্দি এবং বায়ুনাশক।

कामनकी मख्दा खन।

(कानक्का मम छन मन्भन्न।

বীজপুরকাদির মজ্জা গুণ।

বী অপুরক (১) শম্পাক (২) এবং কোশাত্র মজ্জা, – পরিপাকে স্বাতৃ, মগ্লিকর, বন্ধকর, স্লিম্ব এবং পিত ও বায়ুনাশক।

যে ব্রুষ ফলের যেরপে বীর্ষ্য বলা হইরাছে, সেই সেই ফলের মজ্জারও দহরুপ বীর্ষ্য জ্ঞানতে হইবে।

যে সমস্ত ফলের কথা লিখিত ছইরাছে, সেই সকল ফল পরিপক জাব-গতেই বিশেষ গুণকারী হয়, কেবল বিল্ল ফল অপারিপক সময়ে বিশেষ গুণ বিশিফ্ট ছইয়া থাকে।

তে সমস্ত কল বাাধিবিশিষ্ঠ, অথবা কীটক্ষত, কিয়া অত্যস্ত পরিপ্রক ক অসমরে জ্ঞান্তে, অথবা বিপরীত ঋতুতে উৎপ্র হয়, সে সমৃত্ত ফল ব্যব্-ার যোগা নহে।

कलरंश मगाश्च।

भाक वर्ज।

.श्रूष्णिक नामि।

পুষ্পাকল (৩) অলবি (৪) এবং কালিক্সকাদি শাক বর্গ জানিবে। হারা পিজনাশকঃশ্রিষ্ট এবং অপপ কফের বর্জনকর এবং রস পাহন, স্বাহ।

পুষ্পক্ষ গুণ ।

অর্থাং সাদ। কুআ্ও, – বাল হইলে, (অর্থাৎ কচি ইইলে) পিত। মধ্য অবস্থার, – কফকর, এবং পাক হইলে – লঘু, উষ্ণ, সন্ধার, অগ্নিকর বা শোধনকর, সকল প্রকার দোষত্ব, হৃদ্য এবং মানসীক বিকারে পর্য।

कालिङ खन।

मृष्टि এवः एटकात अध्यकाती, करू अवर वाटणत वर्धनकाती।

অলাবু ফগ গুণ।

(पर्यार नाउ) मन (छनक, कक्क, श्रक्शाक, व पड़ासु भी उन।

ভিক্ত অলাবু গুণ।

(पर्थार डिडमा डे, क्रमा)।

বামনী অলাবু গুণ।

(অধাৎ ৰাউনে লাউ) বাত পিছয়।

ত্রপুস আদি।

তপুদ (১) একাকি (২) বকাক (০) ও শীর্ষ্ট (৪) আদি [†] ছারা,-গুক্পাক, বিষ্ট্টা, শীংল, স্থাড়,ক্ফকর, মলমূর্জনক, সক্ষার এ ্ষপ্ত^ত

ख्रुम कन खन।

(অর্থাৎ শশা) কিচি এবং নীলবর্ছ ইলে পিত্র, এবং পক হই। কফকর এবং পাত্রোগ জনক, অল, ও বাভ্নেমার শান্তিকর।

একারু ও করারু।

অর্থাৎ ক কুড় ও লালাকুমড়। (লালকুমড়াকে বিলিভি কুমড়া বলে) প ছইলে, – কফবাতের বর্জনকর, সক্ষর, মধুর, অগ্নিকর অর্থাৎ অধিক পিট কর নহে।

नीर्वहरु।

' (অর্থাৎ তর্মুক্স)'সক্ষার, ম ধ্ব, কফের শান্তিক্তরী ভেদক', সমু, আ্রিব অদা এবং অনাহ ও অর্তিনা রোগের হিডকর :

, এ. পাশ। ১ বৃ । কুড়। । । বালকুমড়া। ৪ তর্মুর।

পিপ্পनामि वर्ग खन।

শিপ্পলী, মরিচ, শৃন্ধবের, (১) আন্তেক, (২) হিন্দ্, জীরক, কপ্তর্ম ০) জন্মীর, প্রমুধ, প্রসা, অপ্তিক, ভূতু গ, প্রগন্ধ, কাসমর্জ, (৪) কালমান ৫) কূ.চর ২৬) ক্ষক (৭) ধরপুষ্প (৮) শিশু (১) মর্ঘু (৩) গাণজক (১১) সর্ঘপ, রাজিকা (১২) কুলাহল (১০) বেনু, গণীর, চলপর্লিকা (১৪) বর্ষাভূ (১৫) চিত্রক, মূলক, পোতিকা লশুন, পালাকু বিং কলার আদি। ইত্রো – কটু, উষ্ণ, ক্তিকর, বাত্তের র শান্তিকর, বাং বিবিধরণ পাতের সংস্থারে বাবহুত হটুরা বাতেক।

পিপ্লা এবং আদ্রুক গুণ।

শ্রেষ্যাজ্ঞনক, গুৰুপাক, স্বাত্ন এবং দীতল। শুক্ক ছইলো, — কফ এবং । যুর শান্তিকর, রুষা, অধান পিতজ্ঞনক নহে। পাক্য (অর্থাং দ্বন বিশেষ) । হু সংযোগো, — স্বাত্ন, গুৰুপাক, এবং শ্লেষ্যাজ্ঞাবী। শুক্ক ছইলো, ক্টু, টুফু, শুরুষ্য এবং বন্ধ বাতর।

শ্বেত মরিচ গুণ।

অধিক উষ্ণবীষ্য অধিক শীভবীষ্য নছে, সকল ক্রণ মরিচ অপেকা শেষ গুণকারী, এবং নেত্রের হিত্তকারী।

लुर्छ रे खन ।

भक्क वाज्ञ, करू, शाटक मधूर, ह्रवा, उक्ष, कठिकद्र, ट्याह विशिष्ठे, न्यू अवर शिक्षत्र।

' দাদ্রক গুণু।

কফ বাতম, স্বরের হিডকর, বিবন্ধ, আুনাহ এবং শুলের শান্তিকর ; বটু, ক্ষ কচিকর, ছন্য এবং রুখ্য।

^{, 5} खर्री। २ - मि।। • धत्। 8 कानक इत्या • क्र्युकोत्रक श्रुनामत्रका १ ज्यामार्ग। ४ वर्स्स्तीमरक। २ म्बिना। ५० द्रकः जिना। ५५ जुनमी विष्या ३६ (चैक्स्प्र्य) ५० क्रूब्स (माजा। ४

হিন্দু গুণ ।

লঘু, উষ্ণ, পাচক, পাল্লিকর, কফ এবং বাতম কটু, স্লিম সারক, তীক্ষু, পুল, অজীন এবং কোঠের কঠিন গুনাশক।

' জীরক এবং ক্লফজীরক গুণ। তীক্ষ্ণ উষ্ণ, কটুপাক ক্লচিকর পিজ এবং শগ্নি বর্জনকর।

কারবী এবং উপকুঞ্জ গুণ।

(অর্থাৎ ভেজ্পত্র এবং ছোট এলাইচ) জ্ঞারক এবং কৃষ্ণজীরকের সম গুণকর। ইহারা ব, জনাদি আহারীয় দ্রব্য প্রস্তুত কালে ব্যবহৃত হয়।

আদা এবং কুস্তম্বরী।

ইহারা একজিক হইলে, — আছে সোগান্ধ বিশিষ্ট, ও হাদ্য। ওক ছইলে পাকে মধুর, স্মিন্ধ, ভূক। এবং দাহেহর শান্তিকর, সকল দেয়ে নাশক, বটু, অপ্পতিক্তা, এবং নাড়া প্রথের শোধন কর।

জাষার গুণ।

় পাচক, তীক্ষ্ণ, কমি, বাভ, এবং শ্রেম্বার শান্তি কর। স্থান্ধি অগ্নিকর, ক্ষতিকর, এবং মুখের বৈশ্চাকারী অর্থাৎ নির্মূলত্যকারী।

म्त्रम एवं।

কক, বায়ু, বিৰ, খাস, কাস এবং ছগন্ধনাশক, গিভকর, এবং পাখু পূল নাশক।

,मृजूथ खन।

"পুর্বেষ্তি হুরদের তুশ্য গুনকারী, শ্রধিকন্ত ইবিশেষ শান্তিকর।

मृत्रम, अर्ड्काः, ध्वरः पृष्ठ् ।

्र नारक कर्टू, मध्र तमध्रक, कक वाश्रुव मास्टिकत्र, शाहक अवर कर्श्वटमाधन क्रा

কাসমূদ্ধ গুণ।

(অর্থাৎ কালকা অপে) ইত্তি পুরেনাক্তি সুরদাদির তুলা গুণকারী, অধি-

ध्वराखन-मर्जन।

শিতা গুণ।

অর্থাৎ সজিনা। কটু, দক্ষার, মধুর, ছিল্ল এবং পিতেকর।

মদুশিরা কুণ।

ज्ञां परक्रमिन्य । वार्ट , विक्रा, त्याक्रमाणक, यांच्या करूँ, विष्ना, शिक् बन्ध व (वायक, क्ष्म) धरा शिक्ष्म वीर्यामाली :

अपनेत्र के वर्ष

राजार मित्राभाक । किस्मासंद्र यह नहर िस के खेल किस्मानी अधि।

श्री कि हो अब राष्ट्रा वाज । इक क अंतिकार १८ ११)

749 641

জ্ঞাহ প্রবর্গ। বা বাত্র - শোক, উদ্বর্গন প্রবিয়োর শান্তিভ ১৫, বট্টু ও ভিডেব্স, জ্ঞান্ত চন্দ্র এবং অনিবর।

गुष्क इ.५ अविष्क, भाकर्त

相对"证明"。 (1) "

সুশ্বাদী ভ সকল প্রকার ১৮ ব. শা (দুশ) ব নুব প্রবিশ্বিক প্রকাংক্ত শাক সমূতের পুস্প পরি এনং কলা উভ্তেশ্যেশন, ই প্রাকার্থির প্রুপ্ত – কফ প্রিকল কলা কলা কণ্ড শালু বাশিব

1837 CH 1

(प.अधि, कोष्ट्र, कोट्ट विधितः एकताकः मादक चाउ् न्धकतं द्वेषाः। रिष्ठक्षमकः चत्रः चत्रः व्यद्धः विध्यत् विष्ठकतं वरः एम छितः सम्बन्धः। ইংাতে, – ছালোগ, জীর্ণজুর, কুকিপুর, কোঠরোধকভা, গুলা, অকচি, কাস এবং শোফের শান্তি হয়, এবং অর্শ, কুর্তু, অগ্নিমান্দ, কাস, কুমি ধ ককের শান্তি হয়।

পলাও ওব।

অর্থাৎ পিরাঞ্চ। অত্যন্ত উঞ্চ বীর্ঘানহে, ব'য়ুর শান্তিকারী, কটু, তীক্ষ্ গুরুপাক, অধিক শ্লেমাকর নছে, বলকর পিরুকর এবং অংশ অগ্লিকর। ক্ষীর পলাতু, – অঞ্চ, কচিকর, ধাতুর তৈর্ষ্য কারী, বলকর, মেধা, কফ এবং পুর্কিদাধনকারী, পিচ্ছিল, স্বাহ্ন, গুৰুপাক, এবং রক্তপিত্তের পক্ষে হিতকর।

কলায়-শাক গুণ।

ৰুক্ত এবং পিতুল, বায়ুর প্রকোপকর, গুৰুপাক, ক্যাল, অন্থর্ম, এবং পাকে মধুর।

চুচ্চু আদি গুণ।

চুচুচু (১) পু बिका (২) बक्ती (०) खोरही, दिन्नी विका, नजी, उल्लाबक, চ্ছগ্ৰাক্তা, রক্ষাদনী, ফঞ্জী, (৪) শাল্মলী, শেলু, বনস্পতি, প্রসব, শন, কর্ষার, ও কোবিদার আদি। ইহারা, ক্যায়, ভিক্ত, শ্বংচ স্বাহ্, রক্ত-পিত্র, কফনাশক, ব য়ু বর্দ্ধনকর, সংগ্রাছী এবং লঘু।

\$ 2 2 3 4 1

লঘুপাক, ক্রমিনাশক, পিচ্ছিল, ত্রেণের পক্ষে হিতকর, ক্যায়, মধুর, जरलाही अवर किएमावश ।

জীবন্তী গুণ।

জর্থাৎ জিল্লন্বন্তি। নেত্রের হিতকরী, এবং সর্কোদোষ ছরা।

রকাদনী গুণ ۴

অর্থাৎ পর্যাহা। বাত্রাশক।

কঞ্জী গুণ।

অপি বলকর।

-(১) শাক বিশেব।(২) পুঁই। (৩) খৃভকুমারী। (৪) বামনহাটী

শীররক্ষ, উৎপ্রপাদি রস, এবং পল্লব গুণু। শীতম, সংখ্যাহী, এবং রক্তপিত রোগে হিতকর।

1/1

श्रुनर्गिमि खन।

পুনর্গা, বক্ন, তর্গারী (৫) উক্তবুক (৬) বৎসাদনী (৭)ও বিল-শাকাদি; ইহার। উষ্ণ, স্থাত্ত, ভিক্ত এবং বায়ুর শান্তিকর। পুনর্গাশাক, অধিকন্ত শোধায়।

তওু শীয়ক আদি গুণ।

তণ্শীরক, (৮) উপোদিকা (১) অখবদা, চিল্লী, পালস্কা (১০) ও বাঙ্ক (১১) ইত্যাদি; ইহারা মদ-মুত্তজনক, সক্ষার মধ্র, অসপ বাড-শ্লেমানুপ্রকোপকর, এবং রক্তপিন্তর।

তণ্ড সীয়কাশাক গুণ।

অর্থাৎ নটেশাক। অত্যন্ত শীত্র, কক্ষ্য রসে ও শাকে মধ্র, রক্তাপিত এবং মন্তব্যর শাত্তিকর এবং বিধনাশক।

উপোদিকশাক গুণ।

অর্থাৎ কলছীশাক। রুসে এবং পাকে মধুর, রুষ্য, বাভপিত ও মতভার প্রেক হিতকর, সারক, অিও, বশকর, গ্রেত্মাজনক, এবং হিম।

বাস্ত কশাক গুণ!

অর্থাৎ বেভোপাক। কটুপাক, ক্রমিয়, মেধা, অমি এবং বলের বর্জন কর, সক্ষার, সকল প্রকার দোধের শান্তিকর, ক্রচিকর এবং দারক।

চিল্লীশাক গুণ।

वाञ्चक मारकंद्र मम छन विभिन्नो।

भाजकाभाक छन।

অর্থাৎ পালওশাক। নটেশাকের সম ওগকারী। অধিবন্ত ব'য়ুর প্রাকোপকর, মলমূত্র্রাধক, কক্ষ, এবং পিত্ত শ্লেমার পক্ষে হিতকর।

- (६) अप्रस्तो। (७) व्यवधा (१) अप्रती। (७) नटिमान।
 - (क) कनबीनाक।(১०) शानक्ष्माक। '(১১) व्यक्तामाक।

আখবলশাক গুণ।

क्ष, এरर मनमूज । वाश्वरता धक।

मछ्क्षनी आहि छन।

মতক-পণী (১) সপ্তলা (২) স্থানিষন্ত (৩) স্থাই কলা (৪) প্রাক্ষির কলা, লিপ্পানী, গুড়ু চি, গোজিবা (৫) কাৰ্যাচী (৬) প্রপ্নাড় (৭ অবল্ঞজ্ (৮) মঙীন (১) বৃহতী ও কটেকারার ফল, পটোল, বার্ত্তাক্ত কারবেলক, (১০) কটুকী, কাকেবুক, উক্বুক (১) পাপ্পাটক (১২) কিরাতভিক্ত (১৩) কর্কোটক (১৪) অরিক্ট (১৫) কোশাভ্কী (১৬) বেলকরীর (১৭) অটরক (১৮) এবং অর্কপুষ্প ইত্যাদি। –ইহারা রক্তাপিন্তম্ব হৃদ্য, নঘু এবং কুণ্ঠ, মেহ, জ্বর, শ্বাস, কাস, এবং জক্চির শান্তিকর।

मखुकशनी छन।

স্পর্যাৎ মঞ্জিষ্ঠ। কর।মা, পিত্রেম্ব) রদে এবং পাকে মন্তর, হিম ও লযু।

গোজিহ্বাশাক গুণ।

ইহা পুৰ্বোক্ত নত ৰগানী তুলা গুণ বিশিক্টা।

इनिद्धं कथाक खन ।

व्यर्गाद व्यव्यानिक । व्यर्गि थी, जिल्लास्य , এवर मर्था थी।

ष्ट्रन एक खन्।

অর্থ মোমরাজ। তিক্ত, পাকেবটু এবং পিউ ই আনি শক।

্যতীনশাক গুণ।

অর্থাৎ কুদ্রমটিরশাক। উষৎ ভিজ্ঞ, কটু, তিনোবল, অধিক উষ্ণ 🔊

काकमा ही भाक छन्।

व्यथी ८ २ ७ जन महिना न होने भारकत केम छनकाती।

2 মৃঞ্জি। ২ পাকস। ৩ অষ্ণশাক। ৪ অভদী। ৫ গোজিকালতা।
ভি ওড়কামাই। ৭ চাকন্দারক : ৮ সোমরাজা। ১ ক্রেডেটর। ১০ করলা
ও উচ্ছে। ১১ এরও। ১২ কেৎপাপড়া। ১৩ চিরাভা। ১৪ কাকরোল
ত নিষ্। ১৬ ঝিঙা। ১৭ বেতের উগা। ১৮ বাদক কল।

রহতি ও কণ্ঠকারীর ফল গুণ। কণ্ড, কুণ্ঠ ও ক্ষমিয় কফ বাতের শান্তিকর, কটু, তিক্ত এবং দয়ু।

পটোল গুৰ:

কফপিতিল, অনের হিত্কর, উঞ্চ তিক্ত অথচ বায়ুর প্রাকোপকর নহে। পাকে কটু, র্ষ্য ক্তিকর, এবং অগ্নিকর।

वार्किको खन।

কফবাভন্ন, তিক্ত, কচিকর, কটু লঘু এবং অগ্নিকর। বার্ত্তাকী প্রক ছইলে, ক্ষারবিশি ট এবং শিক্তকর ছইলা থাকে।

কর্কেটিক এবং কার েন্ত্র গুল। পর্যাৎ কাকরোল এবং করলা-উচ্চে। বাস্তাকীর তুলা গুলকারী।

> অটরষক, বেত্রকরীর; গুড়ু চী নিম্ব, পপ্পটক এবং কিরাত ভক্ত গুণ।

অটর্ষক অর্থাথ বাস্ফলন। বেরক্টীর অর্থাথ বেতের ভগা। পাশপটক ু অর্থাথ কেত্রাপাড়া। কিরা সাত্ত অর্থাথ চিন্নতা। এই সকল তিক্ত এবং পিত্রোল্যার শান্তিকর।

বরুণ ও প্রাপুরাড়শাক।

কক্ষ, ক ৰু, শ্যু, শী গল, এরং বা গগতের প্রকোপকর।

কার্ম্বাক গুণ।

के ऋश छन विश्विक, स्थित्क, नक्ष्रे स्थित्र, अवर गत्रामत्र गाँखिकत ।

কৌহ্যন্ত্রণাক গুণী

वश्त्र, कन, छेक, साथ नायक धरर नयू ।

नर्गलकामाक खन।

বায়ুর প্রকোপকর, দুগুর এবং পিত্তনীশক।

कार अती खन।

গুহনী ও অশ্রোগের শান্তিফর, উষ্ণ, কবার, মধুর, অ্থিকর, এবং-জ্মরুসমূক্ত হইবো বাত শ্লেমার শান্তিকর হব।

लानिकामि खन।

লোণিকা, জাতুকগণী পাজুর, জীরক স্থবর্ষলা (১) কুকারক (২) কঠিজার (৩) কুন্তলিকা (৪) কুরণ্টিকা এবং গীত্রিটো আদি। এই সকল রুসে এবং পাকে মধুর, শীতল; কফনাশক, অধিক পিতুজনক নছে, পাকাত লবণ রুস বিশিষ্ট, কৃক্, সক্ষার, বায়ুর প্রকোপকর, এবং সারক।

কুন্তলিকাশাক গুণ!

वर्षार शक्राएं, - मधुर, जिला।

কুরুণ্টিকাশাক গুণ।

क्षां द्रमयुक्त ।

त्राकक्षक अवर महीमांक खन।

রাজক্ষক অর্থাৎ রাইসরিযার শাক। ইহা সংগ্রাহী, শীভদ এবং লয়। ইহাদিগের দ্বারা কোন প্রকার দোষের হ্রাস কিমা রুদ্ধি হরন।।

হরিমন্থাকঞ্ণ।

অর্থাৎ ছোলাশাক। রসে এবং পাকে মধুর, এবং হুর্জ্জর, অর্থাৎ শীত্র গাক হয়না।

কলায়শাক গুণ।

ভেদক মধুর, কক্ষ এবং বায়ুর প্রকোপকর। পুতিকরঞ্জের পত্ত গুণ।

অথপিৎ নাটাৰরঞ্জের প্র। – শিধিলক্র, কটুপাক, লেঘু, বাতলেখা নাশব শোধস, এবং উফবীর্যা।

তার্লপত্র গুণ।

জীক্ষোষ্ণ, কটু এবং পিন্তর্দ্ধিকর, অ্থান্ধি, বিশদ, তিক্ত, অরের হিতকর বাড্ডেম্মানাশক, শিথিলকর কটুশাক ক্ষার, অগ্নিকর, এবং বজ্জু কণ্ডুমনে ক্লেদ এবং হর্গন্ধ আদি সংশোধন ক্র।

भाकवर्ग मयाश्व।

৯ শহলা (২ রক্ত, ঝটান ও তুল্লী। ৪ গড়গড়ে।

পুত্র বর্গ।

(क्विनाज्ञानि श्रुष्त्र)

কোবিদার (অর্থ এ রক্তকাঞ্চন) লাল এবং লালালী পুল্প ; ইহারা মধুর, পাকে মধুর এবং রক্ত পিজ্য।

त्रशिम श्रुष्ट खन।

র্য অর্থাৎ বাসক, এবং আগন্ত্য অর্থাৎ বকপুষ্পা ইহারা ভিক্ত, পারিপাকে
কটু, এবং করকাস্থা।

मधू निज् वानित भूका खन।

মধুশিগু (অর্থাৎ রক্ত সজিনা) এবং করীর; ইহারা পরিপ কে কট্,বাত্য, এবং মদমু: অর সঞ্চল্ল কর।

व्यवस्था भूष्म खन ।

শর্থাৎ বকপুষ্পা। – অত্যন্ত শীতল শধ্বা শতন্তে উফা নহে। রাজ্যন্ত্র বাক্তির পক্ষে ইহা বিশেষ উপকারী।

রক্তপুষ্পাদির পুষ্প গুণ।

রক্তর্ক, নিম্মুক্ষক, (অর্থ (। আটাপাক্ষ) অর্ক এবং আদনত ইহা-দিগের পুষ্প কক এবং শিত্ত ।

কুট জ পুজ্প গুণ । _

্ব্বর্থাৎ কুর্রী। কুষ্ঠুরোগ নাশক।

পদাপুষ্প ওণ।১-

লমংভিজ্ঞ, মধুর, শীতল, এবং পিত ও ব্ফম।

कुर्मश्रुष्ट्री खुन।

मधून, लिष्टिन, जिक्ष, दर्यजनक, এবং भी उन।

कुर मंत्र (बरः छेरमन भूष्म खन।

क्रामन वर्षाक जिनक्र्म व्यक्ष्डिश्रम वर्षाय नीनश्रम। हेराता क्र्म

িন্ধুবারপুষ্প গুণ।

অর্থাৎ নিষিদ্ধ পূজা। হিতকর, এংৎ পিভয়।

মালতী ও মলিকা পূজা গুণ।

ভিক্ত রুসযুক্ত, সদাৰ অন্য পিছয়।

नकूल शुष्त्र खन।

श्राक्षी विभव अवर क्रमा

भ हेन भूका खन।

बक्नभू. भारत मण छन विभिन्छ।

নাগ এবং কুন্ধুন পুত্ৰ গুণ।

নাগ অথাৎ নাগকেশর। ইহারা হোল পিত, এবং বিধনাশক।

हम्म म शुष्त्र छन।

ব্রক্তপিত্তর শীতন অথচ উষ্ণ এব কফের প্রক্ষে ভিত্মর।

किर खक आर कड़कें न शुष्प छन।

কি শুক অর্থাং প্রাসপুত্র এবং কুরণ্টক অংগ ৎ পীত্রিটী। ইছারা ক্ফ এবং পিডায়।

বে যে রুকের যে যে এন, সেই সেই পু.জ্পর ভদন্রগ ৪৫৭ জ।নিবে।

মরুশিপ্র এবং করার গুণ।

क है वर श्रियानामक।

करकानि खैंग।

ক্রেচর এবং বংশক রীর আংদি। ইহার ১০ এবং মূল্রের স্থার করা

भक्तिक छन ।

ক্ষিকর, পরিপাকে স্বাহ্, পিছিল, বিষয়দী, কায়ু র্শ্বিকর, এবং শভাত পিড়লেম্ব। শর নতে।

বংশকরীর গুণ।

व्यवीय वारमह (काइन) किकवह, हरम अवः शादके मुधून, विम्हि, विः कहा, क्वांब हमपुष्ट अवः कक्त।

পুলাল উল্করীর, বেনু এবং ভূমিলাভ উল্ডিন ৷

প্ৰশাসজ্ঞাত উদ্ভিদ গুণ !

অর্থাৎ ইড়ের পোরাজাত উল্ভিত। – মধুর, পরিপাকে, মরুং, কক এবং দোষম।

ইফুজাত উদ্ভিজ গুণ।

অর্থাৎ ইক্ষুর খোর। গ্রুণ ছইর। থাকিলে ভাষাতে যে কোরক উৎপত্তি হয়।—মধুর, পৃশ্চাৎ ক্যার রস বিশিষ্ঠ, কটু এবং শীতল।

করীষজাত উদ্ভিগ ভেগ।

জার্থাৎ ইকুজাত উদ্ভিদ্র তুলা শুক গোমাইই ত যে কোরক উৎপন্ধ হয়!— ইহা ইকুজাত উদ্ভিদের তুলা গুণ বিশিষ্ট, উক, ক্ষামার্দ বিশিষ্ট এবং বংযুব প্রকোপকর।

विषुष्ठां उ हे सिन खना

আর্থাৎ বাঁশের গায়ে স্থেত্বর্গ ছাতার সম যে কে(রক উৎপন্ন হয়। কংখার রস বিশিষ্ঠ এবং বায়ুব প্রকোপকর।

ভূমিষ্পাত উদ্ভিন গুণ।

ওকপাক; এবং শতান্ত বায়ুব প্রাকোপকর নহে। ভূমি ছইচে উংপ্র হয় বলিয়াইহার ভূমির দম রূদ বিশিক্ত হয়।

পিণ্যাক এবং তিলু কল্ফ ইত্যাদির কর।

প্রিশাক, তিল-কলক, স্কুলিদা এই শুরু শাক আ দ, ইথার। দুচল দে(যের প্রকোশকর।

विकेत खन

সনল প্রকার বটক অর্থাৎ প্রিফক বিশেষী র্বিভিন্তী ও সাম্ব একোপকর।

'বিভাকী ভণ।

वायुत्र्विकत्र, कठिकत्, मार्ख्य अवः व्यक्षिकतः।

, গকল প্রকার শাক গুণ।

মণান্দেরক, গুৰুপাক, প্রায়ই বিউন্ভী, এবং জ্তরি নীৰং ক্যার রস বিশিক্তি,

(20)

পুষ্পা, পত্র, ফল নাল, এবং কন্দ গুল।

ইহারা যথা ক্রমে গুকা। শর্কা, অভ্যন্ত জীব, কীটক্ষত শ্বস্থান জাত এবং স্কাল উৎপন্ন এ প্রদার প্রাপ্ত শাক প্রিত্যাগ করা বিধেয়।

कन्म वर्जा

বিদারীকদা, ভূমি কুমাণ্ড, শত বরী (১) বিদা, ফ্ণাল, শৃলাটক (২) (কংশেকক (৩) পিণ্ডালুক (৪) মধালুক (৫) হন্তালুক, কার্চালু, শঙালুক (৬) রক্তালুক (৭) ইন্দিবর এবং উৎপ্রা কন্দ অর্থাৎ মূল ইত্যাদি। এই সকলের মূল,—রক্তপিভয়, শীভল, মধ্র, গুক্পাক, শুক্ত এবং শুনা র্জিকর।

विमात्री कम खन।

শধ্ব, রুংছান, র্ষা, শীতিশা, স্বরের হিতকর, স্তান্ত মূত হেজাকর, বাশকর এবং বায়ু-প্তিয়।

শতাবরীকদ গুণ।

णधीर भंडभूगी। — वाड-लिखन, ह्रसा, ऋङ, ७ ७० त्रापूक ज्ञारः ई मृथिद्यित, स्मिथी, जिस्सी এवर वर्णत वर्धन कहा। हेर्द्र चक्ष्र, छारती द्रदर जर्भ-विकृत भाखिक ह्रह्मा, भी जगा, अपर ह्रमान्न क्ष्य अवर लिखन, अपर ७०० द्रम विभिक्षे।

विम छो।

অর্থাৎ পদ্মাদির মূণাল। এক্রিদাছী, র্ক্ত পিতের শান্তিকর, বিষ্ট ভী হৃত্যুর কল, বিরশ এবং বায়ুবর্জনকর।

শৃদ্ধটিক এবং কশেক্সক গুণ।
অর্থাৎ পানিকল এবং কেশুর। গুৰুপ ক্রিটন্টা এবং শীতল।
পিগুলিক গুণ।

• লর্থাৎ গোলমালু। কলকর গুরুপাক, এবং প্রক্ষোপ্তর !

⁽১) শতমূলী। (২) পানিকল। (৩) কেওর। (৪) গোলকার (৫) মেপিন এ৬) শীপশুলু। (৭) সামাশালু।

श्रुदब्धकम खन।

क्षियानांगक, शित्रिशांक कर्रे धवर शिट्यत वर्षनकत्।

বংশকরীর গুণ।

আর্থাৎ ব বৈশের কোঁড়ো। - গুৰুপাক, কফ এবং বায়ুব প্রকোপকর।

ञ्च, स्र ११ (১) वर् भानक (१) वर्गा

ঈশং ক্ষায় রসযুক্ত, কটু, ৰুক্চ, বিষ্ঠন্তী, গুৰুপাক, ৰুক্ত এবং বায়ুর বুদ্ধিকৰ। এবং পিত্তয়।

মানক গুণ !

ব্যথি মনিকছু। স্বাচ, শীভদ এবং গুৰু। (মতান্তরে) স্বাহৃ, শীভদ শোধনাশক এবং পাকে কটু।

क्र्लकम खन।

অভান্ত উষ্ণ ৰহে।

স্রণ গুণ।

অর্থাৎ ওল। গুদকীল অর্থাৎ কোঠবন্ধরোগম। (মত ন্তরে) অগ্নি-বর্দ্ধক, ক'টকারক কফম, লঘুপাক, ভোজনগথের প্রীড়াদায়ক, এবং অর্শ-রোগের ছিডকর, বনা ওল—ইনুপেন্দা কিঞিৎ অপ্প গুণ বিশিষ্ট্র।

কিচু গুণ ।

मात्रक, करू, बागवन এवर वाज हिम्बू

কুমুদ, উৎপল, এবং প্রাকন্দ গুণ।

हेराता व'श्रूत श्राटकाशकृत, कथात्र तमयुक्त, शिख्य, शतिशाटक मधुत अरस् रिम छन ममग्र।

বরাইকন্দ গুণ ৷

हिच्चाना भक् तरंग श्रीर शादक कर्षे ; भर, क्रुर्व अतः कृषि-ना भक, विशेष करु द्वरा अतर त्रनावन।

३ वन । २ मान मू।

ভাল, নারিকেল এবং খর্জ্জুরাদি রক্ষের মন্তকের মজ্জা গুণ।

মজ্জা অর্থাৎ মাজি। ইহার। পাকে এবং রুসে স্বাহু, রক্ত পিত্র, ওকের ব্লব্বিকর, ব'যুনাশক এবং কফের রুদ্ধিকর।

নুতনজাত, ধাতু বিগ্রায়ে উদ্ভব, জীল, ব্যাধি বিশিষ্ট, কীটকত, এবং খেসকল উত্তদরশে বিরুচ় নাহয়, এ প্রকার কব্দ সমস্ত পারিত্যাগ করা বিধেয়া

कम्पर्श ममा थः।

मवन वर्ज।

সৈদ্ধার, সাযুদ্ধা, বিজ, সেশিকচ্চক, বোমক এবং উদ্ভিনাদি লবণ সমস্ত পারহ ক্রেমে উষ্ণ, বাতম এবং কফ ও পিতের প্রকোপকর। এবং পূর্বা ক্রমে। স্মিন্ধা, আহু এবং মলমূত্রের সঞ্চলকর।

रेमञ्जय नवन खन ।

্ নেত্তের হিতকর, মুখাপ্রায়, কচিকর, লঘু, অগ্নি রন্ধিকর, স্লিয়, মধুর রস বিশিষ্ট, রুষী, শীতল, দোষল এবং সর্বপ্রেকার লবন অপেকা শ্রেষ্ঠ।

विष्ठे न वर्ग खन

সক্ষার, জ্বিকর, কক্ষ, পূল এবং হৃত্যোগিয়া, ক্তিকর, তীক্ষা, উঞ্চ ও বায়ুব অন্তলোধ কর।
- সৌবচত ল লবণ গুণা।

আর্থাৎ ক্রফ লবন। পরিপাকে লঘু, উষ্ট-শ্রীর্যা, বিশদ, কটু, গুলা, শূল এবং বিশ্বস্থ হর, মুখপ্রিয়, প্লব্জিত ক্রিকর।

· (त्रायक नवन खन। ो

অর্থাৎ প্রাংশুলবণ। তীক্ষ্ণ, শৃতীন্ত উষ্ণ, জীসংস্বর্গের বর্ত্তনকর, পাঁরে।

डे फिन् मदन।

লবু, তীক্ষ্ণ, উষণ, উৎক্রেদী, স্বান্ধ্য প্রান্ধ্য পর্লোদকর, তিক্ত করু এবং

গুটিকা লবণ ভাগ]

কফ, বায়ু এবং ক্রমির শান্তিকর, লেখনকর, পিত্তপ্রেক্পেকর, অগ্নিকর,

উৰক্ষার লবণ গুণ:

(আহি কোব মৃতিকা হিইতে যে শবন উৎপ্রহয়) বালু.কর, ভলে ফুল দেশস্ব আকর হইতে যে শবন উৎবয় হয়) কটু এবং ছেদনকর।

यवकतानि खन।

যবকীর (শর্থাৎ যবের শুক ভাষা করত যে লবণ প্রায়ত হয়) যা জিকাকার (অর্থাৎ সাজীমাটী) পাকিম, এবং টক্ষ (অর্থাং সোহাগা) এই সকল গুলা, শর্মা গ্রহনী, কোষ, এবং শক্রাজন্মরী নাগক। সক্ষপ্রকার কারেই পাচক এবং রক্তাগিতকর।

স্থার্থিবং যবকার গুণ।

অগ্নিতুল্য- শুক্র এবং শ্রেমার দমনকারী অর্শ, প্রহি। এবং ওলারোগস।

डेभक्षात खन ।

छिस व्यः वाञ्च, अहमी व्यः बिमानक।

পাকিম ক্ষার গুণু:

ु मृज्येखि भाषित्रज्ञ এये समर्थः !

টক্ষণ-ক্ষার তেও

ৰুক্ষ, বায়ুবৰ্দ্ধনৰর, শ্লেষাশাশ্লক, পিছকুর, অগ্নিকর এবং ভীক্ষ।

ां क्वर्ग ख्ना।

স্বাহ, হৃদ্য, বৃংহত, বিসাধন, তিদোবের প্রকোপকর, শীতল, নেত্রের হিতকর এবং বিষয়।

ऋशा खुन।

, मल-त्रमविभिक्ते, मातक, भीजन, देः माक अवृद् बाग्न-शिक्श।

তাম গুণ।

ক্ষার-রস্বিশিষ্ট, মধুৰ, বেখনক্র, শীতশ এবং সারক।

काइमा खन।

তিক্ত-রস্বিশিষ্ট, লেখনকর, নেতের হিতকর এবং কফ ও বায়ুব শান্তি⊸ কর।

(लोश्खन।

বায়ুবৰ্দ্ধক, শীতণ এবং ভৃষণ, পিত 🧸 কফয়।

ज्भू ज्वर भीमक खन।

ত্রপু অর্থ রেং। ইহারা কটু এবং ক্রমনাশক, লবন-রস্বিলিই এবং লেখনকর।

मुक्ति विशे।

মুক্তা বিক্রম (১) বজ্রা (২) ইন্দ্রনীল, বৈত্র্য্য এবং স্ফটিক স্থাদি মনি সমস্ত নেত্রের হিত্তকর, শীতল, লেখন এবং বিষয়)

উৎकृष्णे जवा विकान।

व्यक्तित्र मरधा उष्क्रके।

यकिना, ताश्चिम, यतः त्नाहित भान् भीनाः मूर्गः, व्याहकी अवर मञ्जः (धाना,-मर्भूनं अक वरमद्वत रहेतन) अवर व्यान प्रश्ने अक वरमद्वत रहेतन) अवर व्यान प्रश्ने अक वरमद्वत रहेतन।

मार्टनत्मरधा छेरक्छ।

লাব, ভিত্তির, সারজ, কুর্ফী এন, কপিঞ্চা, মন্ত্র, বমী এবং কুর্ম। (বংস, – মধ্যম বয়ক্ষ পশুর হইলে উংক্ট জানিবে।

क त्वत मर्दिंग छे रक्त छै।

ক্রিটিয়, আমলক, আকা, খজার, পরাইক, পারাল এবং মাতুলুজ। ফিল, – যথাকালে উৎপত্নি হইলে উৎক্র জানিবে।

भारकत्र मस्या छेटक्रके।

म डीनः वालाक, पूर्क का विल्ली, मूनक, त्यालिका, मध् कश्री विवर जीवली। (भाक, - अधक, उक्त विवर मूजन इहेटन छेटत्र छे लानिटर।

वृ उ ७ इ (अंत मर्पा छे १ कि छे ।

গ্ৰা।

नवर त मरधा डे ९ कुछ ।

रेमक्रव।

व्यत्सेत भरधा छेरक्कछ ।

नामनकी এवः माफिन्न।

क रू तरमत मर्पा छेरक्व ।

-िशिक्याों , बदर खरी।

जिकदारमञ्ज्ञ मरधा छेरकुछ।

পটোল এবং বার্ছাকু।

মধুর রদের মধ্যে উৎক্ষ**ট।** য়ত এবং কোঁত্র অধ্যি মধু।

क्यांत्र ब्रह्म मध्य छेरक्र छे।

পুগকল এবং পরষক।

हेकू विकादित मरधा छेरक्वछे

भर्रे इ ।

गरमात गरधा छेरकुछ।

मधानर এवर देभावता

কৃতাল বিজ্ঞান। ালাক্ষণ্ড গুণ।

भावत व्यव परिकत । शिष्णी वन धर्णी मध्युक इहेता, व्यविद्धा वितर वाश्वित परिवास कार्य कर । र्क्ष मध श्वत इहेता, व्यव वन प्रविद्धा कर वाश्वित कर । र्क्ष मध श्वत इहेता, व्यव वन प्रविद्धा कर । र्क्ष मध श्वत इहेता, व्यव वितर विवास कर । र्क्ष मध श्वत विवास कर । रक्ष मधी व

অহুলোমকারী ছ্ট্রা থাকে। বিলেগী হইলে, তুর্কির, মুর্প্রির্র সংগ্রাছী, বলক্র, স্থাত্ন, লয়ু, অমিকর এবং কুষ্ণ তৃষ্ণার শান্তিকর হয়।

ষ্বমণ্ড গুণ।

क्षमा, कृष्टिकत, त्रुवा, भूचिकत वदः वनकत्र।

পায়্স গুণ।

বিভিন্তী (অর্থাৎ বায়ু এবং মলমূত্রাদির রোধক) বলকর, মেদ ও খ্লেখ-জনক এবং গুৰুপাক।

ক্ষণরা তান।

ष्पर्य.९ चिठूड़ी। - क्य अतर शिख्यानक, तलकत अवर वाश्वत मं{ खिनत।

আৰু প্ৰকরণ গুণ।

ধৌ হ, নির্দ্রাল, শুক্ষা, প্রোয়া, স্থাস্থা, উষা এবং স্থান্ত ছই ল (অর্থাং নিঃশোষরাপে কেন নিঃমারিত হইলো) অপো শ্রুছর। দৌ হ প্রান্ত্র অংখবা সিয়া নাছইলে কিছা শীতণ হইলে অয় গুক্পাক হইরা থাকে।

জন্ন গুণ।

বলার্থিকের, ধাতু প্রক্তিকর; প্রীভিজ্ঞানক, শুক্রের দিকের, গুক্, ধাতু এবং ইস্ক্রিয় সকলের বলকারী, কুষ্ণ, ফুশতা এবং ক্ষয়তানালক।

নুত্র ভণ্ডুলার গুণ। লেখাকর, ষ'হ্, ত্রিষ, ভক্রবর্ত্তক এব ওক্সাক।

পুরাজ্ব ভণ্ড লাল গুণ। বিরস, কক শধ্য এবং অগ্নিকৃদিকর।

অতি উফার গুণ্।

বলনাশক এরং শীতল।

एक् वि खन।

अक्षाक भवः विव्रम।

লৈপচ ও অসি ধার ও গ।

अ, निक्त अवर छक्श्रीक।

मद्गारधोडां स खन ।

সর্পাক, শীত্রপাকী এবং শীতক।

প্যু বিভাৱ গুণ।

किटन विद्रक्षिक अवः कृका।

ভাজা তণুল গুণ।

নঘুপাক এবং অগ্নির্দ্ধিকর।

চাউল ভাজা গুণ।

প্রণাম্বি, কফনাক, কক্ষ এবং পিতকর।

চিপিটক তাণ।

ভারি, স্মিন্ধ, শুক্রে, মল এব কফবর্দ্ধক।

চিপিটক প্রশার खन।

বলকর, বাহুনাশক এবং কোষ্ঠশু জ্বিকর।

ভুষ্টার গুণ ৷

वर्षाद गूजी। - नयु, अराक्षी এनर ककना नक।

বাঞ্জন গুলা

ञ्चित्र, जूष शैनः नेयर एक्कि उ इटेन् नयू এवः विषक र वहा। शास्क

শাক প্রকরণ । ...

দিন্ধ এবং নিস্পীড়িত (অর্থাৎ জল । ড়িড়ইয়া) মতে অধবা তৈলে
সংস্কার করিলে হিতকর হয়। ফিল নিউট্টিড এবং তৈল কি মূত হারা
সংস্কৃত না হইলে সহিতকর হটুয়া থাকে।

_क्यांश्म श्रकता।

মাংস অভাবতঃ র্ধা, জ্মাকর এবং বলকর। স্নেহ, ছোল, গাঁনালু, ফলাল একং কটুরনের সূত্ত পাক করিলে, –হিতকর, বলকর, কটিকর, গুড়ীকর এবং গুক্পাক হয়। যোল এবং গদ্ধজ্ঞবের সংযোগে সংস্কৃত্যু ছইলে পিতাও কক্জনিক এবং বল, মাণস এবং আগ্রির বর্ত্তনকর্ম হয়। প্রশ্ন পরিশুক্ষ ছইলে, — আগ্রি, হর্মানক, প্রীতিকর এবং গুরুপাক হয়; এবং ক্তিকর ও বল, মেধা অগ্রি, মাংস ওলাঃ এবং শুক্তের বর্ত্তনকারী ছইমা

উল্লুপ্ত মাংস গুণ।

মাণস, - উল্পু এবং পিট ছইলে, উল্পু কছে। উহা পরি ৩: কর সম গুণবিশিট হর বলিয়া অগ্নিপক ছইলে লঘু ছইয়া থাকে।

ম'ংস শূলকা প্রথিত এবং প্রলিপ্ত করিয়া (অর্থাৎ মাংদে মদলাদি মাধাইয়া) জজারে পাক কবিলে কিঞিৎ ওকপাক হয়।

বে মাংস উল্পু, ভজিত, পিউ প্রতিপ্ত কিছা করাহে পক কি পরিশুক প্রদিশ্ধ, শুলিকাঞাহিত কিছা এই প্রকার অপব কোন মতে পাক করা যায়, ভাহাত কিছিৎ গুক্পাক হয়।

टिजनशक भारम खन।

छिम्भवीर्धाः, शिखकत्र अदर धक्या क इस ।

ध्राच्यक गएम खन ।

লঘু, সংগ্রির দীপ্তিকর মুখপ্রির কাচিকর দৃষ্টির প্রাসন্নকর, পিতাল, মনে জ এবং উষ্ণীশ্য হয় না।

भारमह यूषिखन ।

ভৃত্তিকর, বলকর, স্থাস, হালু এবং ক্ষার্ট্রাগন্ধ; বাত, পিতে এবং প্রাথ-নাশক ও হুখ প্রার। মাংদের ইব দ ড়িগরস সংযুক্ত হইলে, – আুভি, ব্লল এবং অরহীন ব্যক্তিগনের, অরুগারা ক্ষীণ এবং ক্ষতোরস ব্যক্তিগনের ভ্রম এবং বিলিই-সন্ধি বাজিগনের, ক্লা এবং অ্লিইবভস ব্যক্তিগনের ভৃত্তিকর, সংখ্যভকর, শুক্তা, ওলাঃ এবং বলের বর্ধনকর, র্য্য এবং দোষম হয়।

রসগ্রহীত মাংস 🐠। 🖔

অধাৎ যে মাংসের রস গ্রহণ করা হয়, ভার্ন সেবন করিলে পুর্কিরাধন কি বলাধন হয় না। রস্তাহীত অর্থাৎ দীটামাংস, অজ্ঞীর্কর, বিষ্ঠি। रूक, विद्रम अतर वर्ध्युत द्विक्षिकत्र। मीश्राधि वाक्तिगटनेत्र शत्क (वर्षः ষাহাদি(গর যঠরাগ্নি অভান্ত ভীকু) ভাষাদিগের পক্ষেও রসএছীত মাৎস वर्षार भौतेमारम वाश्य अक्लाक लानित्त ।

' থানিজনাংস গুণ। (অর্থাৎ অভিহীন অ্সল এবং পুন্ধার প্রভর দারা চ্ণিছ) এমত -मारगहे পथा।

বেশবার গুণ।

পিপানী, অঠী, মরিচ গুড় এবং গুড়ের সহিত এককালেই উত্তমরপে প্ৰফ হওরা। ইহা গুৰুপাক, স্মিন্ধ, বলক্ৰ, বাভবোগ্য এবং স্কল ধাভূৰ शक्ति এবং যে সকল त। किंद्र गूथरण: स इह, जाहानिराद शक्क विरम्भ তৃত্রিকর এবং হিতকর।

সৌরাব গুণ।

কুধা এবং তৃষ্ণ'র শান্তিকর; মধুব, শীতল, স্কয়, অগ্নির্দ্ধিরর এবং वभैष व्यथना निष्त्र हम प्राता श्वमा-मधीन वास्क्रिमिटगर्ड गूर्थाश्रम। स्मीतात অব্যন্ত উৎকৃষ্ণ।

य्रं विकान।

ম্দাযুষ গুলু।

অর্থাৎ মুগোর যুষ, – ক্লত অথবা অক্তইন হউক, ইহা বিলেশ হুপ্থা।

ক্ষাগৰাকৃত গুণ।

অর্থাথ মুদর্যুব, – দান্তিন এবং জ্ঞাকা সহবোগে প্রস্তুত। মহর, ধূলা, গোধুম এবং কুলখ,/ লবন) সহযোগে কৃত ছইলে কতিকর, বয়ুপাক এবছ त्माट्यतः व्यक्तिद्वाधि द्या। ∫छेहा खाका अन्य माज्यि मध्युक देहेटगु कर्क अनेद् পিছের অবিরোধি হয়। ইং। বাতব্যাধির শক্তে উপকারী এশং ৰায়ুরাগার ্রীকে স্থাপা, কড়িকর, স্থ্রিকর। মুখ্ঞির এবং ক্র্পাক।

नियद्याम खन।

পারিশ এবং নিষের য্য, - ইহা কফ এবং মেদের পোধনকর, পিউস, আমিকর, মুখপ্রিয় এবং কৃমি, কুষ্ঠ এবং আঃরের পাতিকর।

मून (कत यूष खन।

খাদ, কাদ, প্রতিশ্যার প্রাসেক, শব্দ ি এবং জ্বয় । এবং ক্ফ, মেদ, ও, গলবোগ নিবারক।

কুলথের যুষ গুণ।

বায়ুনাশক, স্বাস ও পীনস রোগের শান্তিকর এবং তুনী, প্রতুনী, কাস, ক্রম গুলা এবং উদাবর্ত রোগের শান্তিকর হয়।

দামিড় ও আমলকের যুষ গুণ। মুখপ্রির, দোবের সংশ্মনকারী এবং শ্রুপাক।

মুদ্রা ও আমলকের যুষ গুণ।

বল এবং অগ্নিজনক, মৃচ্ছ্ন, ও মেদনালক এবং পিত ও ব'য়ু দমনকারী।
ল'আ'হা এবং কফ ও পিডের পক্ষে হিতকর।

যব, কোল এবং কুল দুর্থার যুষ গুণ। কণ্ঠলোধনকর এবং ব যুনালক।

সকল প্রকাণ ধান্যের যুষ গুণ। ষব, কোল এবং কুলখের সম গুণ সম্পান্ন, রুছণ এবং বলের বর্জন কর। প্রশা অর্থাৎ কলক গুণ।

क्ता अवर ७ वाशु हत्कत्र दिकक्त ।

কাম্বলিক গুণ ।,

প্ৰবেকি গুণসম্প্ৰয় (

দাড়িয়াত্র গুণ ॥

ক্রেন্ত্র কুল এবং বায়ুনাশুক্ ও অ্লির দীপ্তিকর।

क्तराखन-मर्भन।

नधास छन ।

কক্ষর, বলকর, ব্রেম্ব ব য়ুবাশক এবং গুরুণাক।

ভক্রাম গুণ।

পিততকর, বিযন।শক এবং রক্তের হানিকর।

অকৃত এবং কৃত্বিজ্ঞান।

তৈল, লবন এবং ঝাল; এই সকল দ্রব্য সহযোগে প্রস্তুত না হইলে ভাছাকে 'অক্ত, বলে এবং গোরস, ধান্যাস এবং কলান সহযোগে প্রস্তুত হইলে ভাছাকে 'কৃত, বলে।

সংস্ভ এবং অসংস্ত মুষ গুণ।

সংস্ত অপেকা অসংস্ত যূব,—লঘুরসবিশিষ্ট ও হিতকর।

কাখলিক।

"(অর্থাৎ দ্ধিমন্ত আল সহযোগে প্র হইরা যেযুব প্রস্তুত হর)।

जिन कल्क रेजानि खन।

ভিলকলক, ভিলবিক্তি, শুদ্ধশাক, শারাক্ষ্র এবং শিগুকী। এই সকল
গুক্পাক এবং ও পিতৃবর্জনকর।

्वछेक खन्।

जिनकल्कामित सम छ्रपविनिष्ठ अवर विद्वारी।

রাগধাড়ব গুণ।

मधुलाक, त्रश्रून त्रवा, कृता, त्रिक्, व्यक्तित्र, क्ष्मा, मुक्ता, जन, हर्कि

त्रमाना खन।

'লয়ং অল্লদ্ধি /৪ চারি দের, পরিক্ষার নিছরি /২ ছই সেরু, ক্লিক্রিম্থ ৪ চারি ভোলা; হত ২০ কুড়ি ভোলা, অঠী ৪ চারি মানা, নালাইচ ৪ চারি মাষা মরিচ ১৬ বেলি দায়া এবং লবদ ১৬ বেলে মাষা; े.ই সমন্ত দ্বের একত্রে হন্ত হল দ্বারা মন্থন করিয়া শরিক্ষার স্থক্ষা ব্যক্ত লংগেহ ছাঁকিবে। তৎপর মৃগনাভী, চন্দন, অগুক এবং কণুরিবাসিত মাটির পাত্রে উহা উত্তদ রূপে আলোড়ন করিবে। ভগ্রান বাহ্যদেব এইরুণ রসালা প্রস্তুত করিয়া পান করিতেন।

জল রসবিশিষ্ট দ্নিজ্ঞান মহিষের ছ্যের দ্যি ৮ সের এবং শুজ চিনি /৪ চারি সের; এই ছুই জবা প্রথমত: কিঞ্চিং কিঞ্চিং পরিমাণে পরিমাণে বজে নিক্ষেপ করিবে, তংপর আর্ছ খন ছ্যের সহিত নূতন মাটির পাজে ভংগ উদ্ধান্ত হাঁকিয়া রাখিবে, পশ্চাং একাচ, লবজ, কপুরি এবং মরিচের সহিত উহা মিশাইয়া আলোড়ন করিবে। ভোজন প্রিয় রকোদর এইরপে রসালা প্রস্তুত করিতেন।

त्रमानं,—वगस विक्षिण मित्र श्रीकिम मित्र किति वीका वर हैसि-सित्र वन तृष्ट दय। धीय किया नेतर महर्मानं एका कित्र चारा महीत विश्वक्ष कहेला, श्रीमेख खोगप्सारंग मंत्रीत शिम कहें, में मुद्र श्री ख्रीम किया महीत भौने कहें हां, धीरे त्रमान। शाम किति सामानेत ग्राह्म श्रीद श्रीके क्या। त्रमाना ख्रुक्त कित्र ते, वगक्त कित्र ते, चित्र ते, चित्र विश्वकिम कित्र कित्र ते, दक्क ख्रुत क् स्मित्र महत्व भौजन, मात्र के, धीर हर्ष्ण श्रीके, क्षी कित्र ते।

मिनिज जीता।

७ इ म अपू क मि कर्म।

্বেছকৰ, মুখপ্ৰিয় এবং ৰায়ুনাশকু।

মস্থ গুণ

- মুত্রুক্ত জনমার আপ্লুভ এবং অত্যন্ত এব নহে ও আতান্ত শীতনও ন্তে এর পে শুক্ত প্রান্ত করিলে মহ বছে মন্ত্রনা ব্লকর, পিপাস। এবং বিষয়। ্ষাস, তৈল প্রবং থাড়, একতে পাক হইলে মুছকুচ্ছ এবং উনাবর্ত রোগের শান্তিকর হয়।

শার্করা, ইফুরস এবং আক্ষা মিলিত হইলে পিজবিকার নাশক হয়। আক্ষা এবং মধূক মিলিত হইলে, কফরোগ নাশক হয়। তিফলা মিলিত হইলে মলদোধের অল্লোমকর হয়।

আল-বসবিশিষ্ট অথবা অল বিহীন গোড়িশানক অর্থার জাতার পানা,— গুকপাক এবং মূত্রে ছিকর। উহা মিছ্রি, ফ্রাক্রণ এবং শর্করার সহ মিলিভ হইলে অপ্পারস্বিশিষ্ট, তীক্ষ্ণ এবং শীত্র হয়।

দ্রাক্ষাপানক গুণ।

<u>অ্</u>মনাশক, মুদ্ছ[া], দ ছ এবং ভৃষ্ণানাশক।

প্রসক্ত কোলের পানক হল।

মুখপ্রির এবং বিফটী।

অবের সংযোগ, সংস্কার এবং মাতা বিশেষকপো বিদিছ ছইয়া সেই স্থিযোগের অনুসারে পানকেয় গুৰু লাখব উপদেশা প্রালান করা বিধেয়।

ক্রিজাত ভক্ষ দ্রব্য তে।

বলকর, শুক্রর্থিকর, মুখ প্রিয়, স্থান্ধী, অদাহী, পুর্ফিকর, শায়িকর, এবং পিজায়। উহা ঘূরণক হইলে, -বৈদকর, মুখপ্রিয়, ক্ফকর, বাত পিডায়, শুক্রুর্থিকর, গুরুগ্রে এবং রক্তমাংসর্ধিকর।

ওড়জাত ভক্তাক্রী, গুণ।

র্জিরু, গুরুণাক, ব'রুনীশক, অদী:হী, পিতর শুক্র এবং কফের র্জিকর।

স্থ চাদি দারা পক গোধুমচুর্ণজাত পিউক এবং বধুমি শ্রেত পিউক গুল।

रिट्रमस्त्रभ धक्रभाक अवर वर्षन।

(मामक खन।

অহ্যন্ত হুর্জুর অর্থাৎ শীত্র পারিপাক হয়না।

ममुक खन।

ক্ষতিকর, অন্নিকর, অরের হিছকর, পিডায়, ব'য়ুনাশক, ওঞ্পাক, মৃষ্টভন্ন এবং বলবর্জনকর!

वियानमन खन।

মুধাপ্রার, স্থান্ধী, মধুব, স্মিড, কফকর, গুরুণাক, বায়ুনাপক, ভৃতিকর এবং বলকর।

ता धूब हूर्। मञ्जी म ज्कार वा खन।

রংহন, বায়ু এবং পিত্তয় এবং বলকর। ইহা গুকমিশ্রিত হইলে ফেনক ক্রে। ফেনক, – অত্যন্ত মুখপ্রির, হিতকারক এবং লঘুপাক।

মুদ্ধ দি বেসবার সমূহের মধ্যে, – পূর্ণা বিউজ্জী। বেসবার, – মাংস সহিত হইলে সম্পূর্ণা কহে। সম্পূর্ণা – গুক্সাক এবং রংছণ।

পালল গুণ।

আৰ্থাৎ পিষ্ঠক বিশেষ। শ্লেখ'জনক।

भक्त नि खन्।

অর্থাৎ বিষ্টক বিশেষ। হৃফ এবং পির্ভার আকোপকর, বিদাহী, অভান্ত বলপ্রদানতে এবং বিস্থান গুরুপাক।

द्वित्व खन्।

পিছ কবিশেষ। সমুপাক, ক্রীয়-রসবিশিষ্ট এবং ব'য়ুর সঞ্চয়কর।
মাষক সাই সংক্রোন্তি প্রিকৈ গুণ।

বিষ্ণন্তী পিতত্তপবিশিষ্ঠ, শ্লেমান্দিক, মলের সম্ভাতকর, বলকর, শুক্র-র্দ্ধিকর এবং গুৰুপাক।

কুহ চিক কা।

. वर्षां प्रश्न विकातका व याना जवा। अकुला कि अवः वाकास लिस्तू

अक्षुति उ प्रत्याध्यत उक्तप्रवाखनी.

শুকপাক, বায়ু এবং পিতের বর্ষনকর, বিদাহী এবং উৎক্রেনজনক, কক্ষ এবং দৃষ্টির দোষকর।

• মূত্রপর্কাণ্যদ্রব্য ত্রন

হৃদ্য হুগন্ধী, শুক্তর্জিকর এবং লঘ্পাক; ব'য়ু এবং পিত্তী, ব্লকর এবং বর্ণ দৃটির পদ্ধে হিতকর।

তৈলপ্তঃ খাদ্যান্দ্ৰা গুণ!

বিদামী, ওক্পাক, পরিপাকে বটু-রমবিশিক্ত, উক্ত, বায়ু এবং চৃষ্টি-মাশক; পিত্তকর এবং ভ্রের দোষ উৎপাদক।

> ক্প, মাংশ, চিনি, তিলা, মাধকলাই ছারা উপায় স্কৃত ভক্ষ দুবো ভালা!

चनकत्र, अक्नांक, दुःद्र अवर रुपद्र क्या

কপ'ল এবং অঙ্গার পক্ত থানাদ্রবা তুর্ব।

লযুপাক এবং বায়ুব **প্রেকাপক্র। ইহা স্**পক ছ**ইলে ল**য়ু এবং পার্বেও অভান্ত লয়ু হয়।

কিলাট অর্থাৎ ছানাদি ই্শ্বনিকার জাত ভক্ষাদ্রের গুণ।
গুৰুপাক এবং কফের বর্জনুকর।
শুকুসমাস গুণ।

অর্থাৎ অর্থা সিজ গোর্নাদি। ব'তেকর, কক্ষ, গুরুপাক এবং মলের সৃষ্ঠিকর।

वाष्ट्राञ्चन ।

অর্থাৎ ভৃত্তিয়া । উদ্বিধি কাস, পীনস এবং দেহরে গানাপক্। ।
(১৫)

धारलालुम खन।

শগুপাক এবং কফ ও মেদের পোধনকর।

সর্বপ্রশার শক্ত গুণ।

অর্থাৎ সকল প্রাকার ছাতু। – রংহল, র্ব্য, তৃষ্ণা, পিত্ত এবং কফ্ষা খাইবামাতে বলকর ভেদক এবং ব যুনাশক। ছাতু ভবল না ছইয়া পিওা-ক্লুভি হইলে গুৰুপাক এবং খর অথাৎ কঠিন ছইলে বিশেষ গুৰুপাক ছয়। শক্তব অবলেহিকা অর্থাৎ ভিহ্নার অব্যভাগ দারা সাদর যে,গা ছাতু-কোমলত্ব হেতু আশু জীৰ্ণ হয়।

ला क कार्या

व्यर्थार थहे। इकि এवर व्यक्तिमात नामक, व्यक्तिकत, कक्तनामक, व्यक्तकत, ক্ষার এবং মধুর রস্বিশিক্ত, লখপান্ধ, তৃঞ। এবং মলনাশক।

लाष्ट्रभावः छन।

অর্থ ও খরের ও জা। তৃক্ষা, ছ'র্ল, দাহ, হর্ম এবং রোগম। রক্ত পিত দাহ এবং জুঃমাশক।

চিপিটক (4) ।

অর্থ চিডা । গুরুলাক, স্লিগ্ধ রু হুণ, কফের বর্দ্ধনকর, ক্ষীরভাব জন্য বদকর, বায়ুনাশক এবং মদের সম্বভিকর।

নুতন তঞ্জ জিন। নতান্ত হজাংস, দধুব-রসবিশিষ্ট এবং র হন।

পুর†তন তণ্ডল তাণ।

সন্ধানকর এবং মেহন শক।

অব্যের সংযোগ, সংস্থার এবং বিকার বিবেচনা পূর্বক, কিছা কারণ ্বিদ্তি হইয়। ভোক্তার অভিশ বানুসারে বছ । এবোর উৎপাদকত্ব হেছু শাঞ্জ নুসারে ভক্ষাজবাদি নির্দ্ধে করা বিধেয়।

অনুপান বিজ্ঞান।

কেছ কেছ আনরস ত্যাগকরিয়া কেবল মগুররসে আসত হন, কেছ কেছবা
শাল এবং মধুর উভরবিধ রসেই পরি তুপ্ত লাভ করিয়া থাকেন। ইহাদিগের পথ্য বিবিধ প্রকার। শীতল এবং উফ জল, আসব এবং মদ্য,
মুষ, ফলাল এবং ধান, লি এবং ছয়; এই সমস্ত বসের মধ্যে যাহার প্রেক্ষ
যে অনুপান হিডকর হইবে, ব্যাধি, কাস এবং সেই সেই ভোজা নির্বের্গ পানির পার্নিক মারাল্লারে ভাষাকে তাহাই প্রদান করা বাবছেয়। নির্নাল, এবং
পরিক মারাল্লারে ভাষাকে তাহাই প্রদান করা বাবছেয়। নির্নাল, এবং
পরিকার পাত্রন্থিত সলিলই সমস্ত অলুপানের মধ্যে উৎরেট। লোকের
জাথাবিধি ভোয়াত্মক সমুদায় রসই প্রান্ত গ্রহা; অর্থাছ শৈশব কাল হইতে
বাল-কাল অবধি সকল ব্যুক্তের ক্রিকেই রসময় অনুণান সেবন করাতেইট
পারা যায়।

সমস্ত প্রকার তৈলাক্ত পদার্থ সেবনের পক্ষে উষ্ণ জল জলপান ব্যব-ভেয়। ক্ষেবল ভল্লাভক জ্বগাই তেলা এবং তুবন্ধক ক্ষেৎ সেবনের পক্ষে উদ্ধা বিধেয় নহে। কেহ কেহ তৈলাক্ত পদার্থ দেবনের পক্ষে যুয় ও জ্ঞা কাঞ্জিক শ্রপান নি র্ক্ষণ করেন।

মধু ও সমন্তর্গ পিন্টার ভোজনের পক্ষে,— দ্ধি, পারস এবং মদ্দাবা প্রীভিত ব্যক্তিগণের পক্ষে এবং বিষপারী ব্যক্তিগণের পুকে, শীতিল জল অনুপান ব্যবস্থো।

কেছ কেছ পিটাল্ল এবং শালী মূদ্যা আদি ভোজনকারী ব্যক্তিগণের পক্ষেনশীলত জল, ভূদ অথবা মাংসের রস অতৃপান ব্যবস্থা করেন!

যুদ্ধ, পথ শ্রম এবং আভিপ জনিত উন্পে এবং বিষ এবং মদ,জনিত বিরোগে, — মাষকলাই আদি অনুপান অথবা ধি,নালে কিব। দ্যিনত অনুপান প্রিনিজ।

সকল প্রকার মাংশের গক্ষে, ফল্পানাভান্ত অর্থাৎ মদ্যপায়ী ব্যক্তি-গাণের পক্ষে মদাই অনুপান এবং মদ্যপানে অন্ভিন্ত ব্যক্তিগণের পক্ষে শীতল সলিল অধ্বাফলাক গধ্য।

শ্বাক্রান্ত, পথ প্রান্ত ও অধিক কথে পাকখন এবং জীম্পার্গ করিছ

সুরাক্রণ কিছা ত ল ব্যক্তিগণের পকে মধ্দক অর্থাৎ মধুর পান: শুর-

নিরোগ ব্যক্তিগণের পক্ষে চিত্র সর্থাৎ চিতা পথ্য।
বায়ুপীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, স্লিগ্ধ স্থাচ উষ্ণ দ্রব্য পথ্য।
কফণীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, কক্ষ স্থাচ শীতল দ্রব্য পথ্য।
পিত্তপীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, মধুব স্থাচ শীতল দ্রব্য পথ্য।
রক্তিপিত্রোধাক্রান্ত ব্যক্তিগণের পক্ষে, হুগ্ধ এবং ইফুরস পথ্য।
বিষ্ণীড়িত ব্যক্তিগণের পক্ষে, স্লের্ক স্থাৎ স্থাক্ষদ, সেলু স্থাৎ হোমাক্রিক এবং শিরীষ্ঠ্র স্থাস্ব পথ্য।

वर्ज मशुरहत श्थवर चल्लान विङ्व न

পুর্বের্বিক শসা জাতির এবং বদরাল ও বৈদলের গক্ষে ধান্যাল সম্পর্কে এসত।

জ্ঞান ও ধ্যজ অর্থাৎ মক,দশ জাত পশুর মাংসের শক্তে পিশ্পনীয় শাসের সম্পান বার্থেয়।

বিজির জন্তর মাণ্ডের প্রেক, কোল এবং বনরের জানব জন্ত্রান বিধেয়।

প্রাভ্র জন্তর মাংসের প্রিক, - শীর্রকের আগ্রব অন্তপান প্রানিদ্ধ।
গুরুষ্পান জন্তর মাংসের প্রেক, -- থজ্জুর এবং নারিকেলের অংসব অর্থপান বিধেয়।

প্রসহ জন্তর মাণ্ডের পক্ষে, — অধ্ব গল্পার বিশ্ব আইপান ব্যবস্থাসিক। পর্নিম্বের মাণ্ডের প্রেক, — ক্ষণান্ধার অর্থাঃ সজিনা রক্ষের আনব্ব

বিদেশর জন্তর মাংলের পক্ষে, –ফগসারের বাসব অন্পান বাবছের (একশক জন্তর মাংলের পক্ষে, – ভিকলার আমৰ অনুপান প্রযোজ্য) অনুদ্র্শক জন্তর মাংলের পক্ষে, শদিরের অ্সব অনুধান বিধেয়। জুলচর জভূদিগের মাংলের পাকে, – শৃদা্টিক আর্থাৎ পাণ্ডিকল এবং ক্সেক্তকর আ্পুতি কেন্ত্রের আসব অন্তথ্য প্রবিজ্ঞা।

কোশবাসী এবং পাদী অর্থাৎ ক্ষুদ্র ফুল্র প্রদাবশিষ্ট জন্তব মাংসের পক্ষে, পানীকল ও কেন্তুরের আসব জন্ত্রান ব্যবস্থের।

প্রবজন্ত দিগের মাংদের পাকে, – ইকুরসের আসেব শুল্পান বিধেয়।
নিদ্যাত জন্ত দিগের, মাংদের পাকে, – মুণালেক, আসব শহপান প্রাযোজ্য।

সমুত্রজ্যত জন্তদিবোর মা সের প্রেক্ট, নাতুর্জের আসুস্ব অনুপ্রি বাবস্থের।

শতাফলের পাক্ষে, — গ্রা এবং উৎপালন দের শাসের অস্পান। ক্ষাইফপের পাক্ষে, — দা ভয় এবং বেজের আসের সম্পান— মুধুবফলের পাক্ষে, — তিক্টুবুজ কল্পের আসের শহুপান— তারক্লাদির পাক্ষে — ধানাকে সম্পান—

কটুক জৰ্পাৎ কাল কেলাদির পাচাংকা,- দুকা। নল এবং কেন্দেরে জানোৰ জান্ধান—

পিপ্পল্যাদি কলের পক্ষেও স্থান্ত প্রথং কেন্ত্রের।) এবং কল্পেকর বিশিৎ পর্কর্যাক্ষর অধ্যান ক্রিয়ান ক্রেয়ান ক্রিয়ান ক্রেয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ানের ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক

কুমাও শান কলের পক্ষে—দাক্ষা (অথাৎ দাক্ষরিন্তা) এব ক্রী-রের অংসব অভ্পান—

চচ্চ আদির পাকে, - লোপুরে আনির অইবান -মলুকপনী আদির পাকে, - মধাপঞ্চার আসব অইপান -

জাবতী আদির গংকা- পুর্য়াক্ত শহুপান -

কুত্তপানের পক্ষে, – পুরে, ত অসুগান –

তাল মন্তকাদির পাক্ষা, (ক্ষাং ভাল খজ্জি ক্ষাদির মাধির পাক্ষে) ক্ষ কলের স্থানব অনুপান — ব

লৈয়বাদির পক্ষে, – হরোদব এবং ক্যাঞ্জক অহপান – শব্দ দ্রের প্রেক্ষ জন্মই অহপান ব্যবস্থেয়।

সমত জনুপানের মধ্যে স্থৃতির জবই সর্বোৎকৃষ্ট, যাহার প্রক্রেজন হিতকর তাহার পক্ষে সেই জবই বাবছেয়ে।

ৰাত এবং ৰুকে - উষ্ণ জল এবং শিক্ত ও নজে শীতল **লগ** প্লাগ্য

আহারদোষ বিশিষ্ট (অর্থাৎ গুরু কিন্তা পরিনিতই টুউক) কৃথিত অনুপানের ছারা সেই ভূক্তার সহজেই পরিপাক হইলা থাকি। অনুপান স্মাকরপে সেবিত হইলে কচির বংহণ, র্য্য, দেবে সংঘাতের ভেদক, ভৃত্তিকর, মার্দ্দবকর, শ্রাম, এবং ক্লমম, প্র্থজনক, অগ্লিকর, দোবের শান্তিকর, অত্যন্ত পিপাসার শান্তিকর, বলকর এবং বর্ণকর হর।

অনুপান পুরের পীত হইলে শরীর কষিত করিয়া থাকে, মধ্যে সেবিত ছইলে সমভাবে থাকে এবং পশ্চাৎ পান করিশে বর্ষন করিয়া থাকে। এ কারন বিশেষরূপ বিবেচনা পুর্বক অনুপান প্রয়োগ করা বিধেয়।

যে সকল ব্যক্তি দ্রব্যপদার্থ পান করে না, সেই সকল ব্যক্তির অন জ্ঞিন্ন, ছিঃত্ব প্রাপ্ত প্রশং পীড়া জনক হইনা থাকে, একারণ অনুপান সেবন করা কর্ত্তব্য।

খাস এবং কাস রোগাজান্ত বাজির পক্ষে এবং জ্ঞার অর্থাৎ স্কন্দ এবং কন্দের সন্ধি খানের, উর্জ্জাগ গতরোগ,— অনুপান সেবন বর্ত্তব্য নছে।

ক্ষতোরদ ব্যক্তি প্রমেকী এবং যাহার স্বর ওদ হইরাছে এইরূপ রোগী ক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে পনুপান অবিধেয়।

জনুপান সেবন বরিয়। পথ জমণ, জাধিককথোপকথন জাধারন, গান এবং নিজা জাবিধেয়। নিষিধেয়র জানাতর ছাইলে সেই জনুপান কণ্ঠ এবং বৃক্ষান্থলৈ থাকিয়া আমাশিয়কে দূযিত করে এবং কম্পা, জায়ির জাব্দলত। ছার্দি, জার্থাধ্বমন জাদি বিবিধ বোগ উৎপার্থন করে।

যে সমন্ত ব্যক্তি স্কুনার বিলাসী, এবং চিরস্থাভান্ত, সেই সকল ব্যক্তি পরিশ্রমিক কার্যো নিশ্চেষ্ট্রা জন্য মন্দাগ্নি এবং রোগাক্রান্ত হয়। একারণ কোন্কোন্ত কাল্ কাল্ অব্য জন্থাক এবং কোন্ কোন্ অব্য লন্থাক ইহা বিশেষ্ট্রনে আত্ত হইয়া সভাব, সংস্থার মাত্রা এবং কালানুসারে অনুপান ব্যবস্থা করা ভাহাদিশের পান্কে বিশেষ বিশেষ বিধেয়। কিন্তু যে সমন্ত ব্যক্তি বলিষ্ঠ পরিশ্রমী; দীপ্রাগ্নি বিশিষ্ট এবং ধর অর্থাৎ কঠিন অব্য ভক্ষণ পূর্বক কালাভিপাত করে, সেই সমন্ত ব্যক্তির পাক্ষে আহারীয় জবোর গুক্ত্ব

সরাত্মপান বর্জ বিজ্ঞান।

বিশ্বত জ্ঞাসপুর্ণ আয়তন গিলিন্ট, এবং গবিত্র এমত কছানদ (অর্ধাৎ পাকলালা) প্রস্তুত করা বিধেয়। বিশ্বত লোক বর্ত্ত উক্তম এবং বিবিধ গুণ বিশিষ্ট ভক্ষা আন প্রাক করাইয়া আতি পবিত্র স্থানে অতি গোপনে সেই জন্ম সংস্থাপন করিতে হইবে, তৎপর সেই সিন্ধান্তে বিষয় উষধ স্পর্শ করাইয়া ভাহার বিষনাল করত, তালরত ছারা বীজ্ঞানন্তর ভাহাতে জ্লা প্রোক্ষণ কবিবে; পশ্চাত সিন্ধান্ত দ্বারা অর্থাৎ ভন্ত শাস্ত্রে ভিন্নানি চক্রন্থিত সাধক নামের আন্যাক্ষর যুক্ত মন্ত্র দ্বারা পুত করিয়া আহার করিবে।

পরিবেশন পাতা ভিত্তান।

কাক্ষারেলে মর্থাৎ মনিমর পাত্রে ম্বত, - রজত্বর-পাত্রে প নায় দ্রবা।

ইন্দ্রেল পাত্রে, ফল সমূহ এবং অপথ্য ভক্ষদ্রবা সকল, - স্থ্রর্গমর পাত্রে
পরিশুক্ত এবং প্রাদির (অর্থাৎ প্রালিশু) দ্রবা সমূহ - রজত পাত্রে, প্রদ্রের
মর্থাৎ তরল ও রসময় পদ র্থ সকল, - প্রাশ্রবময় পাত্রে, - কটার (মর্থাৎ তক্রে, দির স্ব এবং ব্যঞ্জন) এবং বড় মর্থার অর্থাৎ পানীয় বিশেষ - ভাজমুয় পাত্রে, স্পীতল এবং স্থাক ছু মুম্মর অর্থাণ কাংচ কিন্তা স্ফাটিকময় শীতল ও স্ক্র্ল পাত্রে, পানায় জল পানক (অর্থাৎ গুড় মর্ এবং শক্রাদির পানা) এবং মত্য - বৈত্র্যাময় পাত্রে, - রাগ্যাত্রে, - স্থাপদ্র মর্মিদ পাল্রেল সম্পুত্র নির্মাল পাত্রি, - রাগ্রাত্রে, - স্থাপদ্র (অর্থাৎ স্থামির স্থান স্বালিশ্র পাত্রি স্বালিশ্র পাত্রি স্থান স্থাতির, - স্থানিশ্র স্থান স্থাতির সম্পুত্র প্রালহ (অর্থাৎ স্থানের পাত্রে, - স্থানিশ্র স্থানি স্থানিশ্র স্থানি প্রালহ (অর্থাৎ প্রালহ স্থানিশ্র স্থানিশ্র

ফল এবং অপর হ ভক্ষা দ্রব্য সকল ভোজন কর্তার দক্ষিণ পাথে এবং
প্রাদ্রবাদের সালাইল। দিবে প্রক্রিণ গুড়জাত খাদু দ্রব্য রাম্বাড়ব নিবং
শটক (অর্থাং যুত এবং জাদি শিশুত শালীচূর্ণ) আদি সন্মূথে কিম্বা দক্ষিণ
বিশ্ব এই উভ্যের মধ্যে সাজাইলা দিবে।

মনোরমা শুভজনক, পবিতা, জনতারহিত এবং সিগা পি পা ভূমিন সমতল ছানে ভেজা উপবেশন করিয়া স্থাংজ্ত স্থামন মত বিশুদ্ধ না অত্যন্ত শীতল না অত্যন্ত উষ্ণ সদ্যুগ্ত হিতকর আধারীয় দ্রাংভাজন করিবে।

মধুর বসবিশিষ্ট জবা সমূহ **অ**াগ্র, অল এবং শ্বন রসবিশিষ্ট জবা স্বত্ত মধে। এবং অবশিষ্ঠ জবাদি পরিশেষে ভোজা করিবে।

দাভিষাদি কল সকল অতিয়ে ভব্দণ করিরা তৎপর পানীর সকল সেবেল করিবে, ত প্রে বিৰিধি ভব্দ ভোজন করা কর্তান

মলভেদে গড় প্র'র্থ সমূহ আত্রে ভোজন করং বর্ত্রা। ভোজনের প্রারেভে মধ্যে এবং শেষেই হউক ফলের মধ্যে অ'্ডাক্র, দেধিয়, আমিলক কলভোজন করা বাবভেয়ে।

মূণ'ল, বিস, শালু, কল্প এবং ইফু আদি আভারের আতা ভোজন কয়িবে, আছার সমাপ্ত হইলে এ সকল সেবন করা অবিধিয়।

ক্ষুণার্ভ্র বাক্তি যথাসমরে উচ্চ সানে সমভাবে সূথে উপ্রিট কটনা মাজাদি বিবেচনা কর্ডঃ আপেন প্রাচ্চিত্র তাস্থাস, স্মিন্ধ, সৈবপ্রধান লগু এবং উষ্ণ দ্রবা সমূহ শীল্প শীল্প ভৌতন কবিবে। এরূপ কর যথাকালে স্থিটি হটলে তৃত্তিকর হটনা থাকে একা ভোৱে প্রিড়াকর হন্ধনা।

্ শিষু জাৰ্য হুত্ত রে পরিপাকি ইইয়া থাকে। স্মিন্ধ এবং উষ্ণ জাৰ্য বলকর থাৰিং অগ্নিকর।

ি
শীত্র শীঘ ভালন কলিলে ভুজার সমকালেই পরিপাক হইরা থাকে।
রোগহীন, জবপ্রবিদ্ধানা মূল সমূহ স্থাও জার্ন হয় এবং ম অভ্যাবে ভ্রম সেবন করিলে ধার্ব সমতা বিধান হইরাথাকে।

আহারের সময় নিরূপণ।

বৈ যে ঋতুতে রাত্রি অভান্ত দীর্ঘ অর্থান্ত ইয়, সেই দেই ঋতুতে ঋতুদোৰ মোদদের উপথে গী ভোজন দ্রব্য প্রাভিনালে ভোজন করা কর্ত্রবা, যে যে ঋতুতে দিবা অভান্ত দীর্ঘ হয়, সেই সেই ঋতুতে তৎকালে উপটোর্গ ছোজা দ্রান্ত্র অপরাহে ভোজন করা রিধের। যে যে প্রত্তে দিবারাত্র সমভাগ হইয়া ত্রকালে দিবাগিত সমান বিভাগ করিয়া

অপ্রাপ্ত কালে অর্থাং ফুরা করিবার মত্রে এবং স্কীত কালে অর্থাং ভোজনের সময় অতীত হইলে, ভোজন করা বিধেয় নছে। অপ্রাণ কালে শরীর লঘু হয় না, তংকালে ভোজন করিলে নানারণ পীড়া উৎপন্ন হয়। এমত কি ভাষাতে মৃত্যুও উপস্থিত হইয়া থাকে। অতীতকালে যঠরানল বায়ুবারা স্থাচ্চন্ন থাকে, ভংকালে আছার করিলে ভূজান মৃত্যুত্ত কার্মে পরিপাক হল এবং দিতীরবার ভোজনের প্রশ্লৌস থাকে না। — ভাৎপ্রাথি, বথা সমায় অর্থাং ক্ষুধার সম্বেই ভোজন করিবে।

আহার করণের দিক নিরূপণ।

পূর্বিমূপে বসিয়া আহার কবিলে প্রমায়ু রুদ্ধি, দক্ষিণে যণ লাভ। প্রিচমে ধনী এবং উত্তরে ক্লী হয়।

আহারের পরিমাণ।

অপ অথবা অধিক পরিমাণে ভোজন করা বিধি নছে। পরিমিত্ত আহারই বিধের। অপপ পরিমাণে আহার কবিলে অসভোষ উৎপত্ন এবং বিদিক্ষ হইরা থাকে। অধিক পরিমাণে ভোলন করিলে আলস্য জ্যে। শারীর ভার হর, আটোপ অর্থাৎ বায়ু জন্য উদর আগ্রাত হয় এবং শারীর অবস্ক হইরা থাকে।

ছই ভাগ অন এবং এক ভারা পানার পান করিয়া বায়ু সক্ষরণের প্রীন্য উদর মধ্যে এক ভাগ ক্ষুন রাখিলে পরিমিত আছার বলা যায়।

দিব'রাত্রির সময় এবং দেবাদি বিভাগ করিন্ত: এই সমূহে দেয়ি রহিত।
ুপুর্বের ক্ত গুণবিশিষ্ট সুংস্কৃত অন্ন ভোজন করাই কর্তব্য।

. পরিভাজা তার।

নিঃদার, দোষবিশিক্ত, অভিষ্ঠ , পাষাণ, তুন অথবা লোক যুক্ত দিক (অথবিং যে অনে হনা জলো) প্রুক্তিত, আহ্-রস্থীন এবং হুর্গন্তযুক্ত জন পরিত্যাগ করিবে। অধিক সিদ্ধ অথবা সিদ্ধ, অভ্যন্ত তৃষ্ণ, এবুং উপদ্ধ (অর্থাৎ আঁকা) এবং আহ্রস রহিত জন পরিত্যজা জানিবে। শীত্র ভারকে বিভীয়বার উষ্ণ করিলে করিবেনা।

আহারের বিধি।

আহার করিতে বসিয়া উত্তরোধন স্থাহতর মধ্য ভোজন করিতে হয়। আছার করিতে করিতে পুন: পুনঃ মুখ প্রকালন করা কর্তব্য, যেহেতু জিহবা বিভন্ন ছইলে আলে উত্তন কচি জামে এবং প্রথম এক প্রকার, আহ্বারা জিহবা তর্পিত হইলে, অনারপ ফ্রবোর আস্থাদন, উত্তমরূপে উপলব্ধি হয় भा। अस, - चात्र इहेटन, - श्रिष्ठा, तन, भूषि, उरमाइ, हर्य अवर सूथ उर-পার হয়, অস্বাত্ন হইলে ভাহার বিপরীত হইয়া উচে-একবার যে দ্রুষা আহাব করিয়া পুনর্বার সেই দ্রব্য ভোজন করিতে ইচ্ছা জ্ঞান্যে, তাহাকেই স্থাত ভোজন বলে। ভোজনের মধ্যে মধ্যে এবং আছারাতে জল পান করা বিধেয়।

আচমন বিধি।

আচমনের সময়ে দন্তের সন্তর্গত অলাদি অপ্পে অপ্পে বহিগতি কর ৰৰ্ভবা। ভাছা না করিলে মুখে হুৰ্গন্ধ উৎপন্ন হইনা থাকে।

आधात कतित्व करू कीर्य रहेता, यंश्व विषक्ष हहेता, शिक्ष ति कि हो। ভোজন না করিলে লেখার শান্তি ছইয়া থাকে।

আহারান্তে মুখ সংশোধন বিধি।

খুমের ছারা অথবা ক্যায় ক্টুএবং ভিক্তরসের ছারা কিছা ক্জোল, কর্প ধাৰত এবং অমন: ফলের সহিত অধ্যা ক্যার কটু এবং ডিক্ত মুখ-সংশোধনকর রদের সহিত অংগন্ধ তাব্লপাত সেবনের ছারা ছুখ সংখোধন क्रशं विद्वित्र।

ত সুল গুণা '

यूष(भावनांभक ववः श्रुकीर्वकत्रः

खनाक खन। ्

एक छराक, - जिस्किन। कराम, मधूद व्यवः मान्नक। की हा छराक, कक, अकीर्नकतः अधिनाभक अवर मामक।

ভাস্ক উষ্ণ, কটু, কল এবং বাজনাশক, পিছকর, প্রায়িদীশক এবং কে। ইব *** 4 1**

क्रुपंत्र खन।

কক, বায়ু এবং মেধনাশক। শশ্বচুৰ, কটু, শার, উষ্ণ এবং কৃষি-নাশক।

খদির গুণ।

कुर्छ, 'विमर्गद्रा'रा, त्यह এবং क्कि शिख्य।

মোটা এলাইচ গুণ।

भून, क्लार्छन्छ, इ कि अन् कक्तायुना नक।

नरम खन ।

खेमत्रकच्छा, आमिट्रांश এवर शूनश्च : शाहक ७ नयुशाक।

জয়িত্রী গুল।

শমু, তৃষ্ণা, প্লানি এবং ছগদ্ধনাশক। কপুরি গুণ।

সারর, শীঙ্ল, চক্ষের হিডকারী এবং কফনাশক। নসলাদিয়ুক্ত তায়ুল ওণ।

करूं, जिल्हा, छेन्न, मधूत, द्वांवत, कातः कवान, वाज्य, कृतिनाभक, कम्मर्भ इक्तिकत, खोनस्थायत्मत पृष्य, द्रांष्ठकत এवः इत्थं वि. क्ष्मक। जायूनित এই खर्त्वामम धन मार्टि।

আহারায়ে কর্ত্ব্য কর্ম।

আছার করিয়া ভোজনের প্রদকাল অংশি রাজবং অর্থং অচ্ছন্দে বুসিয়া থাকিবে। তংশর শতপদ গ্রমন করিয়া বাদপাথে শারন করিবে।

শারীরক নিয়গ।

ভূক্ত-ব্যক্তি, ইছামত শব্দ পার্ম, রূপ, রস এবং গন্ধ সেবন করিবেনা। অপ্রিয়জনক শব্দ, স্পার্ম রুস, এবং গার্ম সেবন করিলে অর্থবা ক্ষাচ আন ভে'জত করিলে, কিন্তা, অতিশব্ধ হাস্য করিলে বদন হয়।

া ন্ত্ৰ-প্রাধান এর (অর্থাৎ ন্ত্রন্ত্রের) হইতে আনের পাক শ্রীধিক জ্পা)
আহার করিয়া শহন কিন্তা উপবেশন করা বিধের নহে।

আহার করিয়া তৎপরেই অগ্নি অথবা আতপ সেবন কিমা স্তরণ কি বানবাহনের দারা গমন করিবেনা।

শাক, নিক্ট কর এবং অলংস ডোজন করা বিধি নছে।

ু একবারে কেবল একটা রুস কিমা একতে সমুদার রুস সেবন করা বর্ত্তবঃ নছে।

একবারে আছার করিয়া অগ্নির দীপ্তি না হইলে পুনক্ষার জনগ্রহণ করিবেনা।

ভূক্তার বিদ্ধা ছইলে (অর্থাৎ অসরস হইয়া গলা জলিয়া) অগ্রি-নাশহয়।

কঠিন দ্রব্য অধিক পরিমানে আহার করা কর্ত্তব্য নহে।

গৈঠাম ভোজন করিবে না অথবা অপ পরিমানে আছার করিয়া দিওণ অলপান করিবে তাহা হইলে সহজেই পরিপাক হইবে)

ে পেয় লেছ্য চুষা, এবং চর্ম্ম; এই চারিপ্রকার আছার উত্তরে। শুক্তর।

গুক্পাক দ্রব্য অর্থ্ধ পরিমানে এবং লঘু দ্রব্য সম্পূর্ণ পরিমানে ভে:জন করা বিধেয়।

আঁতান্ত ভর্ল জেঁব-জবে।ই কোন পরিমাণই ক্রফগাক হর না। জবপ্রধান শুক্র হইলে সমাক রূপ আহার করিলে বিকল হয় না।

অত্যন্ত শুক্ষ আর আহ্যন্ত হইনেগও উত্তম পরিপাক হয় না।

পিশুক্ত অথবা অসমাক রূপে রিম হইলে জর বিদ্যু ছইয়া খাকে। কিছা পরিপাক সময়ে জনবাছীপথে (জর্থাছ) যে পথের ছারা জঠর মধ্যে জন প্রবিফ হয়) পিত থাকিলে, কিছা জ্পার কোন প্রকার বিদাহি জন আছার করিলে জন বিদ্যাহয়।

শুক্ষ, বিদ্যা এবং বিউট্টী, (অর্থাৎ ইফ্পাক) অন্নের বারা করি নাশ হয়। অপ্ক বিদ্যা এবং বিউদ্ধ অন, – বাত, পিত এবং ক্লেমা সংযোগে জ্ঞান বেগ্লি উৎপ্রিন ক্রিয়া থাকে। খ্যিক জলপান করিলে, অকালে আহার করিলে, মল মুতের বেগা গারণ করিলে, খুথবা সময়ে নিজা না হইলে, লঘু এবং আভাবিক ভক্ষা জয় থোকালে আহার করিলেও পরিপাক হয় না।

ন্ধা, আছল, কথবা ক্রোধ উৎপন্ন ছইলে; লোভ, রোগ কিন্তা দ্বিন্য হার দারা প্রীভিত্ত থাকিলে, তান , বিদেষ জালিলে, তাল সম্যক রূপে পরি-থাক হলনা।

ভূক্ত- জন মাধ্যা ভাবাপার হইলে আম, এবং জন ভাবাপার ছইলে বিদয় বলা যায়।

ভূক্ত-অন্ন কিঞ্চিৎ পাক হইরা যদি অতান্ত তোদ এবং শুল সহকারে বিফলৈ হয়, তাহা বন্ধ এবং কুপিত বায়ুর কার্যা। তংকালে উদ্ধার শুলি হই-লেও (অর্থাৎ উদ্ধারে কোনরূপ গল কিছা রস না থাকিলেও) যাবং হাদর দেশের,ভার থাকে, তাবং আহারে কচি জ্বসান না।

পাকতলীর অবশিক্ট রস কর্তৃক নাসিকা দারা ক্ষত্রাব সহকারে যে অজনে দােষ উৎপন্ন হয়, তাহাকে চতুর্থ প্রকার জ্ঞানি বলে। অর্থাৎ কোনাণে পরিপাকের বিলঘ ব্যাঘাত ঘটিয়া বায়ুব কুপিত হইলে, যাবৎ জ্ঞানের দারা পাক্ছনী ভার থাকে, তাবং সেই কুপিত বায়ু পাক্ছনীতে কি ভীবে ছিতি করে। পাক্ছনীর প্রায় সমুদায় রস শরারে সঞ্চালিত হইনার পর, সেই কুপিতবায়ু অবশিক্ষ রস গ্রহণ করিয়া উর্থামী হইয়া মুখ এবং নাসিক। হইতে আ্লোব জ্মায়। ইহাকে সাধারণে পেটয়ুরম, বলে। ফুর্লা, প্রলাপ, বম্বেছা, প্রেসেক, মুবং শরীরের অবসম্ভা, জ্ঞানির দারা এই সমন্ত উপজ্বে এবং মৃত্তু ও উপজ্বিত হয়।

আম,— সজীব হইলে শুজ্বন, এবং বিদক্ষ হইলে বসন এবং বিষ্টব্ধ হইয়া গাৰিকুলে স্থেদ করান বিধেয়।

পুনের ক্ত অবশিষ্ট রসধার। অজীন উৎপার হইলে শায়ন করিয়া থাকিবে, এবং শ্বণাক্ত উষ্ণ জ্বল সেবন করিছু ব্যান কুরা বিধেয় এবং যাবং স্বাস্থ্যালাওত মাহইবে তাবং অনশন থাকাই কর্ত্তবা।

যে পর্যান্ত পরীর শন্ত এবং প্রকৃতিছ না হইবে ভাবৎ আহার করিবে না। হিভাহিত বিবেচনা পূর্মক আহার করিলে ''সমশন, কছে আধিক হইক দ্বিবা শুপু হউকু অকালে আহার করিলে ''বিষ্মাপন, কুছে এবং তুঁক ত্রব্য পরিপাক না ছইতে আছার করিলে "অধ্যাশন, কছে। এই জিবিশ্ব অহিতাচারের ছারাই জীবন মফ এবং বিবিধ রোগ উৎপর হৈছ।

আর বিদ্য হই ল, — শীতণ সলীল দেবন করিলে পরিপাক হইয়া থাকে।
শীতপতারদ্বারা পিত বন্ট হর এবং জন ঈবৎ ক্লিন হইয়া অংধাদিকে
গামন করে।

আহার করিব। মাত্রে হৃদয় কণ্ঠ এবং গ্লদেশ জালিলে,—আক্ষা এবং ছবিত্তকী কিন্তা মধু এবং ছবিত্তকী লেহন করা বিধের।

শ্বিষ বলিষ্ঠ ব্যক্তির অজীন ছইবার আদক্ষা জিমিলো,—প্রতিঃকানে অধবা আহারত্তে, শুঠী এবং অভয়া ছরিত্বী জক্ষণ করা বিধেয়।

শৃপা বিবিদ্ধিত অপ্তর্ম দোষ লীন হইরা থাকে, তাহাতে অগ্নির পা শারত হর নাঃ তৎকালে অজীনে ফুখাও জামে; সেই ফুগা শৃপার্ণি ব্যাকে বুঝাত না পারিলে তাহার পক্ষে বিষ্ঠিম হইয়াথাকে।

मनविध प्तवाखरभत किया।

- ১ শৈক্সগুল দ্বারা, জ্বাদন, অস্তন, এবং মুক্ত্রি, ভূফা, ও দাছের উপিছ
- ২ উক্ষঞ্পৰার।, এই সমূহের বিপরীত ক্রিয়া উৎপন্ন হয়। অখি। ইহা পাচন।
 - ৩ স্লিগ্ধ গুণ, স্লেহ, এবং মাদ থকর, বলকর ও বর্ণকর।
 - ৪ ফক গুন, ইহার বিপরীত বিশেষত হস্তন এবং ধর।
 - পিচ্ছিল গুণ, জীবনীয়, বলকর, সন্ধানকর শ্লেমাল এবং ওক।
 - ७ विभव्द छन, हेश्र विश्री ७ वदः क्रिप्रभाषक ७ द्रार्शन कत्र।
 - · ৭ তীক্ষণ, দাহ, পাক, এবং, আজাবকুর'।
 - ৮ মৃত্তুণ, ইহার বিশরীত।
- ⇒ গুৰুত্ব গুনের ছারা, আ সরতা, উপলেপ, বল, ভৃণ্ডি এবং উহপ্রহ্মঃ
 - ং লঘ্রণ, ইহার বিপরীত, এবং লেখনকুর ও রোপ্নকর।

দশবিধ দ্রবদ্বেরর ক্রিরা।

- 3 । जर, (लपक्त ।
- ६। मां सा, कुन, এरः रक्षनकत्र।
- ্। শ্লু, লিছিলের সম গুণকি শিষ্ঠ।
- ৪। কর্মশ, পুর্বোক্ত ভিশদের স্থ গুণ বিশিষ্ঠ, খুথা হ্রকী এবং কু।
 - ৫। অ্পস্ক, ক্রিকর এবং মূহ।
- ৬। হর্গস্কান ইংগর বিপরীত এবং হুলাস, অফ্টিকর, সার্ক, অফুলোম ারক, মদকর, এবং মাত্রার পাক্ষে মজলকর।
 - ৭। বাবলী, –সমূদায় দেহ বাপ্ত চইলা পাক করে।
- ৮। প্রিকাসী, প্রফুলভা সম্পাদনপূর্বক ধাহুর বন্ধন সমুদায় শিধিল চরে।
- ৯। আশুকারী, ফ্রান্থী জন্য জলম্ব হৈল সম দেহে সত্তরেই ব্যাপ্ত লে।
 - ্২০। স্থা ওণ, স্ফাতা জনা স্থাপির হতে গমন করে।

সাহারের গতি নিশ্চর।

পঞ্চতুত্মাক দেছে পাত ভেতিক আহার পঞ্চতপে পরিপাক হইর।
বর্গাৎ বায়ু পিত, কফ, মল এবং মূত্র; এই পঞ্চপ্রকারে পরিনত হইরা) প্রীরম্ব স্থীয় স্থীয় গুন বরিয়া থাকে।

ক্ষ এবং পিও অবিদ্ধা এবং বায়ু বিদ্ধা; আহার সমাক্ষণে পরিপাক না নিঃস'র ১ইলে (অর্থাৎ ভূক্ত দ্রব্য হইতে সমুদ্ধা সারাংশ নিস্ত ইলেণ) শরীর পুঠি হয় া

জাহারের মদ ভাগ, – বিষ্ঠা এবং মুত্ত, এবং দার ভাগ পুর্কে বৃলা,
নাছে।

েন্ট সারাংশ ব্যান বায়ু ছারা বিক্লিও ইইরা সমুদার ধাতু পোৰন করিয়া। কে।

ক্ষুফ, পিন্ত, খল,, স্বেদ, নথ, রোম, এবং নেত্রগল, এবং ছকন্থ স্বেছ, এই মুণ্য গুলী ক্ষমান্ত্রে সকল্যের মূলকানিবে।

আকারাদি ভেদে দ্রব্তেণ।

चनसमूत । शांद्रक, द्रक्त शिव्या, धारः भी उत्।

व्यवसां छ । विषयां भवर क्षेमा नक।

আত্র কি। পাকে কটু, মধুর রস বিশিষ্টা, কক-ব গ্লুব শান্তিকর, পাচক এবং কণ্ঠশোধন কর।

पद्धि नकार्छ। क्याद्रार्ट्साः उद्याद्धाः ३ उट्डाः अ२९ मृष्ट्यः द्रार्ट्साः (१)

আহিবর্গ। বায়ুন'শকর বলেব হিতক'রী ধ'তু পুঞ্জির ।

আৰ্নদ ক'চ।। ক্ৰমি, অৰ্শ এবং ৰক্ষ ও ভীক্ষু।

ष्पा डहें । श हक डिंड, श्रांतक এवः (म दश्र)

আদা। কফ এবং বায়ুনালক।

बालाः। अधि मम डै कु, निष्ठाकारक এবং बल्लमाद्रक ।

कामना थाइ शृशिकतः भी वर्गोर्थाः कामनाव्यः, यसन तम कर्यः एक अस्मत कामिष्ठः, भाषा এবং कारण भारत कति समाना । भाषा सक्षे ६ स । छेवात वीकाममाः – मस्वाकासक अवश् कामनात पूष्टा – १६१ विभिन्ने।

বাসন। কফ পিড়া।

ইন্দ্ৰব। ছব, এবং রক্তপিত নাশক।

केरलाजना। कुछ धर खनामि नाजन।

উयक्तात्र। উष्कः, अवः वाज्यः । अङ्क्री अवः वनमानकः।

এর ওমুল। শূণয়, ধাতৃপুটিকর এবং ঘলনাশক।

এশাইচ। (মোটা এলাইচ) খুন নদকোষ্ঠ, ভৃষণ, ছ রি এবং কর্ফ ব নাশ্র। (ছেটএল,ইচ) ভীক্ষা, উষণ, কটুপার, কচিকর কিন্তু এব শ্রির বর্ষনকর।

উন্তিদ লবণ লঘু, তীক্ষু উফা, উংলেদী, স্ক্ষা, বায়ুব স্মালাম কর তিং ক্টু এবং সক্ষার।

় কটকী। সারক, কক, ৰফ ও পিতছ। (শ্নোগ্রুট) ডিগু, বটু, ল এব তৃষ্ণানাশক।

कृष्ठेशती । हक, राष्ट्र, वदर थान कामन।

कनका क्षेक्य, श्लानिकत्र, छे कु, छेखः अवर मारक।

करेखा कृषि, कुष्ठे धरा श्वास नीमक।

কবজফুল। কুঠ, গুলা উদৰী, এবং আর্শবোগণ; গরিপাকে কটু এবং ক্রি ও প্রাধ্যের গোন্তিকর।

करती। कुर्छ अवर खनाः मि न'माक।

কপুরি। ভিত্ত বস বিশিষ্ট, প্রেছি, শীঙ্গ, লয়ুপ্কি: পিলোসা স্প্রিশেষ এক মুখের বিরুস্ভা জামিলো বিশেষ ভিত্তক্র।

কাংসা। শিলুবদ বিশিই।

ন কলে ৭) - রজ্জনিজ্জন, হাল্য, লঘু এব তুন্তী, মেল, ছেও স্থাসন কাস্য এবং অক্তিৰ শান্তিকর।

काक ए मामी। करा, वरहू, धाम, काम, खूद धर दि । भागती

ক্ষেম্ছি। ঈশ্দ হিচ্চ, বটু, নিচোৱন জ্পিক উদ্ভৱ জ্জিক শীংক নিকে এবং কুঠনশিক

ক্ষাশকাস্থ দল ত্রাস্থ নশ এনকর। তারস দেশ হাধ্যক গতিও এবং পিতায়

The set of the second of the second control

ভূদ। কল, বাঙ, ধাস এব সু ১

ক্রনশংলী বিবরোগ এবং শোগ নাং বিজ্ঞা **ক্রডার** এ**রোর্**। জুল্য ভ্রম্মর ।

কুড্চিঃ এত্য কাস এবং বিষয়ে।গাদি নাশ্ত ক্ষ্য কল্পিও, ছুক্ত দেৰ অৰ্থা এবং অভিসাৱ নাশক।

কুলেখাড়া। আমবাত, এবং বায়ু-রক্তদোধ্র।

कू लाइत । किएस, अत[्] भन्मृ(खात् राक्षस्कर ।

रक्**छत्र।** छक्ल क, विकेखि, এवः मौडल।

क्लिश्रहा। ज्लतारअत मर्ग छन्ने य अत्र विश्व त्रिकतः।

धनीत्र। कुर्फ, विज्ञालात्माला, त्यहा व्यव कक लिखहा

शक्रिश्लिनो । शिष्ट्रश्रीयून मम ७५कंद्र अवः यादक।

गज़गरज़। यसुर, जिला।

, গনিয়ারি। শো্যন্ন, বায়ুবিকারে হিভকারী।

গালারিক্র। ধারক, নুষুরা, ভিক্তবস, ওক্পাক, কেশের ছিডকারী, । সক্রম প্রিক্ত, দাভিদ এবং দাহ এবং ব্যেনাশক। गाखदिम्न। केला।

अन्छन। अभित्रक्तरा

ख्छा। कुछ छ उनमा भका।

গুটিকালব।। কফ, বাষু এবং ক্রমির শান্তিকর লেখন কর পিত প্রকোপুণ কর, অগ্নিকব, পাচক, এবং ভেদক।

গুড়ক মাই। (কাকমাজি দেখ)

গুড়জুক। কফ বায়ুনাশক, শুক্ত এবং আঘবাতছ, এবং কটু।

গুলক। ধাবক, বলেব হিতকারী এবং তিদোষয়।

গোৰক্চাতুলে। (বাড়েলা দেশ মূনক জ ু এবং ক্টান্বোগো-বিশেষ চিতকৰ গোক্ষ্মী। মূত্ৰ জ্বাধ বাষুনাশক, বান্ত হিছকামী এবং ধাতু পুনী কর। কোড়ো নিম: ধাৰ্ম, ক্যান্ত লেভ এবং দীড়ল।

ধোশাক্ষ। অগনাশক (প্রুইন্স) প্রিক্ত এক ভীক্ষ্ণ ভ ব্রণ-বিজ্যোট-কাদি নাশক।

স্তকুমারি। কলাম কিজি শংখাজ আজি, সভালীতিম, ককনাশাক, কায়ু কর্ম করে, সংআহী, কক লবু।

इहे। (शिक्शानो (मर्थ) अवर धोन्नक।

চাকুন্দা। সোমরাজ দেখ) এবং গুলা, স্থা ও উদর্বোগনাশক, এবং পোকে কটু । 🐷

্টিচাচ্ছেবি। এছনী ও অন্তরাগের শান্তিশ্র, উক্ত, ক্রার, মধুর, অগ্নিবস ; এবং অলর্ম হইলে বাভগোঁয়ার শান্তিকর।

চিন্তামূল। পাকে অগ্নিতুলত শোখ, ক্লমি কুষ্ঠ এবং অর্শনাশক।

চিরাতা। বায়ু রুজিকর, ৰুক্ষ এব[°] কফ, পিত ও জুব নাশক।

চুম। কফ, বায়ু এবং মেদনাশক। শ্রাচুর্- কুর্ছ, বিস্পরিরাগ, মেহ, এবং কফ পিতায়:

চোরপাশিতা। কফ, বায়ু শোধ, মেহ, ক্মিনাশক।

চ্ছগলান্ত্রী। ক্ষায়, তিক্ত অর্থচ স্থান্ন। রক্ত-পিতার ক্ষয়, বায়ুবর্ধন্ন কর. ফংগ্রাহী এবং নয়।

•জারভী। নল-মূত্র জ্বক, সক্ষার, মধুর, অংশ বাতভো্লার প্রেকোগকর, এবং রক্তাভিয়ে।

ি জারিতী,। ্রভিজ, কটু, কফর, লয়্- ভৃষ্ণ(নাশক, এবং সুথের রেদ এওওঁ জর্মান মা ल्कात्रका विज्ञातिको सम छन्तिनिहै।

'জিরা। স্থাক, কচিকর, কদ এবং বায়ুনাশক, পাকে কটু, তীকু বিচু লবু এবং পিতালি র্দ্ধিকর। ক্ক'জেরা, কটু, তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, জামন্ন বিং চোনাশক,

भूविको याम कामरतारध्य, ७ विवृक्त क,तक।

জৈ।ঠমপু। স্বারের নিরুভেনর, এবং রক্তপিত ও এনন।শহ।

উপনক্ষরে। কক্ষা, পারুমজনদর, জেঝানাশকা, গ্রেজ এবং শ্বরিকর ও তীক্ষা। তার্গন কেনো। কাসা, শ্বাসা রোগে হিতকর, শ্বানির, ধারুপ্রিধর, ইন্তান প্রজারন লায়ক।

¹⁵ दा। दर,बद्रमाच, सक्ति, भारत, लिश्मनकत, भौडल धरः माद्रक।

ट लचलो । याह्य ,5 । एवं अपन् धारमीटहा एस है विकासी, अव हम विणिक।

ंश्रादान । यो श्राध्यत्यक ।

एंटमो। भिष्यात वे किया वदेश इहिस्सानक।

८७ज्ञालाख । -- ब्योदास अपर ५ सम्बोहर १२ पुना **छन विनि**ष्ठे ।

र्वाच वारा जिला केन अन्य बन जिल्लाहरी।

भवकता । २८५ अन्। क्राम यह भी,६६।

भग्ना अर्तन्याः अत्र ६ इ.स.च. मादक प्रवेश श्रीशाः (प्रष्ट क नुक्रे

দাক্ষণিলা। ছিলিবার পুরণ ভাগ বি শাই।

স্বাস্থান সাবিদ, মুভিহ্দ। সোমা, এক বিন্ধু রোলান

इसा। इक राज, क्ला मार दर द्वारा ।

্রাক্ষা। নপ্র - বং অবং , গড়গতিকর, ক বুদ্ধিরকারী, বলের ছিজকারী। ক্ষারেয়ে, ড্যা, ৬ডাবিড এবং কাবুন শক।

ধনিনা। (কঁটোপনে) মুগ্ৰ, স্থালি, এবং ক্চিকর। (এই ধনে) ক্কব্তেগ্ৰহ, তৃষ্ণা এবং ত্ জনুশন।

ধাইকল। শাঙ্গ, ৭৭ রক্তাপতাভিসার নাশক।

ধুশুব। মত্তাদারক কফ্ম এবং অগ্নি পিতকর।

मागी,व मत्। तत्या, भिछ वयर भिषय।

। निष्य । होना, कुछ, अरुर । आ (मह मानक।

প্রাণাজ। আহ্, বৈক্তি, নশকর, ক্ষকর, ওক, পরিশানে মন্ত্র, বিশিত্য, রক্ত্রিক।

প্রগাছ।।

প্লা। নেত্রের হিতকর, শীতক, লেখনকর, এবং বিবয়া।

পাকিম কার। মূত্রবিভি শোধন কর এবং মেদ্র।

পাঠা। অভিসার এবং তিদোব নাশক।

পাৰিকল। গুৰুপাৰ, বিষ্টাম্ভ এবং শীতৰ।

পারশী। কফবোয়ু নাশক।

शास्ता। क्यार्याम क मान कान वानक अवर मध्य।

পিপ্পানী। মধ্র, ধাতুপুঞ্চিকর, কটু, আগ্লিকর, সারক, স্লিগ্ধ উষ্ণ এবং ৰায়ু, কক, স্থাস, কাসম। (কাঁচাহইলে) স্বাহ্ন, শীতল, ওক, স্লিগ্ধ অধ্য কক্ষ।

পিংপ্পনী মূল। – ভেদক, আগ্র ব্রন্ধিকর, এবং কফয়!

পিরাজ। মধ্ব, ধাতুপুটিকর, কটু অথচ স্নিম্ন এবং বায়ু নাশক, বলের হিতকারী, পিত্তম, কফকারক, ভৃতিজ্ঞনক এবং গুরুপাক।

পিরলেকল। মধুব, স্মিন্ধ, শুক্রেদ্ধিকর, এবং ব্যু পিত্য।

পুন্রবা। ককবাভয়, শোক, উদর এবং জর্শ রোগের শান্তিকর, কটু;
এবং তিক্তর্ম, হৃদা কাচকর এবং আমিকর।

পুতারক কার্ছ। চক্ষের হিতকারী, শীতল, ঘালের নিবারক।

ফঞ্জী। জক্ষাবলকর।

युक्त। अध्र, शातक, प्रच रिष्धाकत, पर पृष्काती।

বচ। কুল, এবং ব য়ু নাশক, আয়ুব হিতকারী এবং আ তি রভিকর।

বক্ৰবৃক্ষ। ব্যুজনা শুন নাশক ভেদী অথচ উষ্ণ এবং শশ্পী রোগছ।

বংশকরীর। গুৰুপাক, কফ এবং ৰায়ুব প্রেকোপধর।

बर्भारम्हिन । कसाम्र मध्द्र, कक अवः र यू नामक।

বছেড়। তেদী, তীক্ষ্, উঞ্চ, বিরস, কুমনাশক, চফুর হিতকারী, পাকে আহ্, ক্রবায়রস, কফ-পিত্র। (উহার বীজ্ঞশিস্য) শিপাসা, ছর্দ্দি, কফ, প্রবং বায়ুনাশক ও শহুপাক।

বাকস। কাস, মুখের বৈরস্য, ইক্তপিত এবং কফল।

বামনহাটী। খাস-কাসয়।

ক্রানা। ছার্ক, হলাস্, অভিসার ও তৃষ্ণানাশক। কক, উষ্ণ, পরিপাকে। স্মুত্রং বীষ্ট্রক্ষন।

বাসক, হিন্তু এবং পিত শ্লেম্বার শান্তিকর।

বিছাতি বিষয়েগা, কাসরোগা কক ও নাশক।

'বিট্লবল। জুর্মন্ত্র, আন্নি এবং বল ব্রন্ধিকর। বাত, আম, ও অজীর্জন্য প্রেটের বেদন। ও শব্দ নাশক।

বিড়ন্ধ। কক, উষ্ণ, পরিপাকে কটু, স্মু, এবং বায়ু ও কফ্ম। ডিক্ত, ্ ু বিষকোগ ও ক্নিনাশক।

বিদাবিকন্দ। মধূব, রংহণ র্ষা, শীতল আরের হিতকর, জভাত সূত্র-র্থজিকর বলকর এবং ব য়ুপিডয়।

বলুমূল। ৰায়ু, কফ, ছার্দ্দ এবং পিওয়।

বিষত ড়ক।। শোধ এবং আমবাতনাশক।

বিস। (প্রমাদির মূণাল) অবিদাহা, রক্তাপ্তের শান্তিকর, বিষ্ট্রী হুর্জার কক্ষ্য বিরুষ, এবং বায়ুর জেকর।

বেড়েলা। স্থিত্ধ, ধা তুপুষ্ঠিকর, এবং বায়ুলি,ভন্ন।

বেল। (কচিবেল) ক্যায়, পাকে উষ্ণ, আগ্লাকর, ধারক, ভিক্তা, কটু স্মিন্ধ, বায়ু এবং ক্ষম। (প্রুবেল) স্থায়িত্ত, মগুর, গুরুপ্তি, আমন্সিক (শুক্তবেল) ধারক, ক্ফ, বাত এবং আম্পুল নাশক।

ব্রহতি। ধারক, পাকে উতা, এবং বাভয়।

বিশা। বরস্থাপনকারী, এবং দেধা, শাতি ও অ'য়ুর্দ্ধিকর।

ভাহ্লমা। কফ ও পিতম।

ভূষাপত। বশ কফ এবং রক্তম।

ভূম্প। পাকে কটু মধুর রসবিশিষ্ট, কফ বায়ুর শাক্তিক, স্পাচক এবং কণ্ঠগোধন কর।

ভেলা। স্নিড, ক্নি এবং অর্শনালক অভির ছৈর্য্যকারক; ক্লায় এবং মধূর
• ভেলার ভাটি। মধুব, ক্যায় এবং বায়ুবকোগকারক।

তৃদর্শে। চক্ষু এবং কেশের হিভকারী পাতুরোগ এবং ক্ষয়। মন্ত্রিষ্ঠা। কুন্তু এবং বিষয় গা ক্রশেখন শেক লাবনাকর।

মধূশিও । সারক্তিক্ত, শোধনাশক, অমিকর কট্, বিদাহী, মলমূত্র রোধক, কক্ষ, এবং তাক্ষে:ফ ও বীৰ্য্যালী।

মর্ক পূজা। পুর্তিকর, মুখের আপ্রায়, এবং শুকা। ইছার ফল, নশ্যু এবং শিত্য।

নরিট। (কাচামরিচ) থাকে আছে গুৰু, এবং শ্লেমানাশক। শুক্তন। মরিচ) ক্চিকর, শ্লিকর, কৃক্, উষ্ণ প্রয়ু, এবং শুক্তীয়। "(মেড্) মরিছ) , অধিক উফবীর্যা, সর্বপ্রকার মরিছাপেকা গুণকারী, শ এবং নেজের ভিতকারী।

मिलिका। मालको शुष्टा मम छन विभिक्ते।।

মালতীপুষ্প। ভিক্তরন বিশিষ্ট, সংমার, পিত্য।

मुक्ता। निरंबत-शिक्तत, मौक्तां, मिषनकत्र, এवर वियद्ग -

मुशा जिल, कर्षे, वाज्य, এवः व्यक्षित्र क्षकत्र।

भोति। किनत्र, शाकुशूकिक्व, धवर मार ७ हक्ता।

যমানি। কুষ্ঠ, এবং শূলয়, প্রিয়, জ্ঞান, পিত্তকর, এবং বায়ু কফ, এবং ক্ষমিনশেক।

যবক্ষার। অগ্নিতুল্য, শুক্রা, শ্লেষা। দমনকারী অর্শা, প্রীহা এবং গুলুনাশক। রক্তচন্দন। কফ এবং শোগন্ন ও শঘু।

द्रक्टर७উড़ो। काञ्, कर्मा, जल्लारेडमक, कक्त, कृते, लारक डिडा अर ्रक्षा

রক্ষন,জনা। (মরু শিগু দেখ)

রশুন। কার মধ্র রস, কঠের হিতকারী ধাতু পুকিবে, ওফ জথত সারক ভগ্নযোড়া দারক, বংগর হিতকারী রক্তশিও হা ফকর, এং বাজন বেদনাদিনাশক।

द्वार। करे, क्रमिय, नवन तमविभिन्ने, बदेर दाश्चकता।

'রাস্মা। শেথি এবং আমবাত নাশক।

কপ্য। অন্তর্মবিশিক, সার্বে, শাত্রী, তৈলাত, এবং ব বুনির্বা।

(त्रमूक। करे क्षावर वाश्चवानामा, शिखकंत्र धनर लपुशाक।

রোমক লবন। ত কু, অভাত উষ্ণ আ সংমান বিহান কর। পাকে বট্টু বাতম্ লঘ্, বিষ্যালি, স্থান, মলভেদক এবং মূত্রকর।

রোহিত রক্ষুণ। প্রাংগ, ওলা এবং উদ্গীবোগ্য।

লতাক্সুরা। কপুরের ভুল্য ও। বিশিক্ত, প্রক্রণ এবং বাস্তর পোধ্যকর 🛭

णारा। **७ श**रताग, जुकलायः এवः वीषमणना भक ७ वनकत्।

लाध्। ककाश्व वयर (भाषश्र व मादक।

প্রেছি। বায়ুবন্ধন, শীক্তন, এবং ড্ঞান পিত ও ক্ষয়।

गंडमूली - बाबु, लिख, स्मर अवर इक्करागक व गाउक।

'শালপাণী। কদের ধারক এবং কফরোগ্যা।

শিশু । केहे, गुकाब्र, मध्त, ७७, वर शिखकत।

े मृत्रीका। तिस्दर्शनः विमर्शद्वानः सम्मृत् खुकदन्य এবং শোথয়।

শুভ৺পর। জুব. স্লেখা, এবং পিতর; এবং অগ্নিব্লিকব।

सक्र उडेणी। वल उडेणीव चारशका किकिए चेला छन विभिन्छ।

ভারতী। কলাও বালুনাশক অলুপার্ক, অল্লিকর, পাকে মধুব, ধাতু পুঞ্জির,

· श्रित्र, प्रेफ्न, कर्रू এव॰ कैंहिकत !

खन्क। रेत्रि, मार, बामसून उक्ष छ एक्तिमांक।

শ্বামানতা। পিতৃ, ত্রা ছ দি এবং জবল্প।

মচল লগন। ক'ছিকৰ, উন্ধৰ শৈষ্ট্ৰ, ক্টুপাক, গুল্, শূল ও কোঠ বছকর, কিঞ্ছি পিজকৰ এবং লা।

মলিবার ল। তীক্ষ; কটু এবং বাজ্বর্যান্ড e উদর বেদনা নাশক।

ফিত্ৰে আগ্ৰা। সভাদোগিয়ুকু, আহিব জুলা দঙ্মৰ ব।

নিজি। তীক্ষা উঞ্চ মততাকারক, কুঠুনাশক, বল, মেধা এবং আহ্নিকর এবং ভোষাবংশক।

जीलक। कठे कृषिष्ठ, मननवम निर्मित धनर (लभवकत्।

জুবর্। আজে আদা, রংলপ, রাচালণ, তিদেশি প্রতিব।প্কর **শীতল, নেতের** ভিত্তস্ত্রণ বিষয়।

स्त्राण । स्टर्मव सम ७५ विभिन्ने, व्यभिक्त विषय ।

জুবম। কক, ব'য়ু, খাসে, কান এবং ভুগন্ধি **নাশক, পিছকের এবং** পাধাশ্যিম।

সৈত্রব-লবন। বদামে ধাতুপুঞ্জির, চক্লের হিতকারী, পাচক, অগ্নিকারক বিজ্ঞা, কচিবর, মর্বার্ম এবং শ্রহণাক।

त्मामानी। खुन, क्रट्यांतः न'बु अवर छेम'न्डीमि त्त्रांभन्न अवर मीठन।

সোদালী কল। মধুব, ধাতুপ্ धैकत, সারক এবং বাছপিতায়।

সোধা। ধাবক এবং অগ্নিকর।

লোগর'জ। বাত, ৰুফ, কুনি, কুষ্ঠ এবং ত্রুকদোষ নাশক।

সোহ গা। কফ্মু, ভীক্ষু, উঞ্চ, পাল্লকর, অর্ণাদিধাতু পোষক এবং পি ্র রিন্ধিকর।

रिगोहका मतन। . शिहिलाटक नम्, जिक्करीया, शिनाम, कर्षे, छन्तः भूगे व दिवेक्

বৌনীর। কফ এবং বায়ুর হিতকর।

সজিক কাব। শেষিত্রা, এবং বাডপ্রেমার দমনকর, মর্শ, প্লীহা বিবং গুলাবোগায়।

স্বরপত্ত। ভীকু, উঠ, পবিত্ত এবং ক্রমিও বিষরোগয়। ছবিন্তা। কফ, পিজ, কণ্ড, এবং তক দোহয়।

इतीकको। ইহা সাত **প্র**কার। জীদন্তী,—ক্ষেহপার্ন। রোহিনী-ক্ষররোগে

विख्या, - (नशद्म। शूड्मा, - विद्याहद्म। अपूडा - (नख्दत्राद्धाः अख्या, - गक्षाद्या। किनका, - मकम द्राद्धाः वावद्यत्वः। इत्राडकी नवत् मध्युक वायूनानक। अध्य मध्याद्धाः शिख्यः। शुर्धी मध्दाद्धाः करुष्य ववद्धः मध्याद्धाः विद्याद्धः विद्यादः विद्

ছরীতকী বীজ শসা। চক্ষুর হিতকারী এবং বাত পিদন্ত।
হাড়ভালা। অন্তিভগ্নের ও বলের হিতকর ও বায়ু নাশক।
হিং। ভীক্ষু, কটুরস, শূলন্ন, বর্দ্ধ এবং অন্তীর্ণনাশক, লঘু, উষ্ণ, পাচক, ক্মিন্ধ;
নিধিক এবং কক বাতম।

ক্তক্রা। কক্ষু।

ক্ষাক। কৃষিকর, পরিপাকে স্বাহ্ন পিচ্ছিল বিস্যাদি, বায়ু র্ছিকর। এবং শুভান্ত পিউ-শ্লেমাকর নহে।

ক্ষীরত্বক। শীঙল, সংআ'হী এবং হক্ত পিত রোগের হিডকর।
'কেংপাপড়া। পিছ, দাহ, স্থার ত্যা এবং কফ নাশক।

म्याखः।

ক্ৰিক্ভা হিৎপুর রোড এরল: বসাকের লেন ১৭ নং ভবনে
ে ুক্বিকা-রজ্বরপুত্র জীক্রিরচাদ দাস ধারা মুক্তির।